॥ ॐ नमः ॥

॥ अथ श्री देववंदनमाला प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीनयविमलजी कृत ॥

॥ दीवालीना देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम स्थापना स्थापीयें, पछी ईरियावहि पडिक्कमी चैत्यवंदन करी नमुथ्थुणं कही अर्द्धो जयवीयराय कहीयें. पछी बीजुं चैत्यवंदन कही नमुथ्थुणं कहीयें. पछी अरिहंत चेईयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी एक थोय कही लोगस्स कहेवो. पछी एक नवकार कही बीजी थोय कहेवी. पछी पुख्खरवरदी कही एक नवकार कही त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी चोथी थोय कहेवी. एज रीते बीजो जोडो थोयोनो कहीने नमुथ्थुणं कहेवुं. पछी स्तवन कही अर्द्धो जयवीयराय कहेवो. पछी त्रीजुं चैत्यवंदन कही संपूर्ण जयवीयराय कहीये. ए रीते प्रथम जोडो कहेवो. तेमीज रीते बीजो जोडो पण कहेवो ॥ ईति विधिः ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ वीर जिनवर वीर जिनवर, चरम चौमास, नयरी अपापायें आवीया ॥ हस्तिपाल राजन सत्रायें, कार्तिक अमावास्या रयणियें ॥ मुहूर्त शेष निर्वाण ताहीं ॥ शोल पहोर देई देशना, पहोता मुक्ति मझार ॥ नित्य दीवाली नय कहे, मलिया नृपति अढार ॥ १ ॥ देव मलिया देव मलिया, करे उत्सव रंग, मेरईयां हाथे ग्रही ॥ द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रने ॥ गामगाम एह उत्सव प्रसिद्धो ॥ लखकोडी गुण फल करी, कल्याण करो एह ॥ कवि नयविमल कहे ईस्युं, धन धन दिहाडो तेह ॥ २ ॥ श्री सिद्धार्थ नृपकुल तिलो, त्रिशला जस मात ॥ हरिलंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ त्रीश वरस गृहवास छंडी, लीये संयम भार ॥ बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥ त्रीश वरस एम सवि मली ए, बहोत्तेर आयु प्रमाण ॥ दीवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुणखाण ॥३॥

॥ अथ थोयोनुं अष्टक ॥ तत्र प्रथम वीरस्तुति ॥

॥ मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे शोल पहोर

देशना पभणी ॥ नव मल्लि नव लच्छी नृपति सुणि, कहि शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥ १ ॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थीते ॥ छठे शिव पाम्या वीर वली, कात्ति वदी अमावास्या निरमली ॥ २ ॥ आगामि भावि भाव कह्या, दीवाली कल्पें जेह लह्या ॥ पुण्य पाप फल अज्झयणें कह्या, सवि तहत्ति करीने सद्दह्या ॥ ३ ॥ सवि देव मली उद्योत करे, परभातें गौतम ज्ञान वरें ॥ ज्ञानविमल सदगुण विस्तरे, जिन शासनमां जयकार करे ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम थुई जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय वीर स्तुति ॥

॥ जय जय भवि हितकर, वीर जिणेश्वर देव ॥ सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव ॥ करुणा रस कंदो, वंदो आणंद आणि ॥ त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणि ॥ १ ॥ जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे ॥ पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे ॥ ते चवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण ॥ सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण ॥२॥ जिहां पंच समिति युत,

पंच महाव्रत सार ॥ जेहमां परकाश्या, वलि पांचे व्यं॰ वहार ॥ परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञने पारंग ॥ एह पंच पदें लह्यो, आगम अर्थ उदार ॥ ३ ॥ मत्तंग सिद्धा इ, देवी जिनपद सेवी ॥ दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नीत मेवी ॥ शासन सुखदायी, आइ सुणो अर दास ॥ श्री ज्ञानविमल गुण, पूरो वंछित आस ॥ ४ ॥

इति द्वितीय थुइ जोमो ॥

॥ अथ महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥ श्री महावीर मनोहरु, प्रणमुं शिर नामी ॥ कंत जशोदा नारीनो, जिन शिवगति गामी ॥ १ ॥ भगिनी जास सुदंसणा, नंदिवर्द्धन भाइ ॥ हरि लंछन हेजा लुउ, सहुकोने सु खदायी ॥२॥ सिद्धार्थ भूपति तणो, सुत सुंदर सोहे ॥ नंदन त्रिशला देवीनो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ ३ ॥ एक शत दश अध्ययन जे, प्रभु आप प्रकाशे ॥ पुण्य पाप फल केरडां, सुणे भविक उल्लासें ॥ ४ ॥ उत्तराध्ययन छत्रीस जे, कहे अर्थ उदार ॥ शोल पहोर दीये देशना, करे भवि उपगार ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध मुहूर्तमां, पाछ-

सी जे रयणी ॥ योग निरोध करे तिहां, शिवनी निसरणी ॥ ६ ॥ उत्तराफाल्गुनी चंद्रमा, जोगें शुज आवे ॥ अजरामर पद पामीया, जय जयारव थावे ॥ ७ ॥ चोशठ सुरवर आवीया, जिन अंग पखाली ॥ कल्याणक विधि साचवी, प्रगटी दीवाली ॥ ८ ॥ लाख कोमी फल पामीयें, जिन ध्यानें रहीये ॥ धीरविमल कवि राजनो, ज्ञानविमल कहियें ॥ ए ॥

इति वीरजिन स्तवनं ॥ इति प्रथम जोडो ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रयं ॥

नमो गणधर नमो गणधर, लब्धि जंडार ॥ इंद्रजूति महिमा निलो, वरु वजीर महावीर केरो ॥ गौतम गोत्रें उपनो, गणि अग्यारमांहे वडेरो ॥ केवलज्ञान लह्युं जिणे, दीवाली परजात ॥ ज्ञानविमल कहे जेहनां, नाम थकी सुखशात ॥ १ ॥ इंद्रजूति पहिलो जाणुं, गौतम जस नाम ॥ गोबर गामें उपन्या, विद्याना धाम ॥ पंच सयां परिवारशुं, लेइ संयम जार ॥ वरस पचास गृहे वस्या, व्रतें वर्षज त्रीश ॥ बार वरस केवल वस्याए, बाणुं वरस सवि आय ॥ नय कहे गौतम ना-

मुथी, नित्य नित्य नवनिधि थाय ॥ २ ॥ जीवकेरो जीव केरो, अछे मनमांहिं ॥ संशय वेदपदें करी कही, अथ अन्निमान वास्यो ॥ श्रीमहावीर सेवा करी, ग्रही संयम आप तास्यो ॥ त्रिपदि पामी गुंथीया, पूरव चउद उदार ॥ नय कहे तेहना नामथी, होये जय जयकार ॥ ३ ॥

इति गौतम चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ अथ प्रथम थुइ जोडो ॥

॥ इंद्रभूति अनुपम गुण नस्या, जे गौतम गोत्रे अलंकस्या ॥ पंचशत छात्रशुं परिवस्या, वीर चरण लही नवजल तस्या ॥ १ ॥ चउ अठ दश दोय जिनने स्तवे, दक्षिण पश्चिम उत्तर पूरवे ॥ संनव आदि अष्टापद गिरियें वली, जे गौतम वंदे ललीलली ॥ २ ॥ त्रिपदि पामीने जेणे करी, द्वादशांगी सकल गुणें नरी ॥ दीये दीक्षा ते लहे केवलसिरि, ते गौतमने रहुं अनुसरी ॥ ॥ ३ ॥ जक्ष मातंगने सिद्धायिका, सूरि शासननी परनाविका ॥ श्री ज्ञानविमल दीपालिका, करो नित्य नित्य मंगल मालिका ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थुइ जोडो ॥

श्री श्रीइंद्रभूतिं गणवृद्धि भूतिं, श्रीवीरतीर्थाधिप मुख्यशिष्यम् ॥ सुवर्णकांतिं कृतकर्मशांतिं, नमाम्यहं गौतमगोत्ररत्नम ॥ १ ॥ तीर्थंकरा धर्मधरा धुरीणा, ये भूतभाविप्रतिवर्तमानाः ॥ सत्पंचकल्याणक वासरस्था, दिशंतु ते मंगलमालिकां च ॥ २ ॥ जिनेंद्रवाक्यं प्रथित प्रभावं, कर्माष्ट कानेक प्रभेदसिंहम् ॥ आराधितं शुद्ध मुनींद्र वर्गै, जगत्यमेयं जयतात् नीतांतम् ॥ ३ ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा भवंतु, मातंगयक्षा सुरनायकाश्च ॥ दीपालिका पर्वणि सुप्रसन्ना, श्री ज्ञानसूरि वरदायकाश्च ॥४॥

॥ अथ स्तवन ॥

तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ वीर मधुरी वाणी भाखे, जलधि जल गंभीर रे ॥ इंद्रभूति चित्त भ्रांति रज कण, हरण प्रवण समीर रे ॥ वीर० ॥ १ ॥ पंचभूत थकी जे प्रगटे, चेतन विज्ञान रे ॥ तेहमां लय लीन थाये, न परभव संज्ञान रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ वेदपदनो अर्थ एहवो, करे मिथ्या रूप रे ॥ विज्ञान धन पद वेदकेरां, तेहनुं एह स्वरूप रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥

चेतना विज्ञान घन ठे, ज्ञान दर्शन उपयोग रे ॥ पंचभूतिक ज्ञान मय ते, होय वस्तु संयोग रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ जिहां जेहवी वस्तु देखियें, होय तेहवुं ज्ञान रे ॥ पूरव ज्ञान विपर्ययथी, होय उत्तम ज्ञान रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ एह अर्थ समर्थ जाणी, म जणपद विपरीत रे ॥ इणि परें भ्रांति निराकरीने, थया शिष्य विनीत रे ॥ वीर० ॥ ॥ ६ ॥ दीपालिका प्रभात केवल, लह्युं ते गौतमस्वामि रे ॥ अनुक्रमें शिवसुख लह्यां तेहने, नय करे परिणाम रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनं ॥

॥ अलवेलानी देशी ॥ दुःखहरणी दीपालिका रे लाल, परव थयुं जगमांहि ॥ भवि प्राणी रे ॥ विर निर्वाणथी थापना रे लाल, आज लगें उछाहि ॥ भवि० ॥ ॥ १ ॥ समकितदृष्टि सांभलो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ स्याद्वाद घर धोलीयें रे लाल, दर्शननी करी शुद्धि ॥ ॥ भवि० ॥ चरित्र चंद्रोदय बांधियें रे लाल, टालो रज दुःकर्म बुद्धि ॥ भ० ॥ २ ॥ सम० ॥ सेवा करो जिनरायनी रे लाल, दिल दोठां मिठास ॥ भवि० ॥ विविध

पदारथ भावना रे लाल, ते पक्वान्ननी राशि॥ भवि० ॥ ॥ ३ ॥ समं० ॥ गुणिजन पदनी नामना रे लाल, तेहिज जुहार भट्टार ॥ भवि० ॥ विवेक रतन मेराईयां रे लाल, उचित ते दीप संभार ॥ भवि० ॥ ४ ॥ सम० ॥ सुमति सुविनता हेजशुं रे लाल, मन घरमां करो वास ॥ भवि० ॥ विरति साहेली साथशुं रे लाल, अविरति अलछी निकास ॥ भवि० ॥ ५ ॥ सम० ॥ मैत्रादिकनी चिंतना रे लाल, तेह भला शणगार ॥ भवि० ॥ दर्शन गुण वाघा बन्या रे लाल, परिमल परउपगार ॥ भवि० ॥ ॥ ६ ॥ सम० ॥ पूर्व सिद्धकन्या पखे रे लाल, जानईया अणगार ॥ भवि० ॥ सिद्ध शिला वर वेदिका रे लाल, कन्या निवृत्ति सार ॥ भवि० ॥ ७ ॥ सम० ॥ अनंत चतुष्टय दायजो रे लाल, शुद्धा योगनिरोध ॥ भवि० ॥ पाणिग्रहण प्रभुजी करे रे लाल, सहुने हरष विबोध ॥ ॥ भवि० ॥ ८ ॥ सम० ॥ ईणिपरें पर्व दिपालिका रे लाल, करतां कोडि कल्याण ॥ भवि० ॥ ज्ञानविमल प्रभु भक्तिशुं रे लाल, प्रगटे सकलगुण खाणि ॥ भवि० ॥ ९ ॥ ॥सम०॥ईति श्री दिवालीना देववांदवानो विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम विधि ॥

॥ प्रथम बाजोठ अथवा ठवणी उपर पांच पुस्तक मूकीने वासक्षेपथी ज्ञाननी पूजा करीयें, वली पांच दीवेटनो दीवो करीयें ते पुस्तकने जमणी पासें स्थापीयें अने धूपधाणुं डाबे पासें मुकीयें. पुस्तक आगल पांच अथवा एकावन साथीया करी उपर श्रीफल तथा सोपारी मूकीयें. यथाशक्तें ज्ञाननी द्रव्यपूजा करीयें. पछी देव वांदीयें अने सामायिक तथा पोसह मध्ये वासपूजाए पुस्तक पूंजीने देव वांदीए, अथवा देहरा मध्ये बाजोठ त्रण उपराउपर मांडी ते उपर श्री जिन मूर्ति स्थापीयें, तथा महा उत्सवथी पोताने गमें स्नात्र नणावीये. प्रजु आगल जमणी तरफ पुस्तक मांडयुं होय तेहनी पण वास प्रमुखें पूजा करीयें, तथ उजमणुं मांडयुं होय तिहां पण यथा शक्तें करी जिनबिंब आगल लघु स्नात्र नणावीने अथवा सत्तरन्नेदी पूजा नणावीने पछी श्री सौन्नाग्यपंचमीना देव वांदीयें॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे छे.

॥ प्रथम प्रगट नवकार कही ईरियावही पडिक्कमी चार नवकारनो अथवा एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करुं एम कही पछी योग मुद्राए बेसी चैत्यवंदन करीयें ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसौभाग्य पंचमी तणो, सयल दिवस सिणगार ॥ पांचे ज्ञानने पूजीयें, थाये सफल अवतार ॥ १ ॥ सामायिक पोसह विषे, निरवद्य पूजा विचार ॥ सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार ॥ पूर्व दिशें उत्तर दिशें, पीठ रची त्रण सार ॥ पंचवरण जिन बिंबने, स्थापीजें सुखकार ॥ ३ ॥ पंच पंच वस्तु मेलवी, पूजा सामग्री जोग ॥ पंच वरण कलशा भरी, हरीयें दुःख उपभोग ॥ ४ ॥ यथाशक्ति पूजा करो, मति ज्ञानने काजें ॥ पंच ज्ञानमां धुरें कह्युं, श्री जिनशासन राजे ॥ ॥ ५ ॥ मति श्रुत विण होवे नही, अवधि प्रमुख महा ज्ञान ॥ ते माटे मति धुरें कह्युं, मति श्रुतमां मति मान

॥ ६ ॥ क्षय उपशम आवरणनो, लब्धि होये समकाले ॥ स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग कालें ॥ ७ ॥ लक्षण भेदें भेद छे, कारण कारज योगें ॥ मति साधन श्रुत साध्य छे, कंचन कलश संयोगें ॥ ८ ॥ परमातम परमेसरु ए, सिद्ध सयल भगवान् ॥ मति ज्ञान पामी करी, केवल लक्ष्मी निधान ॥ए॥ इति चैत्यवंदन ॥ १ ॥ नमुत्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कहेवां ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ रशीयानी देशी ॥ प्रणमो पंचमी दिवसें ज्ञानने, गाजी जगमां रे जेह ॥ सुज्ञानी ॥ शुभ उपयोगें क्षणमां निर्ज़रे, मिथ्या संचित खेह ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रण० ॥ संतपदादिक नव द्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश ॥सु०॥ नय व्यवहारें आवरण क्षय करी, अज्ञानी ज्ञान उल्लास ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रण० ॥ ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य ॥ सु० ॥ अंतर मुहूर्त रहे उपयोगथी, ए सर्व प्राणीने नित्य ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रण० ॥ लब्धि अंतर मुहूर्त्त लघुपणें, छाशठ सागर जीठ ॥सु०॥ अधिको नरभव बहुविध जिवने, अंतर कहियें न-

दीठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ प्रण० ॥ संप्रति समयें एक बे पामता, होय अथवा नवि होय ॥ सु० ॥ क्षेत्र पल्योपम जाग असंख्यमां, प्रदेश माने बहु जोय ॥ सु० ॥ ५ ॥ ॥ प्रण० ॥ मति ज्ञान पाम्या जीव असंख्य छे, कह्या पडिवाइ अनंत ॥ सु० ॥ सर्व आशातन वरजो ज्ञाननी, वजयलक्ष्मी लिहो संत ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रण० ॥

॥ इति श्री मतिज्ञान स्तवनम् ॥

॥ पछी जयवीयराय कही, खमासमण देइ इछाकारेण संदिस्सह जगवन् श्री मतिज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए अने अन्नथ्थ उससीएणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्व साधुज्यः कही पछी थुइ कहेवी. ते लखीयें छैये ॥

॥ अथ थुइ ॥

॥ श्रीमति ज्ञाननी तत्त्व जेदथी, पर्यायें करी व्याख्याजी ॥ चउविह द्रव्यादिकने जाणे, आदेशें करी दाख्याजी ॥ माने वस्तु धर्म अनंता; नही अज्ञान वि-

वङ्काजी ॥ ते मति ज्ञानने वंदो पूजो, विजय लक्ष्मी गुण कांक्काजी ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥

॥ पछी खमासमण देइ एक गुणनो दुहो कही पछी बीजुं खमासमण देइ बीजो गुण वरणववो ॥ ए रीतें मतिज्ञान संबंधी अठ्ठावीश खमासमण देवां ते पीठिकाना दोहा लखीयें छैयें ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीश्रुत देवी नगवती, जे ब्राह्मी लिपिरूप ॥ प्रणमे जेहने गोयमा, हुं वंदूं सुखरूप ॥ १ ॥ ज्ञेय अनंते ज्ञानना, नेद अनेक विलास ॥ तेहमां एकावन कहुं, आतम धर्म प्रकाश ॥ २ ॥ खमासमण एक एकथी, स्तवियें ज्ञानगुण एक ॥ एम एकावन दीजीयें, खमासमण सुविवेक ॥ ३ ॥ श्री सौनाग्य पंचमी दिनें, आराधो मतिज्ञान ॥ नेद अठावीश एहना, स्तवीयें करी बहुमान ॥ ४ ॥ इंद्रिय वस्तु पुग्गला, मलवे अवत्तव नाण ॥ लोचन मन विणु अकतें, व्यंजना वग्रह जाण ॥ ५ ॥ नाग असंख्य आवली लघु, सास पहुत छिइ जिठ ॥ प्राप्यकारी चउ इंद्रिया, अप्राप्यकारी डुग दिठ ॥ ६ ॥इति॥

॥ अथ खमासमणना दोहा ॥

॥ समकित श्रद्धावंतने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश ॥ प्रणमुं पदकज तेहना, जाव धरीने उल्लास ॥१॥ ए हूहो गुण गुण दीठ कहेवो ॥ खमा० ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नहीं वर्णादिक योजना, अर्थावग्रह होय ॥ नो इंद्रिय पंच इंद्रियें, वस्तु ग्रहण कांइ जोय ॥२ ॥ सम०॥ अन्वय व्यतिरेकें करी, अंतर मुहूर्त प्रमाण ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, इहां विचारणा ज्ञान ॥ ३ ॥ सम० ॥ वर्णादिक निश्चय वसे, सुर नर एहिज वस्त ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, जेद अपाय प्रशस्त ॥ ४ ॥ सम० ॥ निरणित वस्तु स्थिर ग्रहे, कालांतर पण साच ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, धारणा अर्थ उवाच ॥ ५ ॥ सम० ॥ निश्चय वस्तु ग्रहे छते, संतत ध्यान प्रकाम ॥ अपायथी अधिके गुणें, अविच्युति धारणा ठाम ॥ ६ ॥ सम० ॥ अविच्युति स्मृतितणुं, कारज कारण जेह ॥ संख्य असंख्य कालज सुधी, वासना धारणा तेह ॥ ७ ॥ सम०॥ पूर्वोत्तर दर्शन छय, वस्तु अप्राप्त एकत्व ॥ असंख्य कालें

ए तेह बे, जाति स्मरणे तत्त्व ॥ ८ ॥ सम० ॥ वाजित्र नाद लही ग्रहे, ए तो डुंडुभि नाद ॥ अवग्रहादिक जाणे बहु, भेद ए मति आल्हाद ॥ ए ॥ सम० ॥ देश सामान्ये वस्तु बे, ग्रहे तदपि सामान्य ॥ शब्द ए नव नव जातिनो, ए अबहु मति मान ॥ १० ॥ सम० ॥ ए कज तुरियना नादमां, मधुर तरूणादिक जाति ॥ जाणे बहुविध धर्मशुं, क्षय उपशमनी भांति ॥ ११ ॥ सम०॥ मधुरतादिक धर्ममां, ग्रहवो अल्प सुविचार ॥ अबहु विध मति भेदनो, कीधो अर्थ विस्तार ॥ १२ ॥ सम० ॥ शीघ्रमेव जाणे सही, नवि होय बहु विलंब ॥ क्षिप्र भेद ए ज्ञाननो, जाणो मति अविलंब ॥ १३ ॥ सम० ॥ बहु विचार करी जाणीयें, ए अक्षिप्रह भेद ॥ क्षयोपशम विचित्रता, कहे महाज्ञानी संवेद ॥ १४ ॥ सम० ॥ अनुमाने करी को ग्रहे, ध्वजथी जिनवर चैत्य ॥ पूर्व प्रबंध संभालिनें, निश्रित भेद संकेत ॥ १५ ॥ स० ॥ बाहिर चिन्ह ग्रहे नही, जाणे वस्तु विवेक ॥ अनिश्रित ए धारीये, आभि निबोधक टेक ॥ १६ ॥ स० ॥ निःसंदेह निश्चय पणे, जाणे वस्तु अधिकार ॥ निश्चित अर्थ

ए चिंतवो, मतिज्ञान प्रकार ॥ १७ ॥ समण ॥ एम होयें वा अन्यथा, एम संदेह जुत्त ॥ धरे अनिश्चित भावथी, वस्तु ग्रहण उपयुत्त ॥ १८ ॥ समण ॥ बहु प्रमुख भेदें ग्रहुं, जिम एकदा तिम नित्य ॥ बुद्धि थाये जेहने, ए ध्रुव भेदनुं चित्त ॥ १९ ॥ समण ॥ बहु प्रमुख रूपें कदा, कदा अबह्वादिक रूप ॥ ए रीतें जाणे तदा, भेद अध्रुव स्वरूप ॥ २० ॥ समण ॥ अवग्रहादिक चउभेदमां, जाणवा योग्य ते ज्ञेय ॥ ते चउभेदें भांखीयो, द्रव्यादिकथी गणेय ॥ २१ ॥ समण ॥ जाणे आदेशें करी, केटला पर्याय विसिठ ॥ धर्मादिक सवि द्रव्यने, सामान्य विशेष गरिठ ॥ २२ ॥ सण ॥ सामान्या देशें करी, लोकालोक स्वरूप ॥ क्षेत्रथी जाणे सर्वने, तत्त्व प्रतीत अनुरूप ॥ २३ ॥ सण ॥ अतीत अनागत वर्तना, अद्धा समय विशेष ॥ आदेशें जाणे सहु, वितथ नहीं लवलेश ॥ २४ ॥ ॥ सण ॥ भावथी सविहुं भावनो, जाणे भाग अनंत ॥ उदयिकादिक भाव जे, पंच सामान्ये लहंत ॥ २५ ॥ सण ॥ अश्रुत निश्रित जाणिये, मतिना चार प्रकार ॥ शीघ्र समय रोहा परे, अकल औत्पत्तिकी सार ॥ २६ ॥ समण ॥ विनय करंतां गुरुतणो, पामे मति विस्तार ॥ ते विनयिकी

मति कही, सघला गुण शिरदार ॥ २७ ॥ सम० ॥ करतां कार्य अभ्यासथी, उपजे मति सुविचार ॥ ते बुद्धि कही कर्मकी, नंदी सूत्र मझार ॥ २८ ॥ सम० ॥ जे वयना परिपाकथी, लहे बुद्धि भरपूर ॥ कमलवने महा हंसने, परिणामिकीए सनूर ॥ २९ ॥ स० ॥ अठ्ठावीश बत्रीश दुग चउ, त्रणशें चालीश जेह ॥ दर्शनथी मति भेद ते, विजयलक्ष्मी गुणगेह ॥ ३० ॥ सम० ॥ ए मति ज्ञानना अष्टा विंशति भेद कह्या ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्व परप्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टाले संदेह ॥ अभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥ वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥ मांहोमांहे पूरव धरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥ छठाणवडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥ तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ॥ समकित श्रुतना जाणीये, सर्व पदारथ साचा ॥ द्रव्य गुण

पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदी सूत्र उपदेश ॥ २ ॥ चौवीश जिनना जाणीये, चउद पूरवधर साध ॥ नवशत तेत्रीश सहस छे, अठाणुं निरुपाध ॥ परमत एकांत वादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्या, अर्थ यथार्थ थाय ॥ अरिहंत श्रुत केवली कहे ए, ज्ञाना चार चरित्त ॥ श्रुत पंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ नमुथ्थुण० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ श्री श्रुत चउद भेदे करी, वरणवे श्री जिनराज रे ॥ उपधानादि आचारथी, सेवीये श्रुत महाराज रे ॥ १ ॥ श्रुतशुं दिल मान्यो ॥ दिल मान्यो रे, मन मान्यो, प्रभु आगम सुखकार रे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकादि अक्षर संयोगथी, असंयोगी अनंत रे ॥ स्वपर पर्याये एक अक्षरो, गुण पर्याय अनंत रे ॥ २ ॥ श्रुत० ॥ अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो छे नित्य रे ॥ ते तो अवराए नहीं, जीव प्रमाणं ए चित्त रे ॥ ३ ॥ श्रुत० ॥ केहेवे सांभलवा

मति कही, सघला गुण शिरदार ॥ २७ ॥ सम० ॥ करतां कार्य अभ्यासथी, उपजे मति सुविचार ॥ ते बुद्धि कही कर्मकी, नंदी सूत्र मझार ॥ २८ ॥ सम० ॥ जे वयना परिपाकथी, लहे बुद्धि भरपूर ॥ कमलवने महा हंसने, परिणामिकीए सनूर ॥ २९ ॥ स० ॥ अठ्ठावीश बत्रीश दुग चउ, त्रणशें चालीश जेह ॥ दर्शनथी मति भेद ते, विजयलक्ष्मी गुणगेह ॥ ३० ॥ सम० ॥ ए मति ज्ञानना अष्टा विंशति भेद कह्या ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्व परप्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टाले संदेह ॥ अभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥ वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥ मांहोमांहे पूरव धरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥ छठाणवडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥ तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ॥ समकित श्रुतना जाणीये, सर्व पदारथ साचा ॥ द्रव्य गुण

पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदी सूत्र उपदेश ॥ २ ॥ चौवीश जिनना जाणीये, चउद पूरवधर साध ॥ नवशत तेत्रीश सहस छे, अठाणुं निरुपाध ॥ परमत एकांत वादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्या, अर्थ यथार्थ थाय ॥ अरिहंत श्रुत केवली कहे ए, ज्ञाना चार चरित्त ॥ श्रुत पंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ नमुथ्थुण० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ श्री श्रुत चउद भेदे करी, वरणवे श्री जिनराज रे ॥ उपधानादि आचारथी, सेवीये श्रुत महाराज रे ॥ १ ॥ श्रुतशुं दिल मान्यो ॥ दिल मान्यो रे, मन मान्यो, प्रभु आगम सुखकार रे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकादि अक्षर संयोगथी, असंयोगी अनंत रे ॥ स्वपर पर्याये एक अक्षरो, गुण पर्याय अनंत रे ॥ २ ॥ श्रुत० ॥ अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो छे नित्य रे ॥ ते तो अवराए नहीं, जीव सूक्ष्मनुं ए चित्त रे ॥ ३ ॥ श्रुत० ॥ ईंदे छे सांभलवा

फेरी पूछे, निसुणि ग्रंहे विचारंत रे ॥ निश्चय धारणा तिम करे, रुगुण आठ ए गणंत रे ॥ ४ ॥ श्रुत० ॥ वादी चौवीश जिनतणा, एक लाख छत्रीश हजार रे ॥ बशें सयल सजामांहे, प्रवचन महिमा अपार रे ॥ ५ ॥ श्रुत० ॥ जणे जणावे सिद्धांत ने, लखे लखावे जेह रे ॥ तस अवतार वखाणीये, विजयलक्ष्मी गुण गेह रे ॥ ॥ ६ ॥ श्रुत० ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ विधि ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह जगवन् श्रीश्रुतज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंद० ॥ अन्न० ॥ लोगस्स० ॥ एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने थोय कहेवी, ते कहे छे.

॥ गोयम बोले ग्रंथ संजाली ॥ ए देशी ॥ त्रिगडे बेशी श्रीजिन जाण, बोले जाषा अमीय समाण, मत अनेकांत प्रमाण ॥ अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अनुयोग जिहां गुण खाण ॥ आतम अनुजव ठाण ॥ जकल पदारथ त्रिपदी जाण ॥ जोजन जूमि पसरे वखाण, दोष बत्रिश परिहाण ॥ केवली जाखित ते श्रुत

गाण, विजयलक्ष्मीसूरि कहे बहु मान, चित्त धरजो ते सयाण ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ श्रुत ज्ञानना चउद गुण वर्णववाने अर्थे दोहा कहेवा ते लखेछे.

॥ दोहा ॥

॥ वंदो श्री श्रुतज्ञानने, जेद चतुर्दश वीश ॥ तेह-मां चउदश वरणवुं, श्रुत केवली श्रुत इश ॥ १ ॥ जेद अढार अकारना, एम सवि अक्षरमान ॥ लब्धि संज्ञा व्यंजनविधि, अक्षर श्रुत अवधान ॥२॥ अथ पीठिका ॥ पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाणी ॥ पूजो बहु विध रागथी, चरण कमल चित्त आणी ॥१॥ ए दोहो गुण गुण दीठ कहेवो ॥ कर पल्लव चेष्टादिकें, लखे अंतर्गत वाच ॥ एह अन क्षर श्रुततणो, अर्थ प्र-काशक साच ॥ २ ॥ पव० ॥ संज्ञा जे दीहकालकी, ते-णे सन्निया जाण ॥ मनइंद्रियथी उपन्युं, संज्ञी श्रुत अ हिठाण ॥ ३ ॥ पव० ॥ मन रहित इंद्रियथकी, निपन्युं जेहने ज्ञान ॥ क्षय उपशम आवरणथी, श्रुत असंज्ञी वखाण ॥ ४ ॥ पव० ॥ जे दर्शन दर्शन विना, दर्शन ते प्रति पक्ष ॥ दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्ष

॥ ५ ॥ पव० ॥ नंग जाल नर बाल मति, रचे विविध आयास ॥ तिहां दर्शन दर्शनतणो, नहीं निदर्शन ना-स ॥ ६ ॥ पव० ॥ ललित त्रिनंगी नंगनर, नैगमादि नय नूर ॥ शुद्ध शुद्धतर वचनथी, समकित श्रुत वडनूर ॥ ७ ॥ पव० ॥ सद्असद् वेहेंचण विना, ग्रहे एकांते प-क्ष ॥ ज्ञान फल पामे नहीं, ए मिथ्या श्रुत लक्ष ॥ ८ ॥ ॥ पव० ॥ नरतादिक दश क्षेत्रमां, आदि सहित श्रुत धार ॥ निज निज गणधर वीरचियो, पामी प्रनु आधार ॥ ए ॥ पव० ॥ डुप्पसह सूरीश्वर शुद्धि, वर्तशे श्रुत-आचार ॥ एक जीवने आसरी, सादिसांत सुविचार ॥ ॥ १० ॥ पव० ॥ श्रुत अनादि द्रव्यनयथकी, शाश्वत नाव बे एह ॥ महाविदेहमां ते सदा, आगम रयण अ-बेह ॥ ११ ॥ पव० ॥ अनेकजीवने आसरी, श्रुत बे अ-नादि अनंत ॥ द्रव्यादिक चउ नेदना, सादि अनादि विरतंत ॥ १२ ॥ पव० ॥ सरिखा पाठ बे सूत्रमां, ते श्रुत गमिक सिद्धांत ॥ प्राये दृष्टि वादमां, शोनित गुण अ-नेकांत ॥ १३ ॥ पव० ॥ सरिखा आलावा नही, ते का-लिक श्रुत वंत ॥ आगमिक श्रुत ए पूजीये, त्रिकरण योग हसंत ॥ १४ ॥ पव० ॥ अढार हजारपदे करी,

आचारांग वखाण ॥ ते आगल डुगुणा पदे, अंग प्रविष्ठ सुअ नाण ॥ १५ ॥ पव० ॥ बार उपांगह जेह बे, अंग बाहिर श्रुत तेह ॥ अनंग प्रविष्ट वखाणीये, श्रुत लक्ष्मी सूरि गेह ॥ १६ ॥ पव० ॥ इति श्रुतज्ञानं ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ अवधिज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आतम प्रत्यक्ष ॥ क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥ देव निरय जव पामतां, होय तेहने अवश्य ॥ श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विजंग वश्य ॥ नर तिरिय गुणथी लहे, शुज परिणाम संयोग ॥ काउस्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघट्यो ते उपयोग ॥ १ ॥ जघन्यथी जाणे जूये, रुपी डव्य अनंता ॥ उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्ति वस्तु मुणंता ॥ क्षेत्रथी लघु अंगुल तणो, जाग असंखित देखे ॥ तेहमां पुद्गल खंधजे, तेहने जाणे पेखे ॥ लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंरू असंख्य उक्किठ ॥ जाग असंख्य आवलि तणो, अद्धा लघुपणे दीठ ॥ २ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ए, अतीत अनागत अद्धा ॥ अतिशय संख्यातिगपणे, सांजलो जाव प्रबंधा ॥ एक एक डव्यमां चार

भाव, जघन्यथी ते निरखे ॥ असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥ चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥३॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥ पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कुंअर गंभारो नजरे देखतां जी ॥ ए देशी ॥ पूजो पूजो अवधिज्ञानने प्राणिया रे, समकितवंतने ए गुण होय रे ॥ सवि जिनवर ए ज्ञाने अवतरी रे, मानव महोदय जोय रे ॥ पूजो० ॥१॥ शिवराज ऋषि विपर्यय देखतो रे, द्वीप सागर सात सात रे ॥ वीर पसायें दोष विभंग गयोरे, प्रगट्यो अवधि गुण विख्यात रे ॥ पूजो० ॥ ॥२॥ गुरू स्थिति साधिक छासठ सागरू रे, कोइने एक समय लघु जाण रे॥ भेद असंख्य छे तरतम योगथी रे, विशेषावश्यकमां एह वखाण रे ॥पू०॥३॥ चारशें एकलाख तेत्रीश सहस छे रे, ओही नाणी मुणींद रे ॥ ऋषभादिक चउवीश जिणंदनां रे, नमे प्रभु पद अरविंद रे ॥पूजो०॥ ॥४॥ अवधिज्ञानी आणंदने दीए रे, मिछामिदुक्कडं

गोयम स्वामि रे ॥ वरजो आशातन ज्ञान ज्ञानी तणी रे, विजयलक्ष्मी सुख धाम रे ॥ पूजो० ॥ ५ ॥ इति अवधिज्ञान स्तवनं ॥ ३ ॥ पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् त्रीजुं अवधिज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदण० ॥ अन्नत्थ० ॥ लोगस्स० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग पारी थोय कहेवी ते लखे छे.

॥ अथ थुइ ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे.—ए देशी ॥

॥ उंही नाण सहित सवि जिनवरु, चवि जननी कुखे अवतरु ॥ जस नामे लहीये सुख तरु, सवि इति उपद्रव संहरु ॥ हरी पाठक संशय संहरु, वीर महीमा ज्ञान गुणायरु ॥ ते माटे प्रजुजी विश्वंजरु, विजयांकित लक्ष्मी सुहंकरु ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देई उजा थइ गुण वर्णववाने अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा ते कहे छे.

॥ दोहा ॥

॥ असंख्य जेद अवधि तणा, षट् तेहमां सामान्य ॥

क्षेत्र पनक लघुथी गुरु, लोक असंख्य प्रमाण ॥१॥ लोचन परे साथे रहे, ते अनुगामिक धाम ॥ ६६ सागर अधिक छे, एक जीव आशरी ठाम ॥ २ ॥ उपन्यो अवधि ज्ञाननो, गुण जेहने अविकार ॥ वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहे सो वार ॥ १ ॥ ए दोहा सर्वत्र खमासमणें कहेवा ॥ जे क्षेत्रे ठही उपन्युं, तिहां रह्यो वस्तु देखंत ॥ थिर दीपकनी उपमा, अननुगामी लहंत ॥ ॥ उप० ॥ २ ॥ अंगुल असंख्येय भागथी, वधतुं लोक असंख्य ॥ लोकावधि परमावधि, वर्धमान गुण कंख्य ॥ ॥ उप० ॥ ३ ॥ योग्य सामग्री अभावथी, हीयमान परिणाम ॥ अध अरूपूरव योगथी, एहवो मननो काम ॥ उप० ॥ ४ ॥ संख्य असंख्य जोजन सुधी, उत्कृष्टो लोकांत ॥ देखी प्रतिपाति होये, पुद्गल द्रव्य एकांत ॥ उप० ॥ ५ ॥ एक प्रदेश अलोकनो, पेखे जे अवधि नाण ॥ अपडिवाइ अनुक्रमे, आपे केवल नाण ॥उप०॥ ॥ ६ ॥ इति अवधिज्ञान संपूर्ण ॥

पछी खमासमण देई चैत्यवंदन करवुं.

॥ अथ चतुर्थ मनः पर्यवज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीमनः पर्यवज्ञान छे, गुणप्रत्ययी ए जाणो ॥ अ

प्रमादि ऋद्धिवंतने, होय संयम गुण ठाणो ॥ कोइक चारित्रवंतने, चढते शुज परिणामे ॥ मनना जाव जाणे सही, सागारि उपयोग ठामे ॥ चिंतविता मनो द्रव्यना ए, जाणे खंध अनंता ॥ आकाशे मनो वर्गणा, रह्या ते नवि मुणंता ॥ १ ॥ संज्ञी पंचेंद्रिय प्राणीये, तनुयोगे करी ग्रहीया ॥ मन योगे करी मनपणें, परिणमे ते द्रव्य मुणीया ॥ तिरुं माणस क्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ॥ तिर्छा लोकना मध्यथी, सहस जोयण अधोलोके॥ उरध जाणे ज्योतिषी लगे ए, पलियनो जाग असंख्य ॥ कालथी जाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ २ ॥ जावथी चिंतित द्रव्यना, असंख्य पर्याय जाणे ॥ ऋजु मतीथी विपुलमति, अधिका जाव वखाणे ॥ मनना पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे साचुं ॥ वितथपणुं पामे नहीं, ते ज्ञाने चित्त राचुं ॥ अमूर्ति जाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री जगवंत ॥ चरणकमल नमुं तेहनां, विजयलक्ष्मी गुणवंत ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुत्थुणं० ॥ ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत् कहिये ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥ जीरे माहारे श्री जिनवर

नगवान, अरिहंत निजनिज ज्ञानथी ॥ जीरेजी ॥ जी०॥ ॥ संयम समय जाणंत, तव लोकांतिक मानथी ॥ जी-रेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ तीर्थ वर्तावो नाथ, इम कही प्रण-मे ते सुरा ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ षट अतिशयवंत दान, लेइने हरखे सुरनरा ॥ जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ इणवीध सवि अरिहंत, सर्व विरति जब उच्चरे ॥जीरेजी॥जी०॥ मनः पर्यव तव नाण, निर्मल आतम अनुसरे ॥ जी-रेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जेहने विपुलमति तेह, अप्रतिपा तीपणे उपजे ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ अप्रमादि रुद्धि-वंत ॥ गुणठाणे गुण नीपजे ॥ जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥ एक लक्ष पीस्तालीश हजार, पांचशें एकाणुं जाणीयें ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ मन नाणी मुनिराज, चोवीश जि नना वखाणीये ॥ जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ हुं वंदूं धरी नेह, सवि संशय हरे मनतणा ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ वि जयलक्ष्मी शुन नाव, अनुनव ज्ञानना गुण घणा ॥ ॥जीरेजी ॥६॥ इति मनःपर्यव ज्ञान स्तवनं ॥ पढी जय वीयराय कही खमासमण देइ इच्छाकारेण सं० ॥ चोथुं मनःपर्यव ज्ञान आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदणव० ॥ अन्नछ० ॥ लोगस्स० ॥ एक नवकारनो

काउस्सग्ग करी थोय कहेवी, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥ प्रभुजी सर्व सामायिक उच्चरे, सिद्ध नमी मद वारीजी ॥ छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहांलगे, योगासन तप धारी जी ॥ चोथुं मनःपर्यव तव पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ॥ ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजयलक्ष्मी सुख कारी जी ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ उभा रही गुण स्तववा अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ दोहा ॥

॥ मनः पर्यव डुग भेदथी, संयम गुण लही शुद्ध ॥ भाव मनोगत संज्ञीना, जाणे प्रगट विशुद्ध ॥ १ ॥ घट ए पुरुषे धारीयो, इम सामान्य ग्रहंत ॥ प्राये विशेष विमुख लहे, ऋजुमति मनह मुणंत ॥ २ ॥ ए गुण जेह ने उपन्यो, सर्व विरति गुणठाण ॥ प्रणमुं हितथी तेहना, चरण कमल चित्त आण ॥ १ ॥ नगर जाति कंचन तणो, धार्यो घट एह रूप ॥ इम विशेष मन जाणतो,

विपुल मति अनुरूप ॥ २ ॥ ए गुण जेहनें० ए आंकणी ॥ इति मनः पर्यव ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ हवे खमासमण देइने पंचम केवलज्ञाननुं चैत्यवंदन करवुं, ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री जिन चउनाणी थइ, शुक्लध्यान अभ्यासे ॥ अतिशय अतिशय आतमरूप, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ निद्रा स्वप्न जागरदशा, ते सवि दूरे होवे ॥ चोथी उजागर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥ क्षपक श्रेणी आरोहिया ए, अपूर्व शक्ति संयोगे ॥ लही गुणठाणुं बारमुं, तुरीय कषाय वियोगे ॥ १ ॥ नाण दंसण आवरण मोह, अंतराय घनघाती ॥ कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाती ॥ दोय धरम सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ॥ प्रथम विशेषपणे ग्रहे, बीजे सामान्य संयोग ॥ सादि अनंत भांगे करी ए, दर्शन ज्ञान अनंत ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत ॥ २ ॥ मूल पयडिमां एक बंध, सत्ता उदये चार ॥ उत्तर पयडीनो एक बंध, तिम उदये रहे बायाल ॥ सत्ता पंच्चासीतणी,

कर्म जेहवां रज्जु गार ॥ मन वच काया योग जास, अविचल अविकार ॥ संयोगी केवलतणी ए, पामी द-शाये विचरे ॥ अक्षय केवलज्ञानना, विजयलक्ष्मी गुण उच्चरे ॥ ३ ॥ इति श्री केवलज्ञान चैत्यवंदनं ॥

॥ पछी नमुथ्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं ते लखीये छैये.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे. ए देशी ॥ श्री जिन-वरने प्रगट थयुं रे, क्षायिक भावे ज्ञान ॥ दोष अढार अभावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाण रे ॥ भविया वंदो केवलज्ञान ॥ १ ॥ पंचमी दिनगुण खाण रे ॥ भविया वंदो ॥ ए आंकणी ॥ अनामीना नामनो रे, किश्यो वि शेष कहेवाय ॥ ए तो मध्य भावे करी रे, वचन उल्लेख ठराय रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ वंदो० ॥ ध्यान टाणे प्रभु तुं होये रे, अलख अगोचर रूप ॥ परा पश्यंति पामिने रे, कांइ प्रमाणे मुनि रूप रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ वंदो० ॥ छती पर्याय जे ज्ञानना रे, तेतो नवि बदलाय ॥ ज्ञेयनी नव-

नवी वर्त्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ वं दो० ॥ बीजा ज्ञान तणी प्रजारे, एहमां सर्व समाय ॥ रविप्रजाथी अधिक नहीं रे, नक्षत्र गण समुदाय रे ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ वंदो० ॥ गुण अनंता ज्ञानना रे, जाणे धन्य नर तेह ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे रे, ज्ञान महोदय गेह रे ॥ जवि० ॥ ६ ॥ वंदो० ॥

॥ इति केवलज्ञान स्तवनम् ॥

पछी खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह जगवन् श्रीकेवलज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदणव० ॥अन्नब०॥ लोगस्स० एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही थोय कहेवी ते लखीये छैये.

॥ अथ थोय ॥

प्रह उठी वंदूं ॥ए देशी॥ छत्र त्रय चामर, तरू अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि डुंडुजि, जामंमल फलकार ॥ वरसे सुर कुसुमें, सिंहासन जिन सार ॥ वंदे लक्ष्मीसूरि, केवल ज्ञान उदार ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ उज्ञा रही गुण स्तववा दोहा कहेवा ते कहीये छैये.

॥ अथ दोहा लिख्यते ॥

॥ बहिरातम त्यागे करी, अंतर आतम रूप ॥ अनुजविजे परमातमा, नेद एकज चिद्रुप ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम परमेश्वरु, परमानंद उपयोग ॥ जाणे देखे सर्वने, स्वरूप रमण सुख जोग ॥ २ ॥ गुण पर्याय अनंतता, जाणे सघला द्रव्य ॥ काल त्रयवेदि जिणंद, नाषित नव्या नव्य ॥ ३ ॥ अलोक अनंतो लोकमां, थापे जेह समथ्थ ॥ आतम एक प्रदेशमां, वीर्य अनंत पसथ्थ ॥ ॥ ४ ॥ केवल दंसण नाणनो, चिदानंद घन तेज ॥ ज्ञान पंचमी दिन पूजीये, विजयलक्ष्मी शुन्न हेज ॥ ५ ॥

॥ इति श्री लक्ष्मी सूरिकृतं विधिसहितं श्री ज्ञान पंचमी देववंदन समाप्तम् ॥

॥ अथ पंमित श्री रूपविजयजी कृत ॥

॥ मौन एकादशीना देववंदन प्रारंनः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नगर गजपुर, पुरंदर पुर, शोनया अति, जित्वरं ॥ गजवाजि रथवर, कोटिकलितं, ईदिरानृत, मंदिरं ॥

नर नाथ बत्रीश, सहस सेवित, चरण पंकज, सुखकरं॥ सुर असुर व्यंतर, नाथ पूजित, नमो श्रीअर, जिनवरं ॥ १ ॥ अप्सरा सम, रूप अद्भुत, कला यौवन, गुण भरी ॥ एक लाख बाणुं, सहस्स उपर, सोहियें, अंते उरी ॥ चोराशी लक्ष गज, वाजी स्यंदन, कोटि छन्नू, भटवरं ॥ सुर अ० ॥ २ ॥ सग पणिंदी, सग एगिंदी, च उद रत्नशुं, शोभितं ॥ नव निधाना, धिपति नाकी, भ क्ति भाव, भृतैर्नतं ॥ कोटि छन्नु, ग्राम नायक, सकल शत्रु, विजित्वरं ॥ सुर अ० ॥ ३ ॥ सहस अष्टोत्तर सुलं- छन, लक्षितं, कनक छविं ॥ चिन्ह नंदावर्त शोभितं, स्वरप्रभा, निर्जित रविं ॥ चक्रि सप्तम, भुक्त भोगी, अष्टा दशमो, जिनवरं ॥ सुर० ॥ ४ ॥ लोकांति कामर, बोधितो जिन, त्यक्त राज्य, रमाभरं ॥ मृगशिर एका- दशी, शुक्ल पक्षें, ग्रहित संयम, सुखकरं ॥ अरनाथ प्र भुपद, पद्म सेवन, शुद्ध रूप सुखाकरं ॥ सुर असुर० ॥ ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जयवीयराय० अर्धो कही ख- मासमण देइने चैत्यवंदन करवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ चैत्यवंदनं लिख्यते ॥

॥ राय सुदर्शन कुल नजें, नूतन दिन मणि रूप ॥ देवी माता जनमियो, नमे सुरासुर नूप ॥ १ ॥ कुमर राज्य चक्रिपणे, जोगवी जोग उदार ॥ त्रेशठ सहस वरषां पठी, लीये प्रजु संयम जार ॥ २ ॥ सहस पुरुष साथे लीए, संयम श्री जिनराय ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, शुद्ध रूप जिन थाय ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पठी जंकिंचि० ॥ नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेश्याणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीने थोयो कहेवी, ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अरनाथ जिनेश्वरु, चक्री सप्तम सोहे ॥ कनक वरण छबि जेहनी, त्रिजुवन मन मोहे ॥ जोग करमनो क्षय करी, जिन दिक्षा लीधी ॥ मन पर्यव नाणी थया, करी योगनी सिद्धी ॥ १ ॥ मागशिर शुदि एकादशी, अरदीक्षा लीधी ॥ मल्लि जनम व्रत केवली, नमी केवल रूद्धी ॥ दश खेत्रे त्रण कालना, पंच पंच कल्याण ॥ तिणे ए तिथि आराधतां, लहीये शिव पुर

ठाण ॥ २ ॥ अंग अग्यार आराधवा, वलि बार उपांग ॥ मूल सूत्र चारे नलां, षट बेद सुचंग ॥ दश पयन्ना दी पता, नंदी अनुयोग द्वार ॥ आगम एह आराधतां, लहो नवजल पार ॥ ३ ॥ जिनपद सेवा नित्य करे, सम कित शुचिकारी ॥ जक्षेश जक्ष सोहामणो, देवी धार णी सारी ॥ प्रभु पद पद्मनी सेवना, करे जे नरनारी ॥ चिदानंद निज रूपने, लहे ते निरधारी ॥ ४ ॥ इति ॥ स्तुति युगलं ॥ पछी नमुत्थुणं ॥ अरिहंत कही एक न वकारनो काउस्सग्ग करी पछी थोय कहेवी ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अर जिन ध्यावो, पुण्यना थोक पावो ॥ सवि डुरित गमावो, चित्त प्रभु ध्यान लावो ॥ मद मदन वि रावो, नावना शुद्ध नावो ॥ जिनवर गुण गावो, जिम लहो मोक्ष ठावो ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, क्षय क री मोह नारी ॥ केवल शुचि धारी, मान माया निवा री ॥ थया जग उपगारी, क्रोध योद्धा पहारी ॥ शुचि गुण गण धारी, जे वस्या सिद्धि नारी ॥ २ ॥ नव तत्त्व वखाणी, सप्त नंगी प्रमाणी ॥ सग नयथी मिलाणी,

चार अनुयोग खाणी ॥ जिनवरनी वाणी, जे सुणे ज-
व्य प्राणी ॥ तिणे करी अघ हाणी, जइ वरे सिद्धि
राणी ॥ ३ ॥ समकिति नर नारी, तेहनी ज्ञक्ति कारी ॥
धारणी सूरि सारी, विघ्नना थोक हारी ॥ प्रजु आणा
कारी, लब्धि लीला विहारी ॥ संघ डुरित निवारी, होय
आणंदकारी ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ पढी नमुथ्थुणं ॥
कही जावंति चेइआइ कही पढी जावंति केविसाहु
कही स्तवन कहेवुं, ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमलना गीतनी देशी ॥ जगपति श्री अर जिन
जगदीश, हस्ति नागपुर राजीयो ॥ जगपति राय सुद
र्शन नंद, महिमा महिमांहे गाजीयो ॥ १ ॥ जगपति
कंचन वरण शरीर, कामित पूरण सुरतरु ॥ जगपति लं
छन नंदावर्त, त्रण जुवन मंगल करू ॥ २ ॥ जगपति षट
खंड जरत अखंड, चक्रवर्त्तीनी संपदा ॥ जगपति सह-
स्स बत्रीश जूपाल, सेवित चरण कमल सदा ॥ ३ ॥ ज
गपति सोहे सुंदर वान, चउसठी सहस्स अंतेउरी ॥
जगपति जोगवी जोग रसाल, जोग दशा चित्तमां धरी

॥ ४ ॥ जगपति सहस पुरुष संघात, मृगशिर शुदि एकादशी ॥ जगपति संयम लीये प्रनु धीर, त्रिकरण योगे उल्लसी ॥ ५ ॥ जगपति चोशठ सुरपति ताम, नक्ति करे चित्त गह गही ॥ जगपति नाचे सुरवधू कोमि, अंग मोमी आगल रही ॥ ६॥ जगपति वाजे नव नव छंद, देव वाजित्र सोहामणां ॥ सुरपति देव डुष्य ठवे खंध, पुष्पवृष्टि करे सुर घणा ॥ ७ ॥ जगपति धन्य वेळा घमी तेह, धन्य ते सुर नर खेचरा ॥ जगपति जेणे कल्याणक दीठ, धन्य जनम ते नव तस्या ॥ ८॥ जगपति प्रनु पद पद्मनी सेव, त्रिकरण शुद्धे जे करे ॥ जगपति करीय करमनो अंत, शुद्ध रूप निज ते वरे ॥ ए॥ इति श्री अरजिन स्तवनम् ॥ पठी जयवीयराय अर्धो कहीने चैत्यवंदन कहेवुं. ते लखीये बैये.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

अवधिज्ञाने आनोगिने, निज दीक्षा काल ॥
दान संवछरी जिन दिये, मनोवंछित ततकाल ॥ १ ॥
धन कण कंचन कामिनी, राज ऋद्धि नंमार ॥ गेडी
संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥ २ ॥ मृगशिर

शुदि एकादशी ए, संयम लीये महाराज ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुणत्थुं० कहीने जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥ इति प्रथम देववंदन जोडो कह्यो ॥ १ ॥ एज रीते चार जोडानी विधि जाणवी ॥ हवे बीजो जोडो कहेवो, तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन कहे छे.

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ जय जय मल्लि जिणंद चंद, गुण कंद अमंद ॥ नमे सुरासुर चंद, तिम नूपति वृंद ॥ १ ॥ कुसुम गेह शय्या कुसुम, कुसुमाजरण सोहाय ॥ जननी कूखे जब जिन हुता, मल्लि नाम तिणे ठाय ॥ २ ॥ कुंन नरेश्वर कुल तिलो ए, मल्लिनाथ जिनराज ॥ तस पद पद्म नम्याथकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥

॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

नील वरण दुःखहरण, शरण शरणागत वत्सल ॥ निरुपम रूप निधान, सुजस गंगाजल निर्मल ॥ १ ॥ सुगुण सुरासुर कोडि, दोडी नित्य सेवा सारे ॥ जक्ति

जुक्ति नित्य मेव, करी निज जन्म सुधारे ॥ २ ॥ बाल-
पणे जिनराजने ए, सवि मली हुलरावे ॥ जिन मुख
पद्म निहालीने, बहु आणंद पावे ॥ ३ ॥

॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पुरुषोत्तम परमातमा, परम ज्योति परधान ॥
परमानंद स्वरूप रूप, जगमां नही उपमान ॥ १ ॥ मर
कत रत्न समान वान, तनु कांति बिराजे ॥ मुख सोमा
श्रीकार देखी, विधु मंरूल लाजे ॥ २ ॥ इंद्रि वर दल
नयन सयल, जन आणंदकारी ॥ कुंत्न राय कुल त्राण
त्राल, दीधित मनोहारी ॥ ३ ॥ सुरवधू नरवधू मलि
मलि, जिन गुण गण गाती ॥ त्नक्ति करे गुणवंतनी, मि
थ्या अघ घाती ॥ ४ ॥ मल्लि जिणंद पद पद्मनी ए, नि
त्य सेवा करे जेह ॥ रूपविजय पद संपदा, निश्चय पामे
तेह ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ हवे थोय जोडा बे कहे वे ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोडो ॥

॥ सुण सुण रे साहेली, उठी सहुथी पहेली ॥ करी

ज्ञान वेहेली, जिम वधे पुण्य वेली ॥ तजी मोहनी प-
ल्ली, खंड करी काम वल्ली ॥ करी ज्ञक्ति सुज्ञल्ली, पूजी
जिनदेव मल्ली ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह नि-
द्रा निवारी ॥ ज्ञविजिन निस्तारी, वाणी स्याद्वाद धा-
री ॥ निर्मल गुण कारी, धौतमिथ्यातगारी ॥ नमिये नर
नारी, पाप संताप ठारी ॥ २ ॥ मृगशिर अजुआली, स
र्व तिथीमां रसाली ॥ एकादशी पाली, पापनी श्रेणी
गाली ॥ आगममां रसाली, तिथि कही ते संज्ञाली ॥
शिववधू लटकाली, परणश्ये देइ ताली ॥ ३ ॥ वैरुट्या
देवी, ज्ञक्ति हियडे धरेवी ॥ जिन ज्ञक्ति करेवी, तेहना
दुःख हरेवी ॥ मन महिर करेवी, लच्छी लीला वरेवी ॥
कवि रूप कहेवी, देजो सुख नित्य मेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो बीजो जोडो ॥

॥ मिथुलापुरी जाणी, स्वर्ग नगरी समाणी ॥ कुंज्ञ
नृप गुण खाणी ॥ तेजथी वज्र पाणी ॥ प्रज्ञावती राणी,
देवनारी समाणी ॥ तस कुख्ख वखाणी, जन्म्या जिहां
मल्लि नाणी ॥ १ ॥ दिशि कुमरी आवे, जन्म करणी ठ
रावे ॥ जिनना गुण गावे, ज्ञावना चित्त ज्ञावे ॥ जन्मो-

त्सव दावे, इंद्र सुर शैल गावे ॥ हरि जिन गृह आवे, लेइ प्रभु मेरु जावे ॥ २ ॥ अच्युत सुर राजा, स्नात्र करे भक्ति भाजा ॥ निज निज स्थिति आजा, पूजे जिन भक्ति ताजा ॥ निज चढता दिवाजा, सूत्र मर्याद भाजा ॥ समकित करी साजा ॥ भोगवे सुख माजा ॥ ३ ॥ सुरवधू मली रंगे, गाय गुण बहु उमंगे ॥ जिन लइ उछरंगे, गोदें थापे उमंगे ॥ जिनपतिने संगे, भक्ति रंग प्रसंगे ॥ संघ भक्ति तरंगे, पामे लक्षी अभंगे ॥ ४ ॥

॥ इति स्तुति ॥ ए थोयोना बे जोडा कह्या ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारो पीयुडो परघर जाय, सखी शुं कहिये रे ॥ किम एकलडां रहेवाय, वियोगे मरिये रे ॥ ए देशी ॥ मिथिला ते नयरी दीपति रे, कुंभ नृपति कुलहंस ॥ मल्लि जिणंद सोहामणो रे, सयल देव अवतंस ॥ १ ॥ सखि सुण कहिये रे, म्हारो जिनजी मोहन वेली, हयडे वहिये रे ॥ ए आंकणी ॥ छप्पन दिशि कुमरी मली रे, करती जन्मनां काज ॥ हे जाली हरखे करो रे, हुलरावे जिनराज ॥ सखी० ॥ २ ॥ म्हारो० ॥ वीण वजावे

वालही रे, लली लली जिन गुण गाय ॥ चिरंजीवो ए बालुडो रे, जिम कंचनगिरि राय ॥ सखी० ॥ ३ ॥ महा० ॥ केइ करमां वींजण ग्रही रे, वींजे हरखे वाय ॥ चतुरा चामर ढालती रे, सुरवधू मन मकलाय॥सखी०॥ ॥ ४ ॥ महा० ॥ नाचे साचे प्रेमथी रे, राचे माचे चित्त ॥ जाचे समकित शुद्धता रे, भवजल तरण निमित्त ॥ ॥स० ॥ ५ ॥ म० ॥ उर शिरस्कंध उपर रे, सुरवधू होडा होडी ॥ जगत तिलक भाले धरी रे, करती मोडा मोडी ॥ स० ॥ ६ ॥ महा० ॥ तव सुरपति सुर गिरि शिरे रे, नमन करे कर जोडी ॥ तीर्थोदक कुंभा भरी रे, साठ लाख एक कोडि ॥ स० ॥ ७ ॥ म० ॥ जिन जननी पासे ठवीरे, वरसी रयणनी राशि ॥ सुरपति नंदीश्वर गया रे, धरतां मन उल्लास ॥ स० ॥ ८ ॥ म० ॥ सुरपति नरपति ये कर्यो रे, जन्म उत्सव अति चंग ॥ मल्लि जिणंद पद पद्म शुं रे, रूपविजय धरे रंग ॥ स० ॥ ९ ॥ म० ॥

॥ इति द्वितीय जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ तृतीय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भुत रूप सुगंधि सुवास, नहीं रोग विकार ॥

मेल नही जस देह रेह, परस्वेद लगार ॥ १ ॥ सागर वर गंजीर धीर, सुरगिरि सम जेहा ॥ औषधिपति सम सौम्य कांति, वर गुण गण गेह ॥ २ ॥ सहस अष्टोत्तर लक्षणें ए, लक्षित जिनवर देह ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, न रहे पापनी रेह ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ शिवसाथ, आथ वर अक्षयदायी ॥ गाजे त्रिजुवन मांहि, अधिक प्रजुनी ठकुराइ ॥ १ ॥ अनुत्तर सुरथी अनंत गुण, तनु शोजा गाजे ॥ आहार नीहार अदृश जास, वर अतिशय राजे ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एकादशी ए, लीये दिक्षा जिनराज ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय मल्लि जिणंद देव, सेवा सुरपति सारे ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, संयम अवधारे ॥ १ ॥ अज्यंतर परिवारमें, संयति त्रणशें जास ॥ त्रणशें षटनर संयमें, साथे व्रत लीए खास ॥ २ ॥ देव डुस्य खंधे धरि ए, विचरे जिनवर देव ॥ तस पद पद्मनी सेवना, रूप कहे नित्यमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोमो ॥

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जिम लहो सुख वृंदा ॥ द-
लि ङुरगति दंमा, फेरि संसार फंदा ॥ पदयुग अरविं-
दा, सेवियें थइ अमंदा ॥ जिम शिव सुखकंदा, विस्तरे
ढंकि दंमा ॥ १ ॥ जिनवर जयकारी, विश्व नव्योपगारी ॥
करे जब व्रत त्यारी, ज्ञान त्रीजे निहारी ॥ तव सुर अ-
धिकारी, वीनवे नक्ति धारी ॥ वरो संयम नारी, परि-
ग्रहारंन गारी ॥ २ ॥ मन पज्जव नाणी, हुआ चारित्र
खाणी ॥ सुरनर इंद्राणी, वंदे बहु नाव आणी ॥ ते जि
ननी वाणी, सूत्रमांहिं लखाणी ॥ आदरे जेह प्राणी, ते
वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ पारणुं जस गेहे, नाथ करे जइ
स्वदेहें ॥ नरे कंचन मेहे, ढंक तस देव नेहे ॥ संघ ङु
रित हरेहिं, देव देवी वरेहिं ॥ कुबेर सुरेहिं, रूपविजय
प्रदेहिं ॥ ४ ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ मल्लि जिन नामे, संपदा कोमि पामे ॥ ङुरगति
ङुःख वामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ संयम अनिरामे, जे
यथाख्यात नामे ॥ करी कर्म विरामे, जइ वसें सिद्धि

धामे ॥ १ ॥ पंच जरह मझार, पंच ऐरवत्त सार ॥ त्रिहुं काल विचार, नेवुं जिननां उदार ॥ कल्याणक उदार, जाप जपिये श्रीकार ॥ जिम करी जवपार, जइ वरो सिद्धिनार ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, सूत्रमांहे गुंथाणी ॥ षटद्रव्य वखाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ सग्ग जंगी प्रमाणी, सप्त नयथी ठराणी ॥ सांजले दिल आणी, ते वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, मल्लि जिन पाय सेवी ॥ प्रजुगुण समरेवी, जक्ति हियडे धरेवी ॥ संघ डुरित हरेवी, पाप संताप खेवी ॥ रूपविजय कहेवी, लब्धी लीला वरेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सखी आवी देव दीवाली रे ॥ ए देशी ॥ पंचम सुर लोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे, करे विनति गुणनी राशी ॥ १ ॥ मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे, जवि जीवने शिव सुख दीजे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ तुमे करुणा रस जंडार रे, पाम्या बो जवज- ल पार रे, सेवकनो करो उद्धार ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ ज० ॥ प्रजु दान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र डुःख

कापे रे, जव्यत्वपणे तस थापे ॥ म० ॥ ३ ॥ ज० ॥ सुर पति सघला मलि आवे रे, मणिरयण सोवन वरसावे रे, प्रजु चरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ जवि० ॥ तीर्थोदक कुंजा लावे रे, प्रजुने सिंहासन गवे रे, सुरपति जक्तें नवरावे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ जवि० ॥ वस्त्राजरणे शणगारे रे, फूलमाला हृदयपर धारे रे, डुःखमां इंद्राणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ जवि० ॥ मल्या सुर नर कोडा कोडी रे, प्रजु आगे रह्या कर जोडी रे, करे जक्ति युक्ति मद मोडी ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ जवि० ॥ मृगशिर शुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे, वस्या संयम वधू लटकाली ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥ जवि० ॥ दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां डुःख न रहे रेह रे, लहे रूप विजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ जवि० ॥ इति श्री मल्लिजिन स्तवनम् ॥ इति त्रीजो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ चोथो जोडो प्रारंजः ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन त्रण कहे छे ॥

॥ वैदर्जदेश मिथिलापुरी, कुंज नृपति कुखजाण ॥ पुण्य वल्ली मल्लि नमो, जवियण सुहजाण ॥ १ ॥ पण-

वीश धनुषनी देहडी, नीलवरण मनोहार ॥ कुंज लंछन कुंजनी परे, उतारे जव पार ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एका दशीये, पाम्या पंचम नाण ॥ तस पद पद्म वंदन करी, पामो शाश्वत ठाण ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ पहेलुं चोथुं पांचमुं, चारित्र चित्त लावे ॥ क्षपक श्रेणी जिनजी चढी, घाति कर्म खपावे ॥ १ ॥ दीक्षा दिन शुभ जावथी, उपन्युं केवलनाण ॥ समवसरण सुरवर रचे, चउविह संघ मंडाण ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तस पद पद्म नम्याथकी, चिद्रूपे चित्त ठाय ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय निर्जित मदमल्ल, शल्य त्रय वर्जित स्वामी ॥ जय निर्जित कंदर्प दर्प, निज आतमरामी ॥ १ ॥ दुर्जय घाति कर्म मर्म, जंजन वरूवीर ॥ निर्मल गुण संसार सार, सागरवर गंजीर ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन धरुए, मल्लि जिणंद मुणिंद ॥ वदन पद्म तस देखतां, लहे चिद्रूप अमंद ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे लिख्यते

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जास नमे देववृंदा ॥ तिम चोशठ इंदा, सेवे पादारविंदा ॥ डुरगति डुःख दंदा, नामथी सुखकंदा ॥ प्रज्ञु सुजस सुरिंदा, गाय जक्तें नरिंदा ॥ १ ॥ नवति जिनराय, शुक्लध्यानें सुहाया ॥ सोहंपद पाया, त्यक्त मद मोह माया ॥ सुरनर गुण गाया, केवल श्री सुहाया ॥ ते सवि जिनराया, आपजो मोक्ष माया ॥ २ ॥ केवल वरनाणे, त्रिभ्वना जाव जाणे ॥ बार परषद ठाणे, धर्म जिनजी वखाणे ॥ गणधर तिणे टाणे, त्रिपदीयें अर्थ माणे ॥ जे रहे सुहझाणे, तेरमे आत्मनाणे ॥ ३ ॥ वैरुव्या देवी, जक्ति हैयडे धरेवी ॥ जिनसेव करेवी, विघ्ननां वृंद खेवी ॥ संघ डुरित हरेवी, लछी लीला वरेवी ॥ रूप विजय कहेवी, आपजो मोज देवी ॥४॥

॥ अथ द्वितीय स्तुति ॥

॥ मल्लि जिनराजा, सेवीयें पुण्य जाजा ॥ जिम चढत दीवाजा, पामियें सुखताजा ॥ कोइ लोपे न माजा, नित्य नवा सुख साजा ॥ कोइ न करे जाजा, पुण्यनी एह माजा ॥ १ ॥ मल्लि नमी नामे, केवल

ज्ञान पामे ॥ दशखेत्र सुठामें तिमज जिन बिम्ब नामें ॥ त्रण्य काल निमामें, घातियां कर्म वामे ॥ ते जिन परिणामे, जइ वसे सिद्धि धामें ॥ २ ॥ जिन वरनी वाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ नवतत्त्व वखाणी, द्रव्य षटमां प्रमाणी ॥ गणधरें गुंथाणी, सांजले जेह प्राणी ॥ करी कर्मनी हाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ सुर कुबेर आवे, शीश जिनने नमावे ॥ मिथ्यात खपावे, शुद्ध सम्यक्त्व पावे ॥ पुण्य थोक जमावे, संघ जक्ति प्रजावे ॥ पद्म विजय सुहावे, शिष्य तस रूप गावे ॥ ४ ॥ इति स्तुतिः ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सांजल रे तुं सजनी मारी, रजनी किहां रमी आवीजी रे ॥ ए देशी ॥ मल्लि जिनेश्वर अरचित केशर, अलवेसर अविनाशी जी ॥ परमेश्वर पूरण पदजोक्ता, गुणराशी शिव वासी ॥ जिनजी ध्यावो जी ॥ १ ॥ मल्लि जिणंद मुणिंद गुण गावोजी ॥ ए आंकणी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी दिवसें, उपन्युं केवल नाणजी ॥ लोकालोक प्रकाशक जासक,

प्रगट्यो अभिनव भाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मल्लि० ॥ म त्यादिक चउनाणनुं भासन, एहमां सकल समाय जी ॥ ग्रह उडु तारा चंद प्रभा जिम, तरणी तेजमां जाय ॥ जिन० ॥ ३ ॥ म० ॥ ज्ञेय भाव सवि ज्ञा ने जाणे, जे सामान्य विशेष जी ॥ आप स्वभावें रमण करे प्रभु, तजी पुद्गल संकलेश ॥ जिन० ॥ ॥ ४ ॥ म० ॥ चालीश सहस मुनि जेहना, रत्नत्रय आधार जी ॥ सहस पंचावन साहुणी जाणो, गुण मणि रयण भंमार ॥ जि० ॥ ५ ॥ म० ॥ शत सम न्यून सहस पंचावन, वरस केवल गुण धरता जी ॥ विचरे वसुधा उपरे जिनजी, बहु उपगारने करता ॥ ॥ जि० ॥ ६ ॥ म० ॥ केवलनाण कल्याणक जिननुं, जे भवियण नित्य गावे जी ॥ जिन उत्तम पद पद्म प्रभावें, सूधुं रूप ते पावे ॥ जिन० ॥ ७ ॥ म० ॥ इति स्तवनं ॥ इति चोथो देववंदन जोमो संपूर्ण.

॥ अथ पांचमो जोडो लिख्यते

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुरासुर इंद वृंदा, भावें कर जोमी ॥

सेवे पदपंकज सदा, जघन्यथकी एक कोडी ॥ १ ॥ जास ध्यान एकतान करे, जे सुरनर भावें ॥ संकट कष्ट दूरे टले, शुचि संपद पावे ॥ २ ॥ सर्व समिहित पूरवाए, सुरतरु सम सोहाय ॥ तस पद पद्म पूज्याथकी, निश्चय शिव सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नमो नमो श्रीनमि जिनवरु, जगनाथ नगीनो ॥ पदयुग प्रेमें जेहना, पूजे पति शचिनो ॥ १ ॥ सिंहासन आसन करी, जग भासन जिन राज ॥ मधुर ध्वनि दीये देशना, भविजनने हित काज ॥ २ ॥ गुण पांत्रीश अलंकरीए, प्रभु मुख पद्मनी वाणी ॥ ते नमी जिननी सांभली, शुद्ध रूप लहे प्राणी ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल मंगल केली कमला, मंदिरं गुण सुंदरं ॥ वर कनक वर्ण सुवर्ण पति जस, चरण सेवे मनहरं ॥ अमरावती सम नयरी मिथिला, राज्य भार धुरा धरं ॥ प्रणमामि श्री नमिनाथ जिनवर, चरण पंकज सुखकरं ॥ १ ॥ गज वाजी स्यंदन देश पुर धन, त्याग करी त्रि-

भुवन धणी ॥ त्रणशें अठ्याशी कोडी उपर, दीए लख ऐंशी गणी ॥ दिनार जननी जनक नामांकित, दीये इच्छित जिनवरं ॥ प्रण० ॥ २ ॥ सहस्राम्रवनमां सहस नरयुत, सौम्य भाव समाचरे ॥ नरक्षेत्र संज्ञी भाव वेदी, ज्ञान मनः पर्यव वरे ॥ अप्रमत्त भावे घाति चक्र-खय, लहे केवल दिनकरं ॥ प्रण० ॥ ३ ॥ तव सकल सुरपति भक्ति नति करी, तीर्थपति गुण उच्चरे ॥ जय जगत जंतु जात करुणा, वंत तुं त्रिभुवन शिरे ॥ जय अकल अचल अनंत अनुपम, भव्य जन मन भय हरं ॥ ॥ प्रण० ॥ ४ ॥ सत्त दश जस गणधरा मुनि, सहस विंशति गुणनीला ॥ सहस एकतालीश साहुणी, सो-लशें केवली भला ॥ जिनराज उत्तम पद्मनी परें, रूप विजय सुहंकरं ॥ प्रण० ॥ ५ ॥

इति तृतीय चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

श्री नमी जिन नमीये, पाप संताप गमीये ॥ जिन तत्वमां रमीये, सर्व अज्ञान वमीये ॥ सवि विघ्नने द-मीयें, वर्तिए पंच समीयें ॥ नवि भववन भमीयें, नाथ

आणा न क्रमीयें ॥ १ ॥ दशे खेत्रना इश, तीर्थपति जेह त्रीश ॥ त्रिहुं काल गणीश, नेवुं जिनवर नमीश ॥ अर्हं ते पद त्रीश, साठ दीक्षा जपीश ॥ केवली जगदीश, साठ संख्या गणीश ॥ २ ॥ सग नय युत वाणी, द्रव्य छक्कें गवाणी ॥ सग ज्ञंगी ठराणी ॥ नवतत्त्वे वखाणी ॥ जे सुणे ज्ञवि प्राणी, शुद्ध श्रद्धा न आणी ॥ ते वरे शिवराणी, शाश्वतानंद खाणी ॥ ३ ॥ देवी गंधारी, शुद्ध सम्यकत्व धारी ॥ प्रज्ञु सेवा कारी, संघ चकविह संज्ञारी ॥ करे सेवना सारी, विघ्न दूरें विदारी ॥ रूप विजयने प्यारी, नित्य देवी गंधारी ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ नमि जिन जयकारी, सेविये ज्ञक्ति धारी ॥ मिथ्यात्वनी वारी, धारीयें आण सारी ॥ परज्ञाव विसारी, सेवियें सुखकारी ॥ जिम लहो शिव नारी, कर्म मल दूरें डारी ॥ १ ॥ वर केवलनाणी, विश्वना ज्ञाव जाणी ॥ शुचि गुण गण खाणी, शुद्ध सत्ता प्रमाणी ॥ त्रिज्ञुवनमां गवाणी, कीर्ति कांता वखाणी ॥ ते जिन ज्ञवि

प्राणी, वंदीयें नाव आणी ॥ २ ॥ आगमनी वाणी, सात नयथी वखाणी ॥ नव तत्त्व ठराणी, द्रव्य षट्मां प्रमाणी ॥ सग नंग नराणी, चार अनुयोगें जाणी ॥ धन्य तास कमाणी, जे नणे नाव आणी ॥ ३ ॥ एकादशी सारी, मृगशीर्षे विचारी ॥ करे जे नरनारी, शुद्ध सम्यकत्व धारी ॥ तस विघ्न विदारी, देवी गंधारी सारी ॥ रूप विजयने नारी, आपजो लच्छी प्यारी ॥ ४ ॥

॥ इति द्वितिय स्तुति जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ इण सरवरी यारी पाल, ऊनी दोय नागरी ललना ॥ ए देशी ॥ परम रूप निरंजन, जनमन रंजणो ॥ ललना ॥ नक्ति वछल नगवंत, तुं नव नय नंजणो ॥ ल० ॥ जगत जंतु हित कारक, तारक जग धणी ॥ ल० ॥ तुज पद पंकज सेव, हेव मुजने घणी ॥ ॥ ल० ॥१॥ आव्यो राज हजूर, पूरव नगति नरें ॥ल०॥ आपो सेवना आप, पाप जिम सवि टले ॥ल०॥ तुम सरिखा माहाराज, मेहेर जो नवि करे ॥ल०॥ तो अम सरिखा जीवना, कारज किम सरे ॥ ल० ॥२॥ जग तारक जिन

राज बिरुद छे तुम तणा ॥ ल० ॥ आपो समकित दान, प राया मत गणो ॥ ल० ॥ समरथ जाणी देव, सेवना में करी ॥ ल० ॥ तुंहिज छे समरथ, तरण तारण तरी ॥ ॥ ल० ॥ ३ ॥ मृगशिर सित एकादशी, ध्यान शुक्ल धरी ॥ल०॥ घाति करम करी अंतके, केवल श्री वरी ॥ल०॥ जग निस्तारण कारण, तीरथ थापीयो ॥ ल० ॥ आतम सत्ता धर्म, भव्यने आपीयो ॥ ल० ॥ ४॥ अम वेला किम आज, विलंब करी रह्या ॥ ल० ॥ जाणो छो माहाराज, सेवके चरणां ग्रह्यां ॥ ल० ॥ मन मान्या विना माहरूं, नवि छोडुं कदा ॥ ल० ॥ साचो सेवक तेह जे, सेव करे सदा ॥ ल० ॥ ५ ॥ वप्रा मात सुजात, कहावो श्युं घणुं ॥ ल० ॥ आपो चिदानंद दान, जन्म सफलो गणुं ॥ ल० ॥ जिन उत्तम पद पद्म, विजय पद दीजीए ॥ ल० ॥ रूपविजय कहे साहिब, मुजरो लीजीए ॥ ल० ॥ ६ ॥ इति श्री नमीनाथ जिन स्तवनं ॥ पछी नमुथ्थुणं कही जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥

इति पंडित्श्री रूप विजयजी कृत मौन
एकादशीना देववंदन समाप्त.

॥ अथ श्री ज्ञानविमलसूरि कृत मौन एकादशीना देववंदन लिख्यते ॥

॥ एनो विधि प्रथमना देववंदन प्रमाणे सर्व इहां पण जाणी लेवो ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ सयल संपत्ति सयल संपत्ति तणो दातार ॥ श्री अरनाथ जिनेसरू, शुद्ध दरिसण जेह आपे ॥ नृप सुदर्शन नंदनो, कठिन कर्म वन वेली कापे ॥ एहीज चक्री सातमो, अढार समो जिन एह ॥ ज्ञान विमल सुख सुजसनो, वर गुण मणिनो गेह ॥ १ ॥

॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ कल्पतरुवर कल्पतरुवर, आज मुज बार ॥ फल दल संयुत प्रगटिउ, काम कुंभ शुभ सुरवेली पाइ ॥ चिंतामणि करतलें चढिउं, कामधेनु घर आज आइ ॥ दोष अढार रहित प्रभु दीठो, सवि सुखकार ॥ ज्ञान विमल अरजिन तणा, गुण अनंत अपार ॥ १ ॥

॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

एह तारक एह तारक, अछे जगमांहि ॥ अरजिन सरखो को नही, नविक लोकने ग्रहे बांहिं ॥ जे छे चक्री सातमो, लहि दोय पदवी उछाहे ॥ अगार समोए जिनवरु ए, ज्ञानविमल घणुं नूर ॥ आरो नवनो ए दीए, नामें सुख नरपूर ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ अरनाथ सनाथ करो स्वामी, में तुम सेवा पुण्यें पामी ॥ करुं विनति ललि ललि शिर नामी, आपो अविचल सुखनो कामी ॥ १ ॥ जिनराज सवे पर उपगारी, जिणे नवनी नावठ सवि वारी ॥ ते प्रणमो सहु ए नर नारी, चित्तमांहि शंका सवि वारी ॥ २ ॥ आगम अति अगम ए छे दरीयो, बहु नय प्रमाण रयणे नरीयो ॥ तेहने जे आवी अनुसरियो, ते नवि नव संकट निस्तरियो ॥ ३ ॥ श्री शासन सुर रखवालिका, करे नित्य नित्य मंगलमालिका ॥ श्री ज्ञानविमल प्रनु नाम जपे, ते दिन दिन तरणी पेरें तपे ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अरजिन आराधो, संयम मार्ग साधो ॥ मनुज जन्म लाधो, काम क्रोध नवि बांधो ॥ चउगति दुःख दाधो, न होये तस मोह गाधो ॥ सुख संपत्ति वाधो, मोह मिथ्या न बांधो ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, वि श्व विश्वोपकारी ॥ त्रण जिन चक्र धारी, शांति कुंथु अर जितारी ॥ मद मदन निवारी, वंदीयें पुण्यधारी ॥ नमो सवि नरनारी, दुख कर्मारि वारी ॥ २ ॥ सकल नय तरंगा, नैगमानेक भंगा ॥ जिहां छे बहु रंगा, जेह एकादशांगा ॥ वली दश दोय अंगा, जैन वाणी सुचं गा ॥ भव दव सम गंगा, सांभलो थइ सुचंगा ॥ ३ ॥ जिन चरण उपासे, जक्खणी धरणी पासे ॥ जक्षेंद स-हवासे, नामथी दुःख नासे ॥ ज्ञान विमल प्रकासे, बोध वासे सुवासे ॥ अरि सकल निकासे, होय संपूर्ण आसे ॥ ४ ॥ इति अरजिन स्तुति जोमा बे संपूर्ण ॥ हवे स्तवन कहेवुं ते लखियें छैयें.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ आदर

करीने अहोनिश सेवो, श्री अरनाथ जिणंदजी ॥ अ नुपम फल दीए दरिसण जेहनुं, केवल नाण दिणंद जी ॥ १ ॥ आ० ॥ पापस्थान अढार निवारी, रथ शी लांगने धारीजी ॥ किरिया विधिजोगें देखाडे, एहवा सहस अढारजी ॥ २ ॥ आ० ॥ गजपुर राय सुदर्शन नृपति, देवी राणी नंदाजी ॥ रेवती रिख मागशिर शुदि दशमी, दिने जाया सुखकंदाजी ॥ ३ ॥ आ० ॥ अनुक्रमें चक्री थइ मागशिर शुदि, एकादशी दिने दीक्षाजी ॥ विजया शिबिका सहसनर छठ तप, पा छल प्रहरें शिक्षाजी ॥ ४ ॥ आ० ॥ मीनराशि नंदावर्त लंछन, त्रीश धनुष तणुं कणगाजी ॥ आयु चोराशी वरस सहसनुं, केवल लही शिव संगाजी ॥ ५ ॥ आ० ॥ तेत्रीश गणी गणधर जश जाणो, मुनिवर सहस पचासजी ॥ साठ सहस सुखदायी साहुणी, पूरे वंछित आसजी ॥ ६ ॥ आ० ॥ जेह अबंभ अढार निवारी, दाखे शिवपद पंथाजी ॥ ज्ञानविमल गुण पामे अहोनिश, जे निश्चय निर्ग्रंथाजी ॥७॥ आ० ॥ इति श्री अरनाथजिन स्तवन ॥

॥ इति प्रथम देववंदन जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय जोडो प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ रयण राशीपरें जे गंभीर, मंदर गिरि धीर ॥ विधु मंडल परें निर्मला, जिम शारद नीर ॥ राग दोष दूषित नहीं, नही भवभय जेहने ॥ गुण अनंत भगवंत ते, प्रणमुं हुं तेहने ॥ ज्ञानविमल गुण जेहना ए, कहेतां नावे पार ॥ मल्लि जिनेश्वर प्रणमतां, लहीये भवजल पार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर जस पर्षदा, कन्या त्रण शतनी ॥ बाह्य पर्षदा जाणीयें, नृपसुत त्रण शतनी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, दीने संयम लेवे ॥ सकल सुरासुर तिहां मली, जिनना पद सेवे ॥ दीक्षा समयथी ऊपजे ए, तिम महा पज्जव नाण ॥ मल्लिनाथ केवल लहे, ज्ञान विमल सहु जाण ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लि जिनवर मल्लि जिनवर, सयल सुख हे तें

नेश्वर देव, सारे सुरनर सेव, आजहो जेहनो रे महिमा महिमांहे गाजतोजी ॥ १ ॥ नील वरण जस काय, पणवीश धनुषनी काय, आज हो आयुरे पंचावन वरस सहस्सनुंजी ॥ २ ॥ कुंन्न नरेसर तात, प्रन्नावती जस मात, आजहो दीठेरे आनंदित होये त्रिज्जुवन जनाजी ॥ ३ ॥ लंछन मीसी रह्यो कुंन्न, तारक गुणथी अदंन्न, आजहो एहवा रे गुण वसीया आवी तेहमां जी ॥ ४ ॥ ज्ञान विमल गुण नूर, वाधे अति महपूर, आजहो पावेरे मनोवांछित प्रज्जुना नामथीजी ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रीजो जोडो लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ जयो जिनवर जयो जिनवर, जीयलोय जस पसस्यो ॥ दह दिसि घणो दूध सिंधुवर फेण पुंमर, लोकिक देव तणो जिणे ॥ खय कीध पाखंम कंबर, अंबर मणि जिम ऊल हले ए ॥ दिन दिन अधिक प्रताप ज्ञान विमल प्रज्जु मल्लि जिन, ध्याने नासे पाप ॥ १ ॥

॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ बुद्धि थोकिय बुद्धि थोकिय जिनमुखें, एक म
हिमा जस महिमंफले, जलधि जेम गुरु गुहिर गाजे ॥
त्रिभुवनमां उपमानको, तुम्ह समान जे वस्तु ढाजे ॥
ज्ञानविमल गुण प्रभु तणा, जांखी शके कहो कोय ॥
जाणे पण न कही शके, अक्षय ज्ञान जो होय ॥
॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लि जिनवर मल्लि जिनवर, जविक सुखदाय ॥
मिथिला नयरी ऊपना, कुंजराय कुल कमल हंसा ॥
कुंज लंबन ओगणीशमा, प्रजावती कूखें सर राज
हंसा ॥ त्रण कल्याणक जेहना ए, जनम चरणनें नाण ॥
मृगशिर शुदि एकादशीए, ज्ञानविमल गुण खाण ॥
॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ सुणो विनतफी मल्लिनाथजी, तुं मलियो मुग
तिनो साथजी ॥ मन मलीयुं तुजशुं निर्मलुं, ते कहीयें
न होजो वेगलुं ॥ १ ॥ सित्तरी सो जिनवर वंदियें, जव

संयम गुण धारी थया, नृप मित्र षट् बोधि आपे ॥ कंचनमय करी पूतली, पूर्व प्रेम संकेत थापे ॥ माया तप परज्नावथी ए, पाम्या स्त्रीनो वेद ॥ ज्ञानविमल गुणथी थया, अचल अरूप अवेद ॥ ३ ॥

॥ इति श्री मल्लिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय जोडा बे ॥

॥ मन मोहन मल्लि जिणंदजी, जयो कुंज्न नरेसर नंदजी ॥ ऊपगारी जिन ओगणीशमो, म्हारे मन अहोनिश ते रम्यो ॥ १ ॥ ऋषज्नादिक चउवीश जिनवरा, जे वरते ठे ज्नवि सुखकरा ॥ वली केवलज्ञान दिवाकरा, ते वंदे सुरवर नरवरा ॥ २ ॥ मल्लि जिनवर दीये देशना, सुणे ज्नविजन बहु विध देशना ॥ दृष्टिवाद महाश्रुत वंदीए, जिम पातक दूर निकंदीए ॥ ३ ॥ कुबेर देव सान्निध्य करे, वैराट्या सवि संकट हरे ॥ वाणी सुणवा मन खंतडी, ज्ञानविमल तणी सोहामणी ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिनेसर वाने लीला, दीयो मुज समकित

लीलाजी ॥ अण परणे जिणे संयम लीधो, सूधा संयम सीलाजी ॥ ते नर जवमां पशु परें जाणो, जे करे तुम अव हीलाजी ॥ तुम पद पंकज सेवाथी होय, बोधि बीज वसीलाजी ॥ १ ॥ अष्टापद गिरि ऋषज जिनेश्वर, शिवपद पाम्या सारजी ॥ वासुपूज्य चंपाए यदुपति, शिव पाम्या गिरनारजी ॥ तिम अपापा पुरी शिव पोहोता, वर्द्धमान जिनरायजी ॥ वीश समेत शिखर गिरि सीधा, इम जिन चउवीश थायजी ॥ २ ॥ जिव अजिव पुण्य पापने आश्रव, बंध संवर निर्जरणाजी ॥ मोक्ष तत्त्व नव इणी परें जाणो, वली षट्द्रव्य विवरणाजी ॥ धर्म अधर्म नजकालने पुद्गल, एह अजीव विचारोजी ॥ जीव सहित षटद्रव्य प्रकाश्यां, ते आगम चित्त धारोजी ॥ ३ ॥ विद्या देवी शोल कहीजें, शासन सुरसुरी लीजेजी ॥ लोकपाल इंद्रादिक सघला, समकितदृष्टि जणीजेंजी ॥ ज्ञानविमल प्रजु शासन जक्ता, देखी जिनने रीनेजी ॥ बोध बीज शुद्ध वासन दृढता, तास विरह नवि कीजेंजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ लाछल दे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ मल्लि जि

संचित पाप निकंदीये ॥ त्रण काल नमुं धरी नेहशुं, भव भव मन बांधुं जेहशुं ॥ २ ॥ जिहां पंचकल्याणक जिनतणां, जिनराज सयलनां जिहां भण्यां ॥ ते आगम अति भलट धरी, सुणियें सवि कपट निराकरी ॥ ॥ ३ ॥ समकित दृष्टि ऊति पालिका, जिन शासननी रखवालिका ॥ जिन धर्मे नित्य दीपालिका, ज्ञानविमल महोदय मालिका ॥ ४ ॥ इति प्रथम जोमो समाप्त ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ नमुं जिनवर मल्लि, जेहथी बोधी वली ॥ बहु विध गुण फेली, जाणीए जैन शैली ॥ लहो मुगति व हेली, भाजीयें कर्म पल्ली ॥ भव भेदन भली, दुर्गति द्वार खीली ॥ १ ॥ रुचि जिनवर राजे, कर्म ना मर्म भाजे ॥ नमे सुरनर राजे, तिर्थनी ऋद्धि छाजे ॥ सजल जलद गाजे, दुंदुभी तेम वाजे ॥ सवि भवि हितकाजे, चार निक्षेपे राजे ॥ २ ॥ जिनवर वर वाणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ गणि मति गुणखाणी, पुण्यपीयूष पाणी ॥ भवि श्रवणें सुहाणी, भावशुं चित्त आणी ॥ लही तिणे शिवराणी, सार करी एह जाणी ॥ ३ ॥ जस यक्ष कुबेर,

सेव सारे सवेर ॥ करे डुश्मन जेर, न होय संसार फेर॥ शिव वधू तस हेरे, पुण्य संपत्ति पेरे ॥ लहे समकित सेरे, ज्ञानविमलादि केरे ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या ॥ ए देशी ॥ मृग शिर शुदि एकादशी, दिनें जायारे ॥ त्रिभुवन थयो रे उद्योत, सेवे सुर आया रे ॥ १ ॥ सुखीया थावर नारकी, शुभ छाया रे ॥ पवन थया अनुकूल, सुखाला वाया रे ॥ २ ॥ अनुक्रमें जोवन पामीया, सुणी आयारे ॥ पूरवना षट् मित्र, कह्यो समजायारे ॥ ३ ॥ शुदि एका दशीने दिने, व्रत पायारे ॥ तिणें दिने केवल नाण, लहे जिनराया रे ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल महिमाथकी, सुजस सवायारे ॥ मल्लि जिनेसर ध्यानें, नवनिधि पायारे ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥

॥ अथ चोथो जोडो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नमो मल्लि नमो मल्लिनाथ शिव साथ, हाथ

दीये भव बूडता ए ॥ अपार भव जलधि मांहे, पाप ताप व्यापे नही ॥ एह जिन सुर वृक्ष गाजे, सकल समीहित पूर्णो ॥ ओगणीशमो जिनराज, ज्ञानविमल प्रभु नामथी, सीधां सघलां काज ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नीलवाने नीलवाने जेह जिनराज, पण वीश धनुष तनु दीपतो ॥ इंद्रनील जिम रत्न सोहे ॥ त्रिगडे बेठा जिनवरु, कहे धर्म भवि चित्त मोहे ॥ ज्ञान विमल गुणथी थयो, लोका लोक प्रकाश ॥ मल्लि जिनवर प्रणमतां, पहोंचे मननी आश ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप, वंश इक्षाग खान त्याग निर्दंभ जे ॥ कुंभ भूप कुलें जे कुमारी, मयण महाभड भंजीयो ॥ वय तरुणपणे निर्विकारी, सारी संयम सिरि वरी ॥ ओगणीशमा जिन एह, मल्लिनाथ नामे थया ॥ ज्ञानविमल गुण गेह ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ मल्लि जिनवरशुं प्रीतडी, ते नेद रहित जुगति जमी ॥ अलगो न रहुं एक घडी, जिम जाती पटोलामां पमी ॥ १ ॥ सवि जिनवरना गुण माल तणी, कंठे आरोपो नविक गुणी ॥ शिवसुंदरी वरवा होंश करो, तो श्री जिन आणा शिर धरो ॥ २ ॥ उपदेश अनुपम जलधरू, वरसे नित्य मल्लि जिनवरू ॥ बोधि बीज सुनिक होय अति घणो, ए महिमा श्री जिनराज तणो ॥ ३ ॥ शासन वह्नल जे नविक जना, जिनधर्में जे बे एक मना ॥ तस सान्निध्य करजो सुरवरा, श्री ज्ञानविमल उद्योत करा ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो समाप्त ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ कुंन नरेस्वर घर जिन जाया, मल्लि नामें जिनवर राया, नील वरण जस बाया ॥ प्रनावती बे जेहनी माया, पणवीश धनु माने बे काया, कुंन लंबन सुख दाया ॥ पूरव तपनी प्रगटी माया, स्त्री रूपें ए अचरिज थाया, सकल सुरासरें गाया ॥ बालपणे सुख

कार कहेवाया, इंद्र इंद्राणी सवि मलि आया, मेरु शिखरें नवराया ॥ १ ॥ चोवीशें जिन संप्रति काले, प्रणमतां सवि पातक गाले, जविजनने प्रति पाले, जेह अनादि मिथ्यामतटाले, करतां समकित सुख सुगाले, नाठां डुष्कृत डुःकाले ॥ ग्रंथी नेद करी पंथ पखाले, आतम अनुजव शक्ति संजाले, पुण्य सरोवर पाले ॥ अनंत चोवीशी जिनवर माले, लोके चउ निक्षेप रसाले, प्रणमुं तेह त्रिकाले ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधि ग्रहे त्रण नाण, संयमथी मन पज्जव नाण, जिहां छद्मस्थ मंडाण ॥ पामे पंचम केवल नाण, जाणे उदयो अजिनव जाण, समवसरण गुण खाण ॥ तिहां तीर्थ थापे सुप्रमाण, अर्थ थकी जांखे प्रजुवाण, सरखी जोयण प्रमाण ॥ सूत्रे गुंथे गणधर जाण, नय निक्षेप गम जंग प्रमाण, समजे जे होय जाण ॥ ३ ॥ मल्लि जिनेश्वर महिमा पूरे, वैरोट्या सवि संकट चूरे, दिन दिन अधिक सनूरे॥ यक्ष कुबेर ते परता पूरे, जित तणां वली वाजे तूरे, नासे डुशमन दूरे ॥ प्रगटे ज्ञानविमलनो नूर, जाणे उग्यो अनुजव सूर, तेज प्रताप पडूर ॥ हर्षित हेजें होय हजूर, महिमादीक गुण सवि महमूर, श्रीजिन

ध्यान सनूर ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो समाप्त ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ जावरू समरा उङ्कार ॥ ए देशी ॥ श्री मल्लि जिनसार, अठ्ठवीश गणि गणधार ॥ सहस्स चालीश अणगार, पंचावन सहस साहुणी सार ॥ १ ॥ एक लाख सहस्र चोराशी, श्रावक समकित वासी ॥ त्रण लाख पांसठ सहस्र, श्राविका एह जगीश ॥ २ ॥ पण वीश धनु तनु मान, अणपरण्या व्रत ध्यान ॥ सहस्र पंचावन वरीस, आयु सकल गुण धरीश ॥ ३ ॥ कुबेर शासन देव, वैरोट्या करे सेव ॥ मास संलेषण कीध, काउस्सग्गें थया सिद्ध ॥ ४ ॥ जे जिनवरने आराधे, ज्ञानविमल सुख साधे ॥ एणी परें देव वांदीजें, मानव भव फल लीजे ॥ ५ इति ॥ मल्लिजिन स्तवन ॥

॥ इति चोथो जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचम जोडो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नमो नमि जिन नमो नमि जिन, सुगति दाता

र ॥ सोवन वाने सोहतो, सकल लोक जस सेवा सारे ॥ सुमति सुगतिनें आपतो, सकल कर्मना दोष वारे ॥ एकवीशमो जिन पूजीयें, जिम लहियें भव पार ॥ ज्ञानविमल सूरि एम भणे, ए प्रभु जगदाधार ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप गोत्र काश्यप, वंश इख्खाग ॥ श्री नमि जिननो जाणीयें, सयल लोय आणंद कारण ॥ अवनी तलमां उपन्या, मानुं तेह सवि भविक तारण ॥ कारण एहीज मुगतिनुं, श्री जिनवरनी सेव ॥ ज्ञानवि मल प्रभुता घणी, आय मले स्वयमेव ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ दुःख दोहग दुःख दोहग, जाय सवि दूर ॥ दुर्मति दुर्गति सुपनमां, तेह जननी पासें नावे ॥ जे श्री नमि जिननुं सदा, नाम ध्यान एकाग्र ध्यावे ॥ क- रुणा रसनो कूपलो, त्रिभुवननो आधार ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवतां, लहीयें लील अपार ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ नमीनाथ निरंजन देव तणी, सेवा चाहुं हुं निशिदिन घणी ॥ जसलंछन नील कमल सोहे, एक वीशमा जिनवर मन मोहे ॥ १ ॥ दोढशो कल्याणिक जिन तणां, दश क्षेत्रें एह सोहामणां ॥ मृगशिर एकादशी ऊजली, जिन सेवापुण्यें आवी मली ॥ २ ॥ एह अंग इग्यार आराधियें, ज्ञान नावें शिव सुख साधीयें ॥ आगम दिनकरकर विस्तरे, तो मोह तिमिरने अपहरे ॥ ३ ॥ समकित दृष्टि सुप्रभाविका, शासननी सान्निध्य कारिका, ॥ कहे ज्ञानविमल सूरी सरू, जगमांहे होजो जयकरू ॥ ४ ॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्रीनमीनाथ निरंजन देवा, कीजे तेहनी सेवा जी ॥ एह समान अवर नहिं दीसे, जिम मीठा बहु मेवाजी ॥ अहो निश आतम मांहि वसीया, जिम गजने मन रेवाजी ॥ आदर धरीने प्रभु तुम आणा, शिर धारुं नित्य सेवाजी ॥ १ ॥ चोत्रीश अतिशय पां त्रीश जाणो, वाणीना गुण छाजे जी ॥ आठ प्रातिहा

रज निरंतर, तेहने पासे विराजे जी ॥ जास विहारें दश दिशि केरा, ईति उपद्रव नाजे जी ॥ ते अरिहंत सकल गुण जरिया, वांछित देइ निवाजे जी ॥ २ ॥ मिथ्या मत तत दुष्ट जुजंगम, तेणे जे जन ऊशीया जी॥ आगमनागम ताप रीजाणो, तेहथी ने ते विष नसीयां जी ॥ श्रीजिन वयण सुणवाने हेतें, नवि मधुकर छे र सीया जी ॥ जाव गंजीर अनुपम जांख्या, धन ते जस चित्त वसीया जी ॥ ३ ॥ श्री नमी जिनवर शासन जा सन, ब्रकुटी यक्ष जयकारीजी ॥ परता पूरे संकट चूरे, वरदाई गंधारीजी ॥ ज्ञानविमल प्रजु आणा धारे, कुमति कदाग्रह वारी जी ॥ बोधि बीज वरु बीज त णीपरें, होजो मुज विस्तारो जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग काफी ॥ नमियें श्री नमिनाथने रे लाल, विजय नरेसर नंद मेरे प्यारे रे॥ अपराजितथी आवीयो रे लाल, विजय उरें अरविंद मेरे प्यारे रे ॥ १ ॥ नमि ये० ॥ मृगशिर शुदि एकादशी रे लाल, नक्षत्र अश्विनी सार मेरे प्यारे रे ॥ प्रथम प्रहर अठम

तपे रे लाल, बकुल तरुतलें सार मेरे प्यारे रे ॥ २ ॥ ॥ नमी० ॥ घातिकरम क्षय केवली रे लाल, सत्तर गण धर जास मेरे प्यारे रे ॥ वीश सहस मुनि साधवीरे लाल, सहस एकतालीश खास मेरे प्यारे रे ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रा वक एक लक्ष उपरें रे लाल, सत्तरी सहस्स उदार मेरे प्यारे रे ॥ त्रण लाख वर श्राविका रे लाल, अडतालीश हजार मेरे प्यारे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ पन्नर धनुष तनु जेहनुं रे लाल, दश सहस वरसनुं आय ॥ मे० ॥ नील कमल लंछन नमुं रे लाल, समेत गिरि सिद्ध थाय ॥ मे० ॥ ५ ॥ ॥ न० ॥ एकवीशमो जिन जाणीयें रे लाल, प्रणमतां पातक जाय ॥ मे० ॥ ज्ञानविमल प्रभु सान्निधि रे लाल, नामे नवनिधि थाय ॥ मे० ॥ ६ ॥ न० ॥ इति नमिजिन स्तवनं ॥ इति पांचमो जोडो समाप्त ॥

॥ हवे ए देववंदननो पाछलनो विधि कहे छे ॥ दिवसे मध्यान्ह समये काउस्सग्ग अगीयार लोगस्सनो करीये. पछी वेसीने अग्यार नवकार गणीये ॥ इति ॥ मौन एकादशी देववंदन श्री ज्ञानविमल सूरिकृत संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री दानविजयजीकृत एकादशी देववंदन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ सकल नयर शिणगार हार, गजपुर वर नयर ॥ राय सुदर्शन तास नारी, देवि जस अपछर ॥ तस कूखे अवतार लीध, त्रिहुं नवन वंदिता ॥ कुमरपणे एकत्रीश सहस, सुखे वरस व्यतीता ॥ तेतां वरस मंडलीकपणुं ए, पाले अखंडित आण ॥ ते अरजिन वर नामथी, दान लहे कल्याण ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चउराशी लख रथ तुरंग, गजराज उदार ॥ पायक छन्नु कोडि नूप, बत्रीश हजार ॥ चोशठ सहस अंतेउरी, पुर गाम अपार ॥ चउद रतन नवनिधि सहित, बहु ऋद्धि विस्तार ॥ एम चक्रीपणुं नोगवी ए, वरस सहस एकवीश ॥ सुमति दान दायक सदा, ते अर जिन जगदीश ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ आप ज्ञानथी अनुनवी, निज दीक्षा काल ॥

नगरादिक सवि परिहरी, परिग्रह जंजाल ॥ एक सह स वर पुरुष साथे, करी बहु अति मान ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, अश्विनी अभिराम ॥ लोच करी व्रत आदरे ए, चार जाम जस धर्म ॥ ते अर जिनवर मुज दीयो, दान सदाशिव शर्म ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री अर जिनवर गुण मणि मंदिर, सुंदर वदन सरूप जी ॥ राय सुदर्शनाम्रवंश प्रभाकर, कर पंकज अनुरूप जी ॥ नव निधि चउद रतन प्रमुख सवि, छोडी रुद्धि अनूपजी ॥ मृगशिर शुदि एकादशी दिवसे, आप थया मुनि रूपजी ॥ १ ॥ भोग्य करम बूटे निज ज्ञाने, निज व्रत काल विभावे जी ॥ नव लोकांतिक देव प्रभुने, दीक्षा समय जणावे जी ॥ दान संवत्सरी ये तव जाम, सहुनां दारिद्र समावे जी ॥ आदरे व्रत इण विधि ते जिनवर, हुं वंदुं मन भावेंजी ॥ ॥ २ ॥ सिद्ध नमी सामायिक उच्चरे, राग रोष मद वारेजी ॥ मनःपर्यव तव नाण उपजे, मनुज लोक वि

स्तारें जी ॥ जबलग रहे छद्मस्थपणे प्रभु, तप किरिया व्रत चारीजी ॥ जिन स्वरूप जिहां इणविधि भाख्युं, ते आगम सुखकारी जी ॥ ३ ॥ व्यंतर भवनपतिने जोइष, वैमानिक सुररायजी ॥ दीक्षा उत्सव एम करी जिननो, पुण्य भंडार भराय जी ॥ नंदीश्वर करी यात्रा अनुपम, सुरलोके जाय जी ॥ ते देवा सेवा करे जिननी, दान सदा सुख दायजी ॥४॥ इति प्रथम थोय जोडो॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

अरजिन सुखकारी, सातमो चक्र धारी ॥ मद म दन विदारी, मान मातंगवारी ॥ अशुभ तम निकारी, दुष्ट कर्मारि हारी ॥ व्रत विपिन विहारी, पुण्य वि स्तार कारी ॥ १ ॥ जस यश जगे गाजे, मोहनो जोर भांजे ॥ सुरनर मुनिराजे, जे थुण्या बहु दिवाजे ॥ सु गति सुख निवाजे, विश्वना रूप छाजे ॥ जिन तेह शुभ साजे, वंदीयें मोक्ष काजे ॥ २ ॥ नवल नय तरंगा, सप्त भंग प्रसंगा ॥ कृत परमत भंगा, सर्वथा जे अभंगा ॥ विमल दश दुअंगा, पाप संताप गंगा ॥ भविक जन सुणि चंगा, जैन वाणी सुरंगा ॥ ३ ॥ जिन चरणनी

वी, सर्व संसार खेवी ॥ मन मदिर वहेवी, विघ्ना
की दहेवी ॥ बहु भक्ति धरेवी, संघ रक्षा करेवी ॥ स
कती धरणी देवी, दान संसिद्धि लेवी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्री अजित जिनेसर राया ॥ ए देशी ॥ श्री
अरजिनवर जगदीश, भवियण ध्यावोरे ॥ मन भाव
धरी निशि दिस ॥ भवि० ॥ जिम पहोंचे सकल ज
गीश ॥ भवि० ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिनाग पुरनो धणी
रे, राय सुदर्शननंद ॥ देवी सुदर्शन नंदन वंदता रे,
भाजे भावठ दंद ॥ भवि० ॥ १ ॥ कंचन वर्ण तनु
सोहतो रे, रूप कला गुणवंत ॥ चक्रवर्तिनी संपदा
रे, पामे प्रभु जयवंत ॥ २ ॥ भवि० ॥ भरतक्षेत्र
षट खंडमां रे, आण अखंडित जास ॥ चोसठ सहस
अंते उरी रे, भोगवे भोगविलास ॥ ३ ॥ भ० ॥ मृग
शिर शुदि एकादशी रे, उज्जवल पक्ष उदार ॥ सहस
पुरुष साथे प्रभु रे, आदरे संयम भार ॥ ४ ॥ भवि० ॥
सुरनर असुर मिलि तिहां रे, उछव करे सुविवेक ॥ सु
रभि नीर फल फूलनी रे, वसुधा वृष्टि अनेक ॥ ५ ॥

ज वि० ॥ देव तणां वाजे घणां रे, वर वाजित्र आकाश ॥ नाचे नव नव छंदशुं रे, नारी नवल विलास ॥ ६ ॥ ज० ॥ दीक्षा कल्याणक इस्युं रे, आराधे नर जेह ॥ दान सकल सुख संपदा रे, पामे पुण्यें तेह ॥ ७ ॥ ज वि० ॥ इति प्रथम जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ द्वितीय जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सुख कारण जिन जननी, कूखें ज्यारे अवतरीयो ॥ त्यारे शुज सूचक उदार, चित्त डोहलो धरियो ॥ पंच वरण वर सुरजि गंध, अमला ने अमूल ॥ शय्या विरचुं सुघट घाट, लेइ मालती फूल ॥ ते माटे जनम्या पछी ए, दीधुं मल्लि अजि धान ॥ ते जिन समरणथी सदा, लहे परम सुखदान ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जिम शशी उदित सकल, लोक अंधार पलाय ॥ घन वर्षते जिम जूमि, नव पल्लव थाय ॥ प्रगट्यो जिन जनमंत, तिम सघले परकाश ॥ पसर्यो जग जन चित्त मांहि, तिम हरष उल्लास ॥ मृगशिर शुदि एका

दशी ए, जनम्या मल्लि जिणंद ॥ ते जिन पाय पसायथी, दान ग्रहे आणंद ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भुत देह सरूपहे, गुण गेह बिराजे ॥ लाजे जस मुख देखी चंद, मृग नयणें लाजे ॥ नीलकवान सोभागवान, उपमान न अवर ॥ बालपणाथी अधिक तेज, जाणे नव दिनकर ॥ पील प्रमुख बहु लोकने ए, अंतर घन विश्राम ॥ ते मल्लि जिन देखतां, घन सरे संति काम ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ मिथिला नयरी वर विस्तार, कुंभराय तिहां बहु अधिकार, राणी प्रभावती सार ॥ जब तस कूखे लह्यो अवतार, चौद सुपन देखी निशि वार, पामे परम करार ॥ मृगशिर मास शुकल पक्ष तार, तिथि एकादशी ने शुभ वार, मध्य रात्रे निरधार ॥ मल्लि जिन जनम्या जगदाधार, तब सघले थयो हरख अपार, वर्त्यो जय जयकार ॥ १ ॥ इंद्रनां जब सिंहासन हाले, तब सुर पति निज ज्ञान संभाले, जिनवर जन्म निहाले ॥

घंट सुघोषा तव संचाले, सुर सवे लेशी विमान विशाले, सुर गिरि उपर चाले ॥ तिहां जिन आणी नाव रसाले, तीर्थ उदकशुं अंग पखाले, निज समि पातक टाले ॥ चउवीसे जिननो निशि काले, इम उत्सव कीधो सुर पाले, ते निज नव अजु आले ॥ २ ॥ जिन जनमहोत्सव अवसर जाणी, आवे सुरपति उलट आणी, नाव नगति सह नाणी ॥ आठ जाति करी कलश विनाणी, सुरनि नस्या वर तीरथ पाणी, पुष्पादिक बहु आणी ॥ अच्युतेंद्र आदि गुण खाणी, तिम अंते सोहम वज पाणी, स्नात्र करे शुन नाणी ॥ एहवी विधि जेह मांहि वखाणी, ते आगम निसुणो नवि प्राणी, जिम लहो शिव पट राणी ॥ ३ ॥ वीणा ताल मृदंग वजावे, कोइ सुर सुंदरी नृत्य बनावे, गीत सरस कोइ गावे ॥ नक्ति राग मनमांहि जगावे, जिन मुखशुं निज नयन लगावे, निज नव पाप नगावे ॥ इम जन्मोत्सव करी मननावे, सवि सुपरति निज स्थानक आवे, मन परमानंद पावे ॥ ते चउविह देवा सद नावे, सकल संघने कुशल वधावे, दान सकल दुःख जावे ॥ ४ ॥

॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिन अद्भुत तनु सुंदर, जन्म्या जेणे वेला जी ॥ छप्पन दिशी कुमरी तव आवे, गावे जिनगुण हेलां जी ॥ जिन जिन जननीना पद प्रणमी, सूति करम करे भेलांजी ॥ निज स्थानक जइ हरख धरंती, सवि परिवार समेता जी ॥ १ ॥ देहरूप मल रहित सुगंधी, नहिं प्रस्वेद विकार जी ॥ नवि छद्मस्थ निहाले कोइ, आहारने निहार जी ॥ रुधिर मांस उज्ज्वल अनिंदित, श्वास कमल अनुकार जी ॥ जन्म थकी जस ए चउ अतिशय, ते जिन वंदुं उदार जी ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधि नाण गुण खाणी, जाणे बहु जग भाव जी ॥ तोहि पण प्रभु बालकनी परें, राखे बाल स्वभाव जी ॥ निज अंगुठे अमृत पीवे, नहि खेलादि विभाव जी ॥ इम कही बाल दशा जिन जीनी, आगम तेह अपाव जी ॥ ३ ॥ कंडुक प्रमुख रयण मय विरची, केली करे बहु भांति जी ॥ बालरूप करी भक्ति राग धरी, जे रमे जिन संघातजी ॥ समकित धारी पर उपगारी, वरते गुण पक्षपातजी ॥

देजो संघने ते सुर मंगल, दान सकल दुःख घातजी ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ मात लाछलदे नंद ॥ ए देशी ॥ मिथिला नयरी मझार, कुंजराय घर बार, आज हो गाजे रे दीवाजे, उछव अतिनवा रे ॥ १ ॥ शुदि मृगशिर शुज्ञ वार, एका दशी सुखकार, आज हो मल्लि जिन रे जन्म्या, राणी प्रज्ञावती रे ॥ २ ॥ जूमि लहे उल्लास, सघले थयो प्रकाश, आज हो गाजे रे आवाजे, देवनी दुंदुही रे ॥ ३ ॥ घर घर चंदन माल, बांधी ऊाक ऊमाल, आज हो दीजे रे हाथा कुंकुम रोलना रे ॥ ४ ॥ दीजे याचक दान, कीजे बहु सनमान, आज हो आवे रे सहुनां, सवल वधामणा रे ॥ ५ ॥ वाजे मादल ताल, नाचे नवली बाल, आजहो गावेरे धवल मंगल, कुल कामिनी रे ॥ ६ ॥ सगा सज्जन संतोष, थयो हरखनो पोष, आज हो जगमां रे राज्य, एक आनंदनुं रे ॥ ७ ॥ जन्मोत्सव अधिकार, इम कीधो विस्तार, आजहो पाम्या रे सुर, नरपति तिहां सुख घणां रे ॥ ८ ॥ जन्म कल्याणक

एह, आराधे बहु नेह, आज हो ते नर रे, दान मंगल माला लहेरे ॥ ए ॥ इति मल्लि जिन स्तवनं ॥ इति बीजो जोमो समाप्त ॥

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ मेरु तणी परे धीर वीर, ने ऋद्धि गंभीरा ॥ चंद्र तणी परे सौम्य तेज, झलके जिम हीरा ॥ राग रोष मन नहीं लिगार, नहीं विषय विकार ॥ शांति कांति रति मति प्रमुख, गुण जलधि अपार ॥ दिन दिन वान वधे बहु ए, जिम कंचन पर जाग ॥ ते जगवंतनी ज-क्तिथी, दान थयो महाजाग ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ रहे अहो निशि सुख मगन, नही रोग वियोग ॥ वेदोदय विण जोगवे, प्रजु जोग अशोग ॥ आया नि-र्जरे पूर्व कर्म, नव बंधन आणे ॥ गृहवासे रहे शत वर्ष, चोथे गुणगणे ॥ क्षय कषाय द्वादश करी ए, लहे बहु गुण जाण ॥ मल्लिनाथ जिन तेहना, दान करे गुणगान ॥२॥ इति

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर परिषद अनुप, त्रणशें नृप कन्या ॥ तिम त्रणशें नृप पुत्रबाह्य, परिषदमां धन्या ॥ मृगशिरशुदि एकादशी, ग्रहे दीक्षा नावे ॥ देव डुष्य तव इंद्र एक, जिन खंधे ठावे ॥ उग्र विहार तप प्रभु करे ए, समता रस भरपूर ॥ मल्लिनाथ ते मन धरतां, दान गयां डुःख डूर ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ प्रभु मल्लि जिनेसर, आदरे दीक्षा जाम ॥ चउविह सुर आवी, उत्सव करे अभिराम ॥ मणिरयण कंचननी, वृष्टि करे उद्दाम ॥ भविजन ते जिननां, मन राखो गुणग्राम ॥ १ ॥ व्रत लेइ वरते, अप्रति बद्ध विहार ॥ सम तृण मणि जीवित, मरण अमम अविकार ॥ धरी विविध अभिग्रह, इंद्रिय निग्रह कार ॥ ते जिन चोवीशे, वंदुं वारंवार ॥ २ ॥ प्रभु हस्त युगलमां, सागर सर्व समाय ॥ शिखा उपरें वाधे, बिंडु पात नवि थाय ॥ छद्मस्थ जिणंदनी, इम जिहां लब्धि कहाय ॥ ते आगम सुणतां, संशय सकल पलाय ॥ ३ ॥ विहरंता

जिनने, उपसर्ग उपजे जाम ॥ जाणी इंद्रादिक, आवी निवारे ताम ॥ जिन सेवा ततपर, जे देवा गुण धाम ॥ पूरो श्री संघने, दान सकल सुख ठाम ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ भुवन नंदन जिननी, नील वरण जस देह ॥ प्रभावती नंदन, मंगल तरुवन मेह ॥ मृगशिर शुदि केरी, एकादशी दिन एह ॥ थया भाव चरण धरी, छांडी परिकर गेह ॥ १ ॥ अहो दान घोषणा, सुर दुंदुभि वाजंत ॥ निवडे वसुधारा, जल सुगंध वरषंत ॥ फूल वृष्टि करे सुर, ए पंच दिव्य हवंत ॥ जस पारण ठामे, ते वंदुं अरिहंत ॥ २ ॥ सामायिक आदि, चारित्र पंच प्रमाण ॥ ते मांहि पहिलुं, चोथुं पंचम जाण ॥ जिनने ए होये, क्रम चढत गुणठाण ॥ ए कह्यो जिहां विधि, ते वंदुं सुयनाण ॥ ३ ॥ छद्मस्थपणे जिन, विचरे महियलमांहिं ॥ इंद्रादिक आवे, भक्तिवंत उछांहि ॥ प्रभु उन्नति काजें, बहु पूजा करे त्यांहि ॥ ते सुर सान्निध्यथी, दान सुमति अवगाहिं ॥ ४

॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥ वनमां मोहन घर एक, षट बार करे सुविवेक ॥ कंचनमय पूतलो सार, करे रंगाले अनुकार ॥ १ ॥ एक कवल मांहे नांखे, तेह कमलें ढांकी राखे ॥ पडिबोधि आदि महाभाग, छए मित्र धरी अनुराग ॥ २ ॥ आव्या ते परणवा काजे, मिथिला विंटी निज साजे ॥ प्रभु ते घरमांहि तेडावे, हरख्या ते सघला आवे ॥ ३ ॥ उघाडे कमल जिणि वार, पसर्यो दुरगंध अपार ॥ नृप चिंते मनुजनो देह, अहो एम अशुचिना गेह ॥ ४ ॥ धिग धिग धिगहो ए संसार, कुणनो पुरुष कुणनी नार ॥ वैराग्यरसें मन भीनो, वाध्यो संवेग मन लीनो ॥ ५ ॥ देइ दान संवत्सरी सार, छए मित्र तणो परिवार ॥ उज्ज्वल पक्ष मृगशिर मास, एकादशी व्रत ग्रहे खास ॥ ६ ॥ मल्लिजिननुं व्रत कल्याण, करतां थाये कोडि कल्याण ॥ तेह मल्लिनाथ अभिधान, जपतां लहे बहु सुख दान ॥ ७ ॥ इति श्री मल्लि जिन दीक्षा कल्याणक स्तवन ॥ इति त्रीजो जोडो ॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ चउनाणी थइ शुक्ल ध्यान, मुनिराज अभ्यासें ॥ अधिक अधिक तिम आप तेज, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ पाणि पडिग्गह लब्धि चिंत, दुःकर व्रत धार ॥ दुर्द्धर सिंहपरें अनेक, परिसह सहनार ॥ इणविध दीक्षाने दिने ए, प्रगट्युं केवल ज्ञान ॥ ते अरिहंत प्रणामथी, लहियें समकित दान ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चडी क्षपक श्रेणी अपूर्व, उत्साह धरीने ॥ लहे गुणठाणुं बारमुं, संजलण हरीने ॥ नाण दंसणा वरण कर्म, अंतराय उछेदी ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, प्रभु थया अवेदी ॥ लोकालोक प्रकाशतो ए, दर्शन अनंत ॥ जाव तीर्थंकर तव थया, दान दया कर संत ॥२॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ भव्य जीव वर कमल खंड, प्रति बोध वधारे ॥ नाण किरण विस्तार सार, तम पडल निवारे ॥ सुरनर मुनि पति सेवमान, बहु लोक सुखंकर ॥ दिन दिन अ

भिनव उदयवंत, मल्लि जिन दिनकर ॥ नाण लह्युं एका दशी ए, उज्ज्वल मृगशिर मास ॥ ते जिनराज प्रसादथी, दान लहे उल्लास ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ वर शुक्ल ध्याननना, भाग दोय जब ध्यात ॥ करी करण अपूरव, तव टाले घन घात ॥ पामे प्रभु केवल, दरिसण ज्ञान विख्यात ॥ मल्लि जिन जाणे, सर्व भाव साक्षात ॥ १ ॥ छत्र त्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि डुंडुभि, भामंडल झलकार ॥ सुर कुसुम वृष्टि वर, भद्रासन अति सार ॥ एह प्रातिहार्य जस, ते जिन वंदुं उदार ॥ २ ॥ वर केवल नाणे, जाणे सयल पयथ्थ ॥ भांखे शुभ वचन ते, श्री जिन पति तिहां अथ्थ ॥ विरचे सूत्र रूपे, गणधर तेह समथ्थ ॥ जग मांहि तेहिज, आगम एक समथ्थ ॥ ३ ॥ श्री मल्लि जिनेश्वर, सेवा करे गुण धाम ॥ जिन शासन देवी, वैरुट्या इति नाम ॥ गुण रागे रंजित, सप्तधातु अभिराम ॥ तेह दान पसायें, राखजो श्री संघ नाम ॥ ४ ॥
॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ समवसरण सिंहासन बेठा, नील वरण जस कायाजी ॥ मानुं मेरु शिखर शिर उपर, ए नव जलद सुहायाजी ॥ जवि चातकने जस दर्शनथी, पाप संताप पलायाजी ॥ मल्लि जिनेसर महिमा मंदिर, जवि प्रणमो तस पायाजी ॥ १ ॥ एकादश जस अतिशय प्रगटे, कर्म कलंक उछेदेजी ॥ तिम ओगणीश करे शुज अतिशय, सुर समुदाय अखेदेजी ॥ जन्मातिशय चउर संयुत ए, अतिशय चोत्रीश जेदे जी ॥ तेहशुं जेह विराजे जिनवर, प्रणमुं तेह उमेदे जी ॥ २ ॥ चउ मुख रूपे जिन उपदेशे, चार प्रकारे धर्मजी ॥ तेहमांहि जीवा जीवादिक, सूक्ष्म छे बहु मर्मजी ॥ शीतल तर चंदन अनुकारे, वारे तव दुःख धर्मजी ॥ ते जिन वाणी जवि प्राणीनां, टाले सकल कुकर्म जी ॥ ॥३॥ शुदि मृगशिर एकादशी उपनुं, मल्लि जिनने नाणजी ॥ प्रजु पासे रहे अहो निशि तनुथी, सुरनर कोडी प्रमाण जी ॥ शांति समाधि वैयावच्च कारक, समरण योग्य सुजाण जी ॥ दान शिवंकर ते सुर करजो, श्री संघ नित्य कल्याण जी ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ यादव राय जइ रह्यो ॥ ए देशी ॥ सकल सुहंकर सेविये रे, मल्लि जिणंद मयाल ॥ चित्त अंतर आराधतां रे, थाय दुःख विसराल ॥ १ ॥ नविक जन वंदो जिनवर एह ॥ एतो नव दुःखनो करे छेह ॥ नवि० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ उज्ज्वल मागशिर मासनी रे, तिथि एकादशी सार ॥ पश्चिम नागे दिवसने रे, अश्विनी योग उदार ॥ न० ॥ तिणे दिन प्रनुने उपन्युं रे, केवल नाण पसथ्थ ॥ काल नाव द्रव्य क्षेत्रथी रे, जाणे अनंत पयथ्थ ॥ न० ॥ ३ ॥ जिम वादल फाटे थके रे, पसरे रवि परकाश ॥ तिम केवल रुचि ऊल हले रे, थाते आवरण नाश ॥ ४ ॥ नवि० ॥ निज तनु वाने जीपतो रे, इंद्र नील मणि सार ॥ कुंन लंछन कुंननी परें रे, उतारे नव पार ॥ ५ ॥ न० ॥ वरस पंचावन सहस्सनुं रे, समुदित जेहनुं आय ॥ उणुं शत वर्षे करी रे, तेह केवली पर्याय ॥ ६ ॥ नवि० ॥ ज्ञान कल्याणक जिन तणुं रे, आराधे मति मान ॥ तस प्रनु दान पसायथी रे, वाधे दिन दिन वान ॥ ७ ॥ नवि० ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल समीहित सुख करण, सुर तरु उपमान ॥ तरुण तरणी परें तेजवंत, जग तिलक समान ॥ नक्ति धरी सुर सुंदरी, करे जस गुण गान ॥ ध्यावे सुर नर असुर नाथ, जस शुन अनिधान ॥ शुदि मागशिर एकादशी ए, पाम्युं ज्ञान अनंत ॥ दान सुहंकर एम वदे, ते नमि जिन जयवंत ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मूल प्रकृतिमां एक बंध, चउ सत्ता उदयें ॥ एक बंध उत्तर प्रकृति, तिम बेंतालीश उदयें ॥ सत्ता पंचाशी विचार, जेहवी बळी छार ॥ मन वच काया जोग जास, अविचल अधिकार ॥ तेरमा गुणठाणा तणी ए, धरे दशा एम जेह ॥ ते नमि जिन एकवीशमो, दान दया गुण गेह ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ पुरुषोत्तम परमेठि रूप, परमातम योगी ॥ परमानंद प्रकाशवान, अक्षय उपयोगी ॥ निज अनंत पर्याय

श्रुत, सवि जाणे प्राप्य ॥ काल त्रितय वेदी जिणंद, ल हे नथा नव्य ॥ केवल ज्ञानने दरिसन ए, जल हले अंतर तेज ॥ ते श्री नमि जिनराजने, दान नमे धरी हेज ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ सकल गुण निधानं, शांत मुद्रा प्रधानं ॥ शिव सुगति निदानं, मर्द्दिला नंग मानं ॥ सुर कृतगुण गानं, विश्व विख्यात दानं ॥ नज नमि अनिधानं, श्री जिनं सावधानं ॥ १ ॥ नमित सुर नरिंदा, दीप्त तेजे दिणं दा ॥ शमित सकल कंदा, दग्ध संसार कंदा ॥ वदन विजित चंदा, प्रीति आणी अमंदा ॥ नविक जन जि णंदा, वंदिये ते अफंदा ॥ २ ॥ मदन अगनि पाणी, पाप वेली कृपाणी ॥ उपशम गुण खाणी, इंद्र चंद्रे व खाणी ॥ नुवन जन गुराणी, नव्य जीवे घराणी ॥ त्रिनु वन पति वाणी, सांनलो नाव आणी ॥ ३ ॥ कर कमल धरंती, केलि लीला करंती ॥ जिनपद समरंती, संघ विघ्नो हरंती ॥ समकित गुणवंती, नारती सौम्य कांति ॥ शुन मति विलसंती, दान दीक्षा जयंती ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्री नमिं जिनवर भुवन दिणंद, विजय राज कुल जलनिधि चंद, वप्रा राणी नंद ॥ सुरपति पूजित पद अरविंद, मन मदन मातंग मयंद, माया वेली गयंद ॥ मन वच काया जास अफंद, क्रोधादिक अरि कीधा मंद, छेदित दुरमति दंद ॥ शुदि मृगशिर मासे सुखकंद, एकादशी दिवसे आणंद, केवल पाम्युं अमंद ॥ १ ॥ जिन केवल उपजे जिणे ठाय, टाले रेणु त्रिकूर्वी वाय, नीर कुसुम वृष्टि थाय ॥ रयण कंचननें रजत सुहाय, प्राकार त्रण रचे सुखदाय, तिहां मणि पीठ ठराय ॥ ते विचें वृक्ष अशोकनी छाय, सोवन सिंहासन मंडाय, तिहां बेसे जिनराय ॥ शिर उपरें त्रण छत्र ढलाय, चिहुं पखे सुर चामर विंजाय, प्रणमुं तेहना पाय ॥ २ ॥ सिंहासन बेसी जिनभाण, भांखे वाणी अमृत समान, स्याद्वाद मंडाण ॥ श्री जिनवर ते पोत सुखाण, जिहां बहु नय निक्षेप प्रमाण, हेतु भंग गम ठाण ॥ जिहां निश्चय व्यवहार वखाण, पसरे जोयण भूमि प्रमाण, गुण पांत्रीश निहाण ॥ निज निज भाषा रूपें जाण, सहुनें परिणमे घन उवमाण,

सांजलो तेह सयाण ॥ ३ ॥ जिन पदकज मधुकर अनुकार, जे मुनि पंच महाव्रत धार, साधवी गुण जंका र ॥ श्रावक जे पाळे व्रत बार, श्राविकानो एहज आ धार, संघ चतुर्विध सार ॥ तेहनी रक्षाना करनार, जे देवा छे चतुर प्रकार, जेहनी शक्ति अपार ॥ ते ह- रजो दुःखनो विस्तार, करजो सकल विघ्न संहार, दान सदा जयकार ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग वेलाउलनी देशी ॥ जव दुःख वारण शिव सुख कारण, श्री नमिनाथ जिणंदा ॥ प्रणमो जवि जावे जिम थावे, सकल कुशल आणंदा ॥ १ ॥ श्री नमि० ॥ सुरपुरी सुंदर मिथिला नयरी, राय विजय तिहां सोहे ॥ वप्रा राणी तस पटराणी, रूपे सुरनर मोहे ॥ २ ॥ श्री० ॥ तस सुत मति श्रुत अवधि नाण युत, काया कंचन वान ॥ आण अखंकित वरते जेहनी, परगट पुण्य निधान ॥ ३ ॥ श्री० ॥ व्रत लेइ विधि सहित आराधे, करे सकल मल हाण ॥ मागशिर सुदि एकादशी दिवसे, पाम्या केवल नाण ॥ ४ ॥

श्री० ॥ सपरिवार चोसठ सुरपति तिहां, समवसरण तव विरचे ॥ कंचन रजत रयण गढ करिने, त्रिभुवन पति पद अरचे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ कोमा कोमी सुर नर तिहां मलिया, डुंडुभि देव वजावे ॥ जिननी ऋद्धि अनुपम निरखी, मन परमानंद पावे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ ज्ञान कल्याणक इणि परें करतां, भव भव संकट भाजे॥ ते नमि जिनवर प्रणमो प्रेमें, दान सकल सुखकाजे ॥ ७ ॥ श्री नमि० ॥ इति नमिनाथ स्तवनं ॥ इति श्री दानविजयजी कृत मौन एकादशी देववंदनं ॥

॥ अथ श्री मौन एकादशीनुं दोढशो ॥
॥ कल्याणिकनुं गणणुं प्रारंभः ॥

---

१ जंबुद्वीपे भरते अतीत चोवीशी.

---

४ श्री महायशः सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री सर्वानुभूति अर्हते नमः ॥

६ श्री सर्वानुभूति नाथाय नमः ॥

६ श्री सर्वानुभूति सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री धर नाथाय नमः ॥

२ जंबुद्वीपे जरते वर्त्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः ॥
१ए श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः ॥
१ए श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री अरनाथ नाथाय नमः ॥

३ जंबुद्वीपे जरते अनागत चोवीशी.

४ श्री स्वयंप्रज सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयनाथ नाथाय नमः ॥

४ धातकी खंडे पूर्व जरते अतीत चोवीशी.

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री शुजंकरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री शुजंकरनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री शुजंकरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री सप्तनाथ नाथाय नमः ॥

५ धातकी खंडे पूर्व भरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री ब्रह्मेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१ए श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥

१ए श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥

१ए श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१० श्री गांगिकनाथ नाथाय नमः ॥

६ धातकी खंडे पूर्व भरते अनागत चोवीशी.

४ श्री सांप्रत सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नमः ॥

७ पुष्करवरद्वीपे पूर्व भरते अतीत चोवीशी.

४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री कलाशत नाथाय नमः ॥

ए पुष्करवर द्वीपे पूर्व भरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री अरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१ए श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥
१ए श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री अयोगनाथ नाथाय नमः ॥

ए श्री पुष्करवर द्वीपे पूर्व भरते अनागत चोवीशी.

४ श्री परम सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री निःकेशनाथ नाथाय नमः ॥

१० धातकीखंडे पश्चिम भरते अतीत चोवीशी.

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री हरिभद्र अर्हते नमः ॥
६ श्री हरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री मगधाधिप नाथाय नमः ॥

११ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री प्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ॥

१९ श्री अक्षोभनाथ अर्हते नमः ॥

१९ श्री अक्षोभनाथ नाथाय नमः ॥

१९ श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री मलयसिंह सर्वज्ञाय नमः ॥

१२ धातकी खंडे पश्चिमभरते अनागत चोवीशी,

४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री धनदनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री धनदनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री पौषधनाथ नाथाय नमः ॥

१३ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते अतीत चोवीशी.

४ श्री प्रलंब सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥

६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥

६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री प्रशमराजित नाथाय नमः ॥

१४ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ अर्हते नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ नाथाय नमः ॥
१ए श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री प्रसादनाथ नाथाय नमः ॥

५ श्री पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते अनागत चोवीशी.

४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री रूषभचंद्र नाथाय नमः ॥

१६ जंबुद्वीपे ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अभिनंदननाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री अभिनंदननाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री अभिनंदननाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री रत्नेशनाथ नाथाय नमः ॥

१७ जंबुद्वीपे ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री श्यामकोष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥

१ए श्री मरुदेवनाथ अर्हते नमः ॥

१ए श्री मरुदेवनाथ नाथाय नमः ॥

१ए श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१ण श्री अतिपार्श्व नाथाय नमः ॥

१ण जंबुद्वीपे ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री व्रतधरनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नमः ॥

१ए धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री नरसिंहनाथ नाथाय नमः ॥

२० धातकी खंडे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री खेमंत सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री कामनाथ नाथाय नमः ॥

२१ धातकी खंडे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह अर्हते नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

२२ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री अष्टाह्निक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

२३ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री तमोकंद सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री क्षेमंतनाथ नाथाय नमः ॥

२४ पुष्करार्द्धे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री नीर्वाणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

२५ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री पूरूरवा सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अवबोध अर्हते नमः ॥
६ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥
६ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

२६ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री सुशांति सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री हरदेव अर्हते नमः ॥
१ए श्री हरदेव नाथाय नमः ॥
१ए श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री नंदिकेश नाथाय नमः ॥

२७ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री महामृगेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अशोचित अर्हते नमः ॥
६ श्री अशोचित नाथाय नमः ॥
६ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री धर्मेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥

२० पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

२१ श्री अश्ववृंद सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री कुटिलक अर्हते नमः ॥
१ए श्री कुटिलक नाथाय नमः ॥
१ए श्री कुटिलक सर्वज्ञाय नमः ॥
१० श्री वर्द्धमान नाथाय नमः ॥

२ए पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी.

२१ श्री नंदिकेश सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री धर्म्मचंद्र अर्हते नमः ॥
१ए श्री धर्म्मचंद्र नाथाय नमः ॥
१ए श्री धर्म्मचंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१ठ श्री विवेकनाथ नाथाय नमः ॥

३० पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री विशोम अर्हते नमः ॥
६ श्री विशोम नाथाय नमः ॥
६ श्री विशोम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री आरण्यनाथ नाथाय नमः ॥

॥ अथ मुनि श्री दानविजयजी कृत चैत्री ॥
॥ पूनमना देववंदन प्रारंज्नः ॥
॥ तिहां प्रथम विधि कहीये ठेये ॥

॥ प्रथम चौमुखनी प्रतिमा स्थापीये, पठी स्नात्र जणावीये, प्रजुने दश तिलक करीये, फूलना हार दश चढावीये, दश वखत अगर बती उखेवीये,

दश वखत चामर वींजीये, दश दीवेटनो दीवो करीये, पछी दश वखत घंट वजाडीये, चोखाना साथीया दश करीये, ते साथीयानी उपर दश बदामो मूकीये, चौमुखजीने चारे पासे चार श्रीफल मूकीये, अखियाणुं गोधम शेर त्रण मूकवा, तेनी उपर एक श्रीफल मूकवुं, नैवेद्य मध्ये दश जातिनां पकवान्न दश ढोइये, पछी जे जे जातिनां फल मले, ते सर्व जातिनां दश दश फल मूकवां, परंतु ते फल सर्व उत्तम जातिनां लेवां, पछी देव वांदीये, पछी शांतिकर स्तोत्र कहीये, पछी श्री शत्रुंजयनां एकत्रीश नाम दश वखत लेवां, ते एकत्रीश नाम लखीये छैये.

१ श्री विमलाचलाय नमः	१० श्री मुक्तिधरायनमः
२ श्री पुंडरीकगिरीये नमः	११ श्री महातीर्थाय नमः
३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः	१२ श्री अकर्मणे नमः
४ श्री सुराचलाय नमः	१३ श्री शाश्वतगिरीये नमः
५ श्री महाचलाय नमः	१४ श्री सर्वकामदाय नमः
६ श्री श्रीपदये नमः	१५ श्री पुष्पदंताय नमः
७ श्री पर्वतेंद्राय नमः	१६ श्री महापद्माय नमः
८ श्री पुण्यराशये नमः	१७ श्री पृथ्वीपीठाय नमः
९ श्री दृढशक्तये नमः	१८ श्री प्रभुपदगिरीये नमः

१९ श्री पातालगिरीये नमः
२० श्री कैलासपर्वतायनमः
२१ श्री क्षितिमंगल पर्वताय नमः

ए एकवीश नाम दश वार कहीने पछी दश नवकार गणीये, पछी खमासमण दश आपीये, पछी भंडार ढोइये, एटले तिहां यथाशक्तिये रूपा नाणुं मूकीये, पछी प्रदक्षिणा दश आपवी. ए रीते देववंदनना प्रथम जोडामां सर्व ठेववा, अने नैवेद्य, दीवेट, टीली, चामर, आरती, चोखाना साथीया प्रमुख सर्व दश दश करवा. तेमज बीजा जोडामां वीश, त्रीजा जोडामां त्रीश, चोथा जोड़ामां चालीश अने पांचमामां पच्चास. एवा अनुक्रमे वस्तु मूकवी ॥ हवे देव वांदवानो विधि कहे छे. प्रथम इरियावहि पडिक्कमी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पछी प्रगट लोगस्स कहीने चैत्यवंदन करीये. ते चैत्यवंदन लखीये छैये.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ नाभिनरेसर वंश चंद, मरुदेवा मात ॥ सुर रमणी रमणीय जास, गाये अवदात ॥ कंचन वर्ण समान कांति, कमनीय शरीर ॥ सुंदर गुणगण पूर्ण भव्य, जन

मन तरु कीर ॥ आदीश्वर प्रभु प्रणमीये ए, प्रणत सुरासुर वृंद ॥ मन मोदें मुख देखतां, दान मिटे दुःख दूंद ॥ ए चैत्यवंदन कह्या पछी नमुत्थुणं० ॥ कही अरुधो जयवीयराय कहेवो. पछी वली चैत्यवंदन कहेवुं, ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन

॥ पूर्णचंद्र उपमान जास, वदनांबुज दीठे ॥ जव जव संचित पाप ताप, ते सघलां नीठे ॥ जविजन नयन चकोर चंद्र, तव हरषित थाय ॥ अंधकार अज्ञान तम, निर्विषयी जाय ॥ समता शीतलता वधे ए, पूर्ण ज्योति परकाश ॥ रुषज देव जिन सेवतां, दान अधिक उल्लास ॥ २ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुत्थुणं अने अरिहंत चेइयाणं० कहीने जे थोय कहेवी, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ सिरि शत्रुंजय गिरि मंमणो, दुःख दोहग दुरिय विहंमणो ॥ चैत्री पुनमे सिरि रिसहे स्सरु, पूजो पुंडरीक गणि सुंदरु ॥ १ ॥ पछी लोगस्स० कहीने बीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ बीजी थोय ॥

॥ अतीत अनागत वर्तमान, जिनवर आवी अनंत तान ॥ चैत्री पूनम दिवसे समोसर्या, ते ध्यायी मुक्ति वधूवर्या ॥ २ ॥ पछी पुख्खरवरदी० ॥ कहीने त्रीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ त्रीजी थोय ॥

॥ विमलाचल महिमा नाखियो, जिनवर गणधर तिहां दाखीयो ॥ ते आगम समरो धरिय नाव, डुस्तर नवसागर सार नाव ॥ ३ ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कही चोथी थोय कहेवी ॥

॥ अथ चोथी थोय ॥

॥ चक्केसरी देवी सुरवरा, जिनवर पय सेवे हित करा ॥ विमलाचल गिरि रखवालिका, वरदान देजो गुणमालिका ॥ ४ ॥ पछी नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइआणं कहेवुं ॥

॥ अथ थोय जोडो बीजो ॥

॥ विमलाचल नूषण, रुषन्न जिनेश्वर देव ॥ तस आण लहीने, रुषन्नसेन गणदेव ॥ ते तीरथ

मां मुख्य, परणी शिव वहु सार ॥ चैत्री पूनम दिन, आणी हर्ष अपार ॥ १ ॥ एक लोगस्स कही थोय कहेवी ॥ विमलाचल महिमा, जिनवर कोडी अनंत ॥ उपदेशे पंडित, परिषदमांहि अनंत ॥ ने जिनवर देयो, मंगल माला ऋद्धि ॥ चैत्री पुनम तप, आराधकने सिद्धि ॥ पुख्खर० ॥ थोय कहेवी ॥ २ ॥ अष्टापद पमुहा, तीरथ कोडी अनेक ॥ तेहमां ए राजा, इम कहे आगम छेक ॥ ते आगम निसुणो, आणी हृदय विवेक ॥ चैत्री पूनम दिन, जिम होय पुण्य विवेक ॥ सिद्धाणं बुद्धाण ॥ थोय० ॥ ३ ॥ चक्केसरी देवी, जिनशासन रखवाली ॥ सिंहासन बेठी, सिंहलंकी लटकाली ॥ चेत्रीपूनम तप, विघ्न हरजो माय ॥ श्री विजयराज सूरि, दान मान वर दाय ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ पछी नमु० ॥ जावंतिचेइ० ॥ जावंत केविसाहु० ॥ नमोऽर्हं० ॥ कही स्तवन कहीये ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ एकवीशानी देशी ॥ सुखकारी रे, सिद्धाचल गुण गेहरे ॥ नवि प्रणमो रे, हृदय धरी बहु नेह रे ॥ त्रुटक ॥ बहु नेह आणी एह जाणी, सकल तीरथ सेहरो ॥ श्री ऋषभ देव जिणंद पूजी, पूर्वे सवि दु

न्कुन हरो ॥ असुर सुर मुनिराज किन्नर, जास दरसन अहिलसे ॥ जेहनुं फरसन करी नवि जन, मुगति सुखमां उल्लसे ॥ १ ॥ ढाल ॥ आदिसर रे, विहरंता जगमांहि रे ॥ सिद्धाचलरे, आवी समोसस्या त्यांहि रे ॥ त्रुटक ॥ त्यांहिं गणधर पुंडरिकने, भुवन गुरु इम उपदि शे ॥ तुम नामथी ए तीर्थ केरो, अधिक महिमा वाधशे ॥ सवि कर्म तोडी मोह मोडी, लही केवल नाण रे ॥ चैत्री पूनम दिवसे इणे गिरी, पामशो निर्वाण रे ॥२ ॥ ढाल ॥ इम निसुणि रे, श्री गणधर पुंडरिक रे ॥ नवजल थी रे, जिम अलगुं पुंडरिक रे ॥ त्रुटक ॥ पुंडरिक परें जे नय न पामे, परीसह उपसर्गथी ॥ क्रोधने मद मान माया, जास चित्त रतनथी ॥ पंच कोडि मुनिवर संघाते, तिहां अणसण उच्चरे ॥ अडकर्म जाली दोष टाली, सिद्ध मंदिर अनुसरे ॥ ३ ॥ ढाल ॥ ते दिनथी रे, ए गिरीनुं अति ऋद्धि रे ॥ पुंडरिक इति रे, नाम थयुं प्रसिद्ध रे ॥ त्रुटक ॥ प्रसिद्ध महिमा चैत्री पूनिम, दिनें जेहनो जाणीये ॥ बहु नाव आणी सार जाणी, सुगुण जास वखाणीये ॥ दश वीश त्रीश अने चालीश, पचास पुष्फमाल रे ॥ लोगस्स तेती काउस्सग्गो थुइ,

नमुक्कार रसाल रे ॥ ४ ॥ ढाल ॥ फल तेतां रे, होय तेती प्रदक्षिणा ॥ चैत्री पूजा रे, इणि विधि कीजे विचक्षणा ॥ त्रुटक ॥ विचक्षणा जिनराज पूजी, पुंड रिक हियडे धरो ॥ शत्रुंजय गिरीवर आदि जिनवर, नमो नवसायर तरो ॥ इम चैत्री पूनम तणो उछव, जे करे नवि लोय रे ॥ श्री विजयराज सूरिंद विनयी, दान शिव सुख होय रे ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ पछी जयवीयराय आनवमखंमा सुधी केहेवा. पछी चैत्यवंदन कहेवुं, ते कहे छे ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पूनमनो अखंम, शशीधर जिम दीपे ॥ अंगारक आदि अनेक, ग्रहगणने जीपे ॥ तिम पर तीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनंत, दीपंत दिवाजे ॥ चैत्री पूनमने दिने ए, नजो एह नगवंत ॥ श्री विजयराज सूरिंदनो, दान सकल सुख हुंत ॥ ३ ॥ इति देववंदननो प्रथम जोडो समाप्त ॥ अहीआं नमुत्थुणं तथा जयवीयराय संपूर्ण कही शांतिकर स्तोत्र कहेवुं ॥ ए प्रकारनो सर्व विधि जेम प्रथम लख्यो बे, तेम आहीं जाणी लेवो.

॥ अथ देववंदननो बीजो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो ॥ आदिसर जिन रायनो, जिहां महिमा जाचो ॥ इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिव वास ॥ एह गिरी सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥ दुष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु नव संचित जेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ आदिसर जिनरायनो, गणधर गुणवंत ॥ प्रगट नाम पुंडरिक जास, महिमांहे महंत ॥ पंच कोडि साथे मुणिंद, अणसण तिहां कीध ॥ शुकल ध्यान ध्यातां अमूल, केवल तिहां लीध ॥ चैत्री पूनमने दिन ए, पाम्या पद महानंद ॥ ते दिनथी पुंडरिकगिरी, नाम दान सुखकंद ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुहंकर सिद्ध क्षेत्र, सिद्धाचल सुणिए ॥ सुर नर नरपति असुर खेचर, निकरे जे थुणीये ॥ सकल

तीरथ अवतार सार, बहु गुण जंडार ॥ पुंडरिक गणधर जव, पाम्या जव पार ॥ चैत्री पूनमने दिने ए, कर्म मर्म करी दूर ॥ ते तीरथ आराहिये, दान सुयश जर पूर ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरीवर वासव, वासव सेवित पाय जी ॥ जयवंता वरतो तिहुं काले, मंगल कमला दाय जी ॥ सिरि रिसहेसर शिष्य शिरोमणी, पुंडरिकथी ते साध्यो जी ॥ चैत्री पूनम आ चोवीशो, महिमा जेहनो वाध्यो जी ॥ १ ॥ अनंत तीर्थंकर शत्रुंजय गिरी, समो सर्या बहु वार जी ॥ गणधर मुनिवरशुं परवरिया, ति हुंअणना आधारजी ॥ ते जिनवर प्रणमो जवि जावे, तिहुअण सेवित चरणा जी ॥ जव जय त्राता मंगल दाता, पाप रजोहर जरणा जी ॥ २ ॥ श्री आदिसर वचन सुणिने, पुंडरिक गणधार जी ॥ आगम रचना कीधी पोढी, नय निक्षेपा धार जी ॥ चैत्री पूनमने दिन आगम, आराधो जवि प्राणी जी ॥ आतम निर्मलता वर जावो, कतक फले जिम पाणी जी ॥ ३ ॥ शत्रुंजय सेवानो रसियो, वसियो जविजन चित्ते जी ॥ चउविह

संघना विघन हरेवा, उद्यत अतिशय नित्ते जी ॥ कवड यक्ष जिन शासन मंडपे, मंगल वेलि वधारो जी ॥ श्री विजय राज सूरीश्वर सेवक, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ शत्रुंजय मंडण, मोह खंडण, नाभि नंदन देव ॥ वार पूर्व नवाणुं आव्या, सहित गणधर देव ॥ रायण हेठे ठवि आसन, सुणत पर्षद बार ॥ शत्रुंजय महिमा प्रगट कीधो, लोकने हितकार ॥ १ ॥ विमल गिरीवर सेवनाथी, पापना क्षय थाय ॥ तम घटा जिम सूर देखी, दूर दहदिशि जाय ॥ चैत्री पूनम उपदिशी इम, तीर्थंकरनी कोडी ॥ सेविये भविका तेह जिनवर, नित्य निज कर जोडी ॥ २ ॥ सात छठ ने एक अठम, जाप विधिशुं मेलि ॥ शत्रुंजय गिरी आराधि इम, वाधे गुणनी केली ॥ इम कहे आगम विविध विधिशुं, कर्म भेद उपाय ॥ ते समय निसुणो भक्ति आणी, दलित दुर्मति दाय ॥ ३ ॥ गोमुख सुंदर यक्ष गोमुख, यक्ष वर्ग परधान ॥ जैन तीरथ विघन वारण, निपुण बुद्धि निधान ॥ श्री नाभिनंदो शिष्य मुनिवर, पुंडरिक गण

धार ॥ श्री विजयराज सूरिंद संघने, करो कुशल वि स्तार ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ श्री शत्रुंजय तीरथ सार, प्र णमो आणी जगति उदार ॥ नंदीश्वर यात्राए फल जेह, कुंडलगिरी बमणुं होय तेह ॥ १ ॥ तेह त्रमणुं रुचकाचल जोय, तेह गजदंते चउ गुणुं होय ॥ तेहथी बमणुं जंबू वृक्ष, चैत्य वांदतां होय प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ चैत्य जे धातकी खंड मझार, ब गुणु ते फल नमतां सार ॥ बत्रीश गुणुं फल तेहथी होय, पुष्करवर जिन नमतां जोय ॥ ३ ॥ मेरु चूलाना जिन प्रणमंत, तेहथी तेर गुणुं फल हुंत ॥ तेहथी सहस गुणुं फल थाय, स मेतशिखर जे यात्रा जाय ॥ ४ ॥ ते लख गुणुं अंजन गिरी जाण, ते दश लख रैवत जाण ॥ अष्टापद वंदे मन जाय, तेहने पण एहिज फल थाय ॥ ५ ॥ पुंडर गिरी प्रणमी गह गहे, तेहथी कोडी गुणुं फल लहे ॥ जांख्युं एह फल परिमाण, जातथी जन अधिक मन आण ॥ ६ ॥ पुंडरिक गणधर जिहां सिद्ध, पुंडरिक गिरी तेह प्रसिद्ध ॥ वंदि एह गिरी लहि संपदा, दान

विजय वांखे एम मुदा ॥ ७ ॥ इति स्तवन ॥ अहीं नमि ऊण० ॥ कहीये ॥ इति देववंदननो बीजो जोमो संपूर्ण ॥ ते वार पछी बमणो विधि करीने त्रीजो जोमो कहीयें, ते कहे छे.

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथ उपर अनंत, तीर्थंकर आव्या ॥ वली अनंता आवशे, समतारस जाव्या ॥ आ चोवीशी मांहि एक, नेमीश्वर पांखे ॥ जिन त्रेवीश समोसस्या, एम आगम वांखे ॥ गणधर मुनिवर केवली, समोसस्या गुणवंत ॥ प्रेमे ते गिरी प्रणमतां, हरखे दान हसंत ॥१॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथना उपरे, थया उद्धार असंख्य ॥ तिम प्रतिमा जिनरायनी, थइ तास नवि संख्य ॥ अजित शांति जिनराज इथ्थ, रह्या चौमासी ॥ ए तीरथ मुनि अनंत, हुआ शिवपुर वासी ॥ चैत्री पूनमने दिने ए, महिमा जास महान ॥ ए तीरथ सेवन थकी, दान वधे बहु वान ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टापद आदि अनेक, जग तीरथ मोटां ॥ तेहथी अधिकुं सिद्धक्षेत्र, एहं वचन न खोटां ॥ जे माटे ए तीर्थ सार, सासय प्रतिरूप ॥ जेह अनादि अनंतशुद्ध, इम कहे जिन भूप ॥ कलि काले पण जे हनो ए, महिमा प्रबल पडूर ॥ श्री विजयराज सूरिं दथी, दान वधे बहु नूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ विमलाचल सिहर शिरोमणी, तनु तेजे निर्जित दिनमणी ॥ श्री नाभेय जिन जग गृह मणी, जयो तिहुअण वांछित सुरमणी ॥ १ ॥ एकशत अडसानुं सोहामणा, निषधादिक ठे गुणे वामणा ॥ शिखरे शिखरे बहु जिनवरा, आवी समोसख्या गुण सायरा ॥ ॥ २ ॥ पुंडरिक तपोविध भांखियो, मधुराकारे शत्रुंजय साखीयो ॥ सुहगुरु संघ पूजा जिहां कही, ते आगम अभ्यासे गह गही ॥ ३ ॥ शशी वयणी कमल विलो चना, चक्केश्वरी देवी विरोचना ॥ रिसहेसर भक्ति वि धायिका, वरदान देजो सुप्रभाविका ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ सति मरुदेवी उरि सरोवर हंस, नृपनाभिकुला वर जे वर हंस ॥ सिरि रिसहेसर सेवो सदा, चैत्री पूनम लहो संपदा ॥ १ ॥ ऐरवत विदेहने भरते जेह, ते जिन प्रशंसे तीरथ एह ॥ ते तीर्थंकर भव भय हरो, भवियण चैत्री तप अनुसरो ॥ २ ॥ तीरथ यात्रा ते दुख हरे, ए करणीथी शिवसुख वरे ॥ इम उपदेशे गणधर देव, चैत्री तप करो नित्य मेव ॥ ३॥ श्रुत देवी सीत कमले रही, विमलाचल सेवा गह गही ॥ चैत्री तप सान्निधि करे माय, जिम दान सकल दुःखडां दूर जाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ प्रणमो प्रेमे पुंडरिक गिरी रा जीयो, गाजीयो जगमां रे एह ॥ सोभागी ॥ यात्राये जातां पगे पगे निर्जरे रे, बहु भव संचित खेह ॥ सोभागी ॥ १ ॥ प्रण० ॥ पाप होय वज्र लेप समोवड, तेह पण जायेरे दूर ॥ सो० ॥ जो एह गिरीनुं दर्शन कीजीये, भाव भगति भरपूर ॥ सो० ॥ २ ॥ प्रण० ॥ गोहत्या

दिक हत्या पंच छे, कारक तेहना जे होय ॥ सो० ॥ ते पण ए गिरीनुं दर्शन जो करे, पामे शिवगति सोय ॥ ॥ सो० ॥ ३ ॥ प्र० ॥ श्री शुकराज नृपति पण इणगिरी, करतो जिनवर ध्यान ॥ सो० ॥ षटमासे रिपु विजय गया सवे, वाध्यो अधिक तस वान ॥ सो० ॥ ४ ॥ प्र० ॥ चंद्रशेखर निज जगिनी जोगवी, कीधुं पाप महंत ॥ ॥ सो० ॥ तेपण ए तीरथ आराधतां, पाम्यो शुजगति संत ॥ सो० ॥ ५ ॥ प्र० ॥ मोर सर्प वाघण प्रमुख बहु, जीव छे जे विकराल ॥ सो० ॥ तेपण ए गिरी दर्शन पुण्यथी, पामे सुगति विशाल ॥ सो० ॥ ६ ॥ प्र० ॥ एहवो महिमा ए तीरथ तणो, चैत्री पूनमे विशेष ॥ सो० ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर शिष्यने, दान गयां डुःख लेश ॥ सो० ॥ ७ ॥ प्रण० ॥ इति स्तवन ॥ अहीं तिजयपहुत्त कहीये ॥ इति त्रीजा देववंदननो त्रीजो जोडो संपूर्ण ॥ अहींआं पूर्वनी परें विधि विगुणो करीने चोथा जोडानो प्रारंज करीये ॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ जोयण शत परिमाण एक, जे पहिले आरे ॥ बी

जे आरे जोयण जेह, एंशी विस्तारे ॥ तिम त्रीजे जोयण साठ, चोथे पंचास ॥ पांचमे आरे बार सार, विस्तार बे जास ॥ बठाने अंते हुसे ए, एक हस्त जस मान ॥ एह अवस्थित बे सदा, ते प्रणमे मुनि दान ॥१॥ इति॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जरत नरेसर जरत क्षेत्र, चक्रि इण गामे ॥ आव्यो संघ सजी सनूर, मन आणंद पामे ॥ कंचनमय प्रसाद कीध, उत्तंग उदार ॥ मंडप तोरण विविध जाल, मालित चउ बार ॥ धणु पण सय मित्त मणि तणीए, थापी रुषजनी मूर्त्ति ॥ दान दयाकर तिर्थथी, पसरी जग जस कीर्त्ति ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ रुषजनी प्रतिमा मणिमयी, जरतेश्वर कीधी ॥ ते प्रतिमा बे इणे गिरी, एह वात प्रसिद्धि ॥ देखे दरिसण कोय जास, मानव इणे लोके ॥ त्रीजे जवे जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके ॥ स्वर्णगुफा पश्चिम दिशेए, पूजे जास अहिगण ॥ दान सुहंकर विमलगिरो, ते प्रणमुं हित आण ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ चैत्री तप तीरथ नावतो, अनुलवमां आतम रा
सतो ॥ रिसहेसर जिन नवि नजो, जिम थाये नवजल
शुं त्यजो ॥ १ ॥ जयवंता वरतो जिनवरा, तिहुअणवर
नवियण हितकरा ॥ पुंडरिक तपो विधि जाणता, चैत्री
पूनम दिवस वखाणता ॥ २ ॥ नय गम पर्याये पूरियो,
नवि पाखंडीये चूरियो ॥ जिनवरनो आगम मन धरो,
जिम डुर्मति डुःकृत परिहरो ॥ ३ ॥ जिन शासन देवी
चक्केसरी, जिन हेते दान द्यो इश्वरी ॥ जिन शासन उ
दय वधारजो, चैत्री तप विघन निवारजो ॥४॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ शत्रुंजय महिमा, प्रगट्यो जेहथी सार ॥ चैत्री
पूनम दिन, आप्यो एह उदार ॥ रिसहेसर सेवा, सिर
वहो धरी आणंद ॥ तिहुंअण नवि कैरव, विपिन विका
शन चंद ॥ १ ॥ जिनवर उपदेशे, नरतादिक नृप ठेक ॥
शत्रुंजय शिखरे, चैत्य कराव्यां अनेक ॥ ते जिन आरा
हो, नक्ति धरी अति ठेक ॥ आतम अनुनावी, वाधे
वृद्धि विशेष ॥ २ ॥ शत्रुंजय सिहरे, समोसर्या जिनरा

ज ॥ आगम उपदेशे, प्रतिबोधी सुसमाज ॥ ते आगम निसुणी, चैत्री तप करो सार ॥ पुंडरिक मुनिसर परें, लेशो जय जयकार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी, शासन चिंताकारी ॥ रिसहेसर सेवा, रसिक वसे सुखधारी ॥ विमलाचल सेवक, विघन निवारो माइ ॥ श्री विजयराज सूरि, शिष्य कहे चित्तलाइ ॥ इति द्वितीय थोय जोडो॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ वेलनी देशी ॥ श्री सिद्धाचल शत्रुंजय, सिद्ध क्षेत्र अभिराम ॥ दर्शन करतां दुरगति त्रूटे, बूटे बंध निधान ॥ श्री रिसहेसर पट्ट धुरंधर, असंख्यात नर राय ॥ श्री आदित्ययशाथी यावत, अजित जिनेश्वर ताय ॥ १ ॥ चउ दस इग इग, चउ दस इण विध ॥ थइ श्रेणि असंख्यात सिद्ध, दंडिका मांहि सघलो, एह अछे अवदात ॥ सर्वार्थसिद्धने शिवगति विण, त्रीजी गति नवि पामी ॥ तिणे पण ए तीरथ फरस्यो, वंदो भवि शिर नामी ॥ २ ॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, दो कोडी मुनि संघाते ॥ ए गिरी सेव्याथी शिवगति पाम्या, सकल कर्म निपाते ॥ श्री आदीश्वर सुतना नंदन, द्राविड वारिखिल जाण ॥ काति पूनम दिन

दश कोमी, ऋषि युत्त लहे निर्वाण ॥ ३ ॥ अष्टादश अक्षोहिणी दलना, चूरक जे बलवंत ॥ गोत्र निकंदन करीने संच्यो, जेणे पाप अनंत ॥ ते पण एहज तीरथ उपरे, करी अणसण उच्चार ॥ उत्तम नर ते पांचे पांडव, पाम्या नव जल पार ॥ ४॥ त्रण कोडी ने लाख एकाणुं, ऋषियुत राम मुणिंद ॥ तिम नारदादिक साधु अनंता, पाम्या पद महानंद ॥ ते माटे ए गिरीनुं साचुं, सिद्ध क्षेत्र इति नाम ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर विनयी, दान करे गुणग्राम ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ इति देववंदन चोथो जोमो संपूर्ण ॥ अहीयां नक्तामर स्तोत्र कहीये, अने जे पूर्वे विधि लख्यो ठे तेथी चोगुणो विधि करीने पांचमा जोमानो प्रारंन करीये ॥

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ सगरादिक नरपति अनेक, इणे पर्वत आव्या ॥ विविध विचित्र विराजमान, प्रासाद कराव्यां ॥ नक्ति धरी जिनवर तणी, बहु प्रतिमा थापी ॥ तिणे महि यलमां तेहनी, कीरति अति व्यापी ॥ सुरपति नरप

तिना थया ए, इहां बहु उद्धार ॥ ते शत्रुंजय सेविये, दान सकल सुखकार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ एह गिरी उपरे आदि देव, प्रभु प्रतिमा वंदो ॥ रायण हेठे पादुका, पूजी आणंदो ॥ एह गिरीनो म हिमा अनंत, कुण करे वखाण ॥ चैत्री पूनमने दिवसे, तेह अधिको जाण ॥ एह तीरथ सेवो सदाए, आणो भक्ति उदार ॥ श्री शत्रुंजय सुख दायको, दानविजय जयकार ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पूनमने दिवस, शत्रुंजय भेटे ॥ भक्ति धरे जे भव्य लोक, ते भव दुःख मेटे ॥ आदिश्वर जिननी अमूल, पूजा विरचावे ॥ इति भीति सघली टले, सु ख संपद पावे ॥ परमातम परकाशथी ए, प्रगटे परमा नंद ॥ श्री विजय राज सूरीश्वर, दान अधिक आ नंद ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ परम सुख विलासी, शुद्ध चिद्रूप भासी ॥ स

हृज रुचि विकासी, मोक्ष आवासवासी ॥ मद मदन निवासी, विश्वथी जे उदासी, ऋषज्ञ जिन अनासी, वंदीये ते निरासी ॥ १ ॥ जिनवर हितकारा, प्राप्त संसार पारा ॥ कृत कपट विदारा, पूर्ण पुण्य प्रचारा ॥ कलिमल मलहारा, मर्दितानंग चारा ॥ दुःख विपिन कुगारा, पूजीये प्रेम धारा ॥ २ ॥ प्रबल नयन प्रकाशा, शुद्ध निक्षेप वासा ॥ विविध नय विलासा, पूर्ण नाण व ज्ञासा ॥ परि हरि तक दासा, दत्त दुर्वादि वासा ॥ ज्ञवि जन सुणि खासा, जैन वाणी जयासा ॥ ३ ॥ सकल सुर विशिष्टा, पालिता नेक शिष्टा ॥ गरिम गुण गरिष्टा, नासिता शेषरिष्टा ॥ जनम मरण निष्टा, दान लीला पदिष्टा ॥ हरतु सकल दुष्टा, देवि चक्का वरिष्टा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ विमलाचल तीरथ सुंदरु, एक शत अरुनाम सुहंकरु ॥ इति उपद्रव संहरू, जस नामे लहीये सुख नरू ॥ तसु सिहरे श्री रिसहेसरु, मूरति ले महिमा सायरु ॥ जपतां जस नाम गुणायरू, पामी जे शिवसं पद तरू ॥ १ ॥ चउवीशी जिनवरा, एक नेमी जिना

श्रेवीश वरा ॥ विमलाचल आव्या सादरा, जस सेवे सुरनर किन्नरा ॥ वली कोमाकोमी मुनीश्वरा, अणस ण करी निर्वृत्तिधरा ॥ ए तीरथ फरसो नवि नरा, चैत्री पूनम दिनगत रूरा ॥ १ ॥ उपदेशी वाणी जिनेश्वरे, ते श्रुतिपथ आणी गणधरे ॥ ते अंगादिक रचना करे, जिहां जीवादिक नांख्या विवरे ॥ ते निसुणि नवि उ छाह धरे, पुंडरिकादिक तप आदरे ॥ ते आगम जग डुरमति हरे, शिवनारी मेलो दृढ करे ॥ ३ ॥ वज्रसेन सूरीश्वरनी वाणी, सांजलीने मन ममता नाणी ॥ पञ्चरकाण कर्युं तिणे शुन नाणी, तेहथी थयो व्यंतर सुर नाणी ॥ तेह यक्ष कपर्दि बहु माणी, मुज डुःख दोहग नांखो ताणी ॥ श्री विजयराज गुरु गुण खाणी, एम दान कहे सुणो नवि प्राणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥ राग गोमी ॥

॥ मन लागो ॥ ए देशी ॥ नव जगति नविजन धरी, नेटो ए गिरीराय रे ॥ ए तीरथ वारू ॥ अति शय गुण ए गिरीतणा, एक मुखे न कहेवायरे ॥ ए ती रथ वारु ॥ १ ॥ जोयण दश जस चुलिघ, पंचास जो

यण विस्तार रे ॥ ए० ॥ आठ जोयण उन्नतपणे, एह मान कृषनने वारे रे ॥ ए० ॥ २ ॥ इणठामे आदिसरू, साथे बहु परिवार रे ॥ ए० ॥ रायण रुंख समोसस्या, पूर्व नवाणुं वार रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ थावच्चा सुत मुनिवरु, तिम शुकराज मुनीश रे ॥ ए० ॥ पंथग शेलग इणि गिरी, आप थया जगदिश रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ सांब प्रद्यु म्न आदि जिहां, असंख्यात मुनिराय रे ॥ ए० ॥ शाश्वत सुख पाम्युं सही, वंदूं तेहना पाय रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ सीमंधर स्वामी उपदिशे, परषद बार मझार रे ॥ ए० ॥ इंद्रप्रते कहे भरतमां, एक शत्रुंजय सार रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ इम निसुणी ए गिरी नमी, आव्या कालिकसूरि पा स रे ॥ ए० ॥ पूछी विचार निगोदना, वात कही तव खास रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ प्रतिमा चैत्य थया इहां, तिम असंख्य उद्धार रे ॥ ए० ॥ चैत्री पूनम दिन एहनो, महिमा भाख्यो अपार रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ चैत्री उत्सव जे करे, ते लहे भव दुःख भंग रे ॥ ए० ॥ श्री विजय राज सूरीसरू, दान अधिक उछरंग रे ॥ ए० ॥ ए ॥ इति स्तवनं ॥ पछी नमुत्थुणं जयवीयराय संपूर्ण कही देववंदनभाष्य कहीये अने विधि पूर्वे लख्यो छे तेहथी

पांच गुणो करीये ॥ इति पंचम देववंदन जोडो संपूर्ण॥

॥ इति मुनि श्री दानविजयजी कृत चैत्री पूनमना देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमल सूरि कृत चैत्री ॥

॥ पूनमना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि लखीये छैये ॥

॥ प्रथम प्रतिमा चार मांडीये तथा चोमुख होय तो चोमुख मांडीये. तिहां प्रथम टीकी दश करवी, फुलना हार दश, अगरबत्ती दशवार उखेववी, दश वाटनो दीवो करवो, दशवार घंट वजाववो, दशवार चामर विंजवा, दश साथीया चोखाना करवा, जेटली जातीनां फल मले ते सर्व जातीनां प्रत्येके दश दश मूकवां, सोपारी प्रमुख सर्व दश दश मूकवा, नैवेद्य मध्ये साकरीया चणा तथा एलचीदाक, द्राख, खारेक, शिंगोडां, निंबजां, पीस्तां, बदामादि मेवा जे जातिना मले ते सर्व जातिना प्रत्येके दश दश वानां ढोकवां. अखीयाणुं गोधूम शेर त्रण, लीलां नालियेर चार मूकवां, इत्यादिक

विधि मेलवीने देव वांदवा, पछी श्री सिद्धाचलजीनां एकवीश नाम लीजे, ते नाम लखीये छैये.

१ श्री शत्रुंजय. ८ श्री पद. १५ श्री महापद्म.
२ श्री पुंडरिक. ९ श्री पर्वतेंद्र. १६ श्री पृथ्वीपीठ.
३ श्री सिद्धक्षेत्र. १० श्री महातिर्थ १७ श्री सुभद्र.
४ श्री विमलाचल. ११ श्रीशाश्वतपर्व १८ श्री कैलास.
५ श्री सुरगिरी. १२ श्री दृढशक्ति. १९ श्री शतालमूल.
६ श्री महागिरी. १३ श्रीमुक्तिनिलय २० श्री अकर्मक.
७ श्री पुण्यराशि. १४ श्री पुष्पदंत. २१ श्री सर्वकामद

ए प्रमाणे एकवीश नाम लीजे ॥.

॥ अथ प्रथम त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ आदीश्वर अरिहंत देव, अविनाशी अमल ॥ अक्षय सरूपीने अनुप, अतिशय गुण विमल ॥ मंगल कमला केली वास, वासव नित्य पूजित ॥ तुझ सेवा हहकार वर, करतां कल कुंजित ॥ योजित युग आदि जिणे ए, सकल कला विज्ञान ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि गुण तणो, अनुपम निधि भगवान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ वंश इक्ष्वाग सोहावतो, सोवन वन काय ॥ ना

भिराय कुल मंडणो, मरुदेवी माय ॥ भरतादिक शत पुत्रनो, जे जनक सोहाय ॥ नारी सुनंदा सुमंगला, तस कंत कहाय ॥ ब्राह्मी सुंदरी जेहनी ए, तनया बहु गुण खाण, ज्ञानविमल गुण तेहना, संभारो सुविहाण ॥ २ ॥ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम नाथ प्रगट प्रताप, जेहनो जगे राजे ॥ पाप ताप संताप व्याप, जस नामे भाजे ॥ परम तत्त्व परमात्म रूप, परमानंद दाइ ॥ परम ज्योति जस जल हले, परम प्रभुता पाइ ॥ चिदानंद सुख संपदा ए, विलसे अक्षय सनूर ॥ ऋषभदेव चरणे नमे, श्री ज्ञानविमल गुण सूर ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण, रिसह जिणेसर देव ॥ सुरनर विद्याधर, सारे जेहनी सेव ॥ सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर शृंगार ॥ श्री नाभि नरेसर, मरुदेवीनो मल्हार ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेम विना सवि, समवसर्या सुखकार ॥ गिरी कं

डणे आवी, पहोता गढ गिरनार॥ चैत्री पूनम दिने, ते वंदूं जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगे, अंतगड सूत्र मझार ॥ सिद्धाचल सीध्या, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरी, सवी तिरथ शिरदार॥ जिणे भेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केश्वरी, शासननी रखवाली ॥ ए तीरथ केरी, सान्निध्य करे संभाली॥ गिरुओ जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञान विमलसूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ त्रेशठ लख पूरव राज करी, लीये संयम अति आणंद धरी ॥ वरस सहेंस केवल लच्छी वरी, एक लख पूर्वे शिवरमणी वरी ॥१॥ चोवीशे पहिला ऋषभ थया, अनुक्रमे त्रेवीश जिणंद भया ॥ चत्री पूनम दिन तेह नमो, जिम दुर्गति दुखडां दूर गमो ॥ २ ॥ एकवीश एकतालीश नाम कह्यां, आगमे गुरु वयणे तेह लह्यां ॥ अतिशय महिमा इम जाणीये, ते निशि दिन मनमां आणीये ॥ ३ ॥ शत्रुंजय गिरीनां सवि विघन हरे, चक्के सरी देवी भगति करे ॥ कहे ज्ञानविमल सूरि सरू, जिन शासनने होजो जयकरू ॥४॥ इति द्वितीय थोय जोडो॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ सिद्धाचल गुण गेह, जवि प्रणमो धरी नेह ॥ आज हो सोहे मन मोहे तीरथ राजीयो जी ॥ १ ॥ आदीश्वर अरिहंत, मुगतिवधूनो कंत, आज हो पूरव नवाणुं वार आवी समोसर्या जी ॥ २ ॥ सकल सुरासुर राज, किन्नर देव समाज, आज हो सेवारे सारे कर जोडी करी जी ॥ ३ ॥ दरशनथी दुःख दूर, सेवे सुख जरपूर, आज हो एणे रे कलिकाले कल्पतरु अछे जी ॥ ४ ॥ पुंडरिक गिरी ध्यान, लहीये बहु यश मान, आज हो दीपेरे अधिकी तस ज्ञान कला घणी जी ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ विधि ॥

॥ शांतिकरं कहीये, पछी नवकार दश गणवा, पछी श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम नमस्कारपूर्वक लेवां. जेम श्री शत्रुंजयाय नमः श्री पुंडरिकाय नमः इत्यादि एकवीश नाम लेइ पछी जंडार ढोइये. पछी खमासमण दश देइ प्रदक्षिणा दश देवी, एटले एक जोडानो विधि थयो ॥ इति ॥

॥ अथ देववंदनना बीजा जोडानो विधि पण प्रथ

मनी प्रमाणेज छे. वस्तु पण तेहीज सर्व मेलववी, परंतु एटलो फेर के दश दश वस्तुने ठेकाणे वीश वीश वस्तु मूकवी. अखीयाणुं तेहिज मूकवुं. अने शांतिकरंने स्थानके नमिउण कहेवुं ॥ इति विधि ॥

॥ अथ बीजा जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ नाभि नरेसर वंश मलय, गिरी चंदन सोहे ॥ जस परिमलशुं वासियो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ अपछर रंभा उर्वशी, जेहना अवदात ॥ गाये अहोनिश हर्षशुं, मरुदेवी मात ॥ निरुपाधिक जस तेजशुं, ए सम सय सुखनो गेह ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, अक्षय अनंती जेह ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ बीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ जिम चैत्री पूनम तणो, अधिको विधु दीपे ॥ ग्रह गण तारादिक तणा, परम तेजने झींपे ॥ तिम लौकिकना देव ते, तुम्ह आगे हीणा ॥ लोकोत्तर अतिशय गुणे, रहे सुरनर लीना ॥ निर्वृत्ति नगरे जायवा ए, एहिज अविचल साथ ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे, भव भव ए मुज नाथ ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ अजर अमर अकलंक अरुज, निरुज अविना शी ॥ सिद्ध सरूपी शंकरो, संसार उदासी ॥ सुख संसारे नोगवो, नही नोग विलासी ॥ जीती कर्म कषायने, जे थयो जित काशी ॥ दासो आशि अवग णीए, समीचीन सर्वांग ॥ नय कहे तस ध्यानें रहो, जिम होय निर्मल अंग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण रिसह जिणंद, पाप तणो उन्मूले कंद ॥ मरुदेवी मातानो नंद, ते वंदूं मन धरी आनंद ॥ १ ॥ त्रण चोवीशी बहुत्तर जिना, नाव धरी वंदूं एक मना ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, तिम अनंत जिनवर धर्यो ध्यान ॥ २ ॥ जेहमां पंच कह्या व्यवहार, नय प्रमाण तणा विस्तार ॥ तेहना सुणवा अर्थ विचार, जिम होय प्राणी अल्प संसार ॥ ३ ॥ श्री जिनवरनी आणा करे, जग जसवाद घणो विस्तरे ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि सान्निध्य करे, शासन देवी संकट हरे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ प्रणमो नविया रिसह जिणेश्वर, शत्रुंजय केरो राय जी ॥ वृषन्न लंछन जस चरणे सोहे, सोवन व रणी काय जी ॥ नरतादिक शत पुत्र तणो जे, जनक अयोध्या राय जी ॥ चैत्री पूनमने दिन जेहना, महो टा महोत्सव थाय जी ॥ १ ॥ अष्टापद गिरी शिवपद पाम्या, श्री रिसहेसर स्वामी जी ॥ चंपाये वासुपूज्य नरेसर, नंदन शिवगति गामी जी ॥ वीर अपापापुर गिरनारे, सिध्या नेम जिणंदो जी ॥ वीश समेतगिरी शिखरे पहोता, एम चोवीशे वंदो जी ॥ २ ॥ आगम नागमता परे जाणो, नवि विषनो करे नाश जी ॥ पाप ताप विष दूरे करवा, निशि दिन जेह उपासे जी ॥ ममता कंचूकी कीजे अलगी, निर्विषता आदरीये जी॥ इणी परे सहज थकी नव तरीये, जिम शिवसुंदरी व रीये जी ॥ ३ ॥ कवरु जक्ष प्रत्यक्ष थइने, जेहना परता पूरे जी ॥ दोहग दुर्गति दुर्जननो करे, संकट सघलां चूरे जी ॥ दिन दिन दोलत दीपे अधिकी, ज्ञानविम ल गुण नूर जी ॥ जीत तणा निशान वजावो, बोधि बीज नरपूर जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ नायकानी देशी ॥ एक दिन पुंमरिक गणधरु रे लाल, पूछ्या श्री आदि जिणंद ॥ सुख कारी रे ॥ कहीये नवजल उतरी रे लाल, पामीश परमानंद ॥ नव वारी रे ॥ ए० ॥ १ ॥ कहे जिन इण गिरी पामशो रे लाल, ज्ञान अने निर्वाण ॥ जयकारी रे ॥ तीरथ महिमा वाधशे रे लाल, अधिक अधिक मंमाण ॥ नि धारी रे ॥ ए० ॥ २ ॥ एम निसुणी तिहां आवीया रे लाल, घाति कर्म कस्यां दूर ॥ तम वारी रे ॥ पंच कोमी मुनिये परिवस्या रे लाल, हुवा सिद्धि हज्जूर ॥ नव वारी रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिन कीजीये रे लाल, पूजा विविध प्रकार ॥ दिल धारी रे ॥ फल प्रदक्षिणा काउस्सग्ग रे लाल, लोगस्स थुइ नमुक्कार ॥ नर नारी रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ दश वीश त्रीश चालीश नलारे लाल, पचास पुष्फ माल ॥ अति सारी रे ॥ नरनव लाहो लीजीये रे लाल, जिम होय ज्ञान विशाल ॥ मनोहारी रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ पछी नमिऊण कहेवुं ॥ ॥ इति द्वितीय जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो प्रारंभः ॥

॥ ए त्रीजा जोडामां त्रीश वानां ढोववां ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रय लिख्यते ॥

॥ आदीश्वर जिनरायनो, पहेलो जे गणधार ॥ पुंडरिक नामे थयो, भवि जनने सुखकार ॥ चैत्री पूनमने दिने, केवलसिरि पामी ॥ इण गिरी तेहथी पुंडरिक, गिरी अभिधा पामी ॥ पंच कोडि मुनिशुं लह्या ए, करी अनशन शिव ठाम ॥ ज्ञानविमल सूरि तेहना, पय प्रणमे अभिराम ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ जाइ जुइ मालती, दमणो ने मरुवो ॥ चंपक केतकी कुंद जाति, जस परिमल गिरुवो ॥ बोल सिरि जासुल वेली, वालो मंदार ॥ सुरभि नाग पुन्नाग अशोक, वली विविध प्रकार ॥ ग्रंथिम वेढिम चउविधे ए, चारु रची वर माल ॥ नय कहे श्री जिन पूजतां, चैत्री दिन मंगल माल ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पूनमने दिने, जे इण गिरी आवे ॥ आठ

सत्तर बहु नेदशुं, जे नक्ति रचावे ॥ आदीश्वर अरिहंतनी, तस सघलां कर्म ॥ दूरे टले संपद मले, नांजे नव नर्म ॥ इह नव परनव नव नवे ए, ऋद्धि वृद्धि कल्याण ॥ ज्ञानविमल गुणमणि तणो, त्रिनुवन तिलक समान ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय जोडा बे प्रारंनः ॥

॥ चैत्री पूनम दिन, शत्रुंजय गिरी अहिठाण ॥ पुंडरिक वर गणधर, तिहां पाम्या निर्वाण ॥ आदीश्वर केरा, शिष्य प्रथम जयकार ॥ केवल कमला वर, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १ ॥ चार जंबूद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अड धातकी खंडे, सुरनर सारे सेव ॥ अड पुष्कर अर्धे, इणिपरे वीश जिनेश ॥ शंप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण सम, नवजल नीधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मत्स्य तणा नय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ नवि नाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य, कारी विघन विदारे ॥ समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरी सेवो, जेम पामो नवपार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ वंदूं सदा शत्रुंज तीर्थ राजे, चूडामणि आदि जिणंद गाजे ॥ दुठ्ठ कम्मठ विरोध भांजे, मानुं शिवा रोहण एह पाजे ॥ १ ॥ देवाधिदेवा कृत देव सेवा, संभारिये ज्यूंगज चित्त रेवा ॥ सव्वेवि ते थुत्ति थुया महीया, अणागया संपइ जेअइया ॥ २ ॥ जे मोहना योध वडा कहाया, चत्तारि दुठ्ठा कसिणा कसाया ॥ ते जीतीये आगम चक्खु पामी, संसार पारुत्तरणाय धामी ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुह देव जुत्ता, रक्खा करी सेवय भाव पत्ता ॥ दियो सया निम्मल नाण लच्छी, होवे पसन्ना शिव सिद्धि लच्छी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ शेत्रुंजे जइये लालन ॥ ए देशी ॥ सिद्ध गिरी ध्यावो भविका, सिद्ध गिरी ध्यावो ॥ घरे बेठां पण बहु फल पावो, भविका बहु फल पावो ॥ १ ॥ नंदीश्वर यात्रे जे फल होवे ॥ तेथी बमणुं फल ते कुंडल गिरी होवे ॥ भ० ॥ कुं० ॥ २ ॥ त्रिगणुं रुचक गिरी चउ गजदंता ॥ तेथी बमणुं फल जंबु महंता ॥ भ० ॥

जं० ॥ ३ ॥ षट्गणुं धातकी चैत्य जुहारे, बत्रीशगणुं फल पुष्कर विहारे ॥ ज० ॥ पु० ॥ ४ ॥ तेहथी तेरस गणुं मेरु चैत्य जुहारे, सहसगणुं फल समेतशिखरे ॥ ज० ॥ स० ॥ ५ ॥ लाखगणुं फल अंजन गिरी जुहारे, दश लखगणुं फल अष्टापद गिरनारे ॥ ज० ॥ अ० ॥६॥ कोडीगणुं फल श्री शत्रुंजे भेटे, जेमरे अनादिनां दु रित उमेठे ॥ ज० ॥ दु० ॥७॥ भाव अनंत अनंत फल पावे, ज्ञानविमल सूरि इम गुण पावे ॥ ज० ॥ इ० ॥८॥ इति स्तवनं संपूर्ण ॥ अहीं जयतिहुअण कहेवुं, पछी त्रीश नवकार गणवा, पछी श्री शत्रुंजयायनमः ॥ एवं एकवीश नाम सिद्धगिरीनां नमस्कार पूर्वक गणवां, पछी भंभार ढोवो एटले रूपानाणुं मूकवुं, पछी त्रीश खमासमण देवां, पछी त्रीश प्रदक्षिणा देवी एटले आ जोडानो विधि संपूर्ण थयो ॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ अहीयां पूर्वोक्त वस्तु सर्व चालीश चालीश ढोववी, तेमज अखीयाणुं पण मूकवुं अने बीजो पण सर्व विधि करवो ॥

॥ अथ त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, पुंडरिक गिरी साचो ॥ विमलाचलने तिर्थ राज, जस महिमा जाचो ॥ मुक्ति निलय शत कूट नाम, पुष्प दंत जणीजे ॥ महा पद्मने सहस्त्र पत्र, गिरीराज कहीजे ॥ इत्यादिक बहु जांतिशुं ए, नाम जपो निरधार ॥ धीरवीमल कवि राजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ रजत कनक तणि जडितनो, जूषण विरचावो ॥ तिलक मुकुट कुंडल युगल, बेहेरखा बनावो ॥ रुचिर ज्योति मोति तणा, कंठे ठवो हार ॥ कणदोरो श्री फल करे, आपीजे सार ॥ एणि परे बहु विध जूषणे, शोजावो जिन देह ॥ ज्ञानविमल कहे तेहने, शिववधु वरे धरी नेह ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम देव शत्रुंजय गिरी मंडन ॥ जवियण मन आनंद करण, दुख दोहग खंदण ॥ सुरनर किन्नर नमे तुज, जगतिशु पाया ॥ पाप पंक फेडे समत्र, प्रजु

त्रिभुवन राया ॥ ज्ञानविमल प्रभु तुम तणे, चरणे शरणे राखो ॥ कर जोडीने वीनवे, मुक्तिमार्ग मुज दाखो ॥३॥

॥ अथ थोय जोडा बे लिख्यते ॥

॥ ऋषभ देव नमुं गुण निर्मला, दूधमांहे भेली सीतोपला ॥ विमल शैल तणा शणगार छे, भव भव मुज चित्तें ते रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हशे विचरंता ते वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पडिमा प्रणमुं नितु झगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम अक्षर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ भविक देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजो मल अपहरे ॥३॥ जिन शासन भासन कारिका, सुर सुरी जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुता दिये दंपती, दुरित दुष्ट तणा भय झींपती ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्लोक ॥ मालीनी वृत्तं ॥ भवि मलि भरी आवो, भावना भव्य भावो ॥ वीमलगिरी वधावो, मोतीयां थाल लावो ॥ जो होय शिव जावो, चित्त तो वात भावो ॥ न होय दुशमन दावो, आदि पूजा रचावो ॥

॥१॥ शुभ केशर घोली, मांहे कपूर चोली ॥ पहेरी सित पटोली, वासीयें गंध धूली ॥ भरी पुष्कर भोली, टालिये दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजिये भाव भोली ॥ २ ॥ शुभ अंग अग्यार, तेम उपांग बार ॥ वली मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोग द्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद षट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टि सूरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख दंदा ॥ ज्ञान विमल सूरिंदा, साध्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥ ए गिरुड गिरीराजीउ, पणमीजे भावे ॥ भव भव संचित आकरां, पातकडां जावे ॥ वज्रलेप सम जे होवे, ते पण तेम दूरें ॥ एहनुं दर्शन कीजीये, धरी भक्ति पडूरें ॥ २ ॥ चंद्रशेखर राजा थयो, निज भगिनी लुब्धो ॥ ते पण ए गिरो सेवतां, क्षण मांहे सीधो ॥ ३ ॥ शुक राजा जय पामीयो, एहने सुपसाये ॥ गोहत्यादिक पाप जे, ते दूर पलाये ॥ ४ ॥ अगम्य अपेय अभक्ष जे, कीधां

जेणे प्राणी ॥ ते निर्मल इण गिरीये थया, ए जिनवर वाणी ॥ ५ ॥ वाघ सर्प प्रमुखा पशु, ते पण शिव पा म्या ॥ ए तीरथ सेव्याथकी, सवि पातक वाम्या ॥६॥ चैत्री पूनमे वंदतां, टले दुःख कलेश ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, होये सुजस विशेष ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अहीं भक्तामर अथवा कल्याणमंदिर कहेवुं, पछी चालीश नवकार गणवा, श्री सिद्धाचलजीनां एकवीश नाम नमस्कार पूर्वक गणवां, पछी भंडार मूकवो, चा लीश खमासमण देवां, चालीश प्रदक्षिणा देवी ॥ इति देववंदननो चोथो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोडो ॥

॥ अहींयां पूर्वोक्त सर्व वस्तु प्रत्येके पच्चाश पच्चाश ढोववी, तेमज अखीयाणुं अने श्रीफल पण ढोववां. बीजो पण पूर्वली परे सर्व विधि करवो.

॥ अथ त्रण चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ शेत्रुंज शिखरे चढिय स्वामी, कहीये हुं अर्चि शुं ॥ रायण तरुयर तले पाय, आणंदे अरचिशुं ॥ न्हवण विलेपन पूजना, करी आरती उतारीश ॥ मं गल दीपक ज्योति थुति, करी दुरित निवारीश ॥ धन्य

धन्य ते दिन माहरो ए, गणीश सफल अवतार ॥ नय कहे आदीश्वर नमो, जिम पामो जयकार ॥१॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ तुज मूर्त्तिने निरखवा, मुज नयणां तरसे ॥ तुम गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे ॥ काया अति आणंद मुज, तुम युगपद फरसे ॥ तो सेवक तार्या विना, कहो किम हवे सरशे ॥ एम जाणीने साहेबा ए, नेक नजरे मोहि जोय ॥ ज्ञानविमल प्रभु सुनजरथी, ते शुं जे नवि होय ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ मादल ताल कंसाल सार, झुंगलने भेरी ॥ ढोल ददामा दडवडी, शरणाइ नफेरी ॥ श्री मंडल वीणा रबाप, सारंगी सारी ॥ तंबूरा कठ ताल शंख, झल्लरी झणकार ॥ वाजित्र नव नव छंदशुं ए, गाने गुणीजन गीत ॥ ज्ञानविमल प्रभुता लहो, जिम होये जगे जस रीत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा बे लिख्यते ॥

॥ जहां सगण्योतेर कोडा कोडी, तेम पंचाशी ल

खवलो जोडी, चुम्मालीश सहस्स कोडी ॥ समवसरथ्या जिहां एती वार, पूर्व नवाणुं एम प्रकार, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १ ॥ सहस कूट अष्टापद सार, जिन चोवीश तणा गणधार, पगलांना विस्तार ॥ वली जिन बिंब तणो नहीं पार, देहेरी थंभे बहु आकार, वंदूं विमलगिरी सार ॥२॥ एंशी सीतेर साठ पंचास, बार जोयण माने जस विस्तार, इगती चउपण आर ॥ मान कह्युं एहनुं निरधार ॥ महिमा एहनो अगम अपार, आगम मांहे उदार ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिन शुभ भावे, समकित दृष्टि सुर नर आवे, पूजा विविध रचावे ॥ ज्ञानविमल सूरि भावना भावे, दुरगति दोहग दूर गमावे, बोध बीज जस पावे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ शेत्रुंज साहेब प्रथम जिणंद, नाभि भूप कुल कमल जिणंद, मरुदेवीनो नंद ॥ जस मुख सोहे पूनम चंद, सेवा सारे इंद्र नरिंद, उन्मूले दुःख दंद ॥ वांछित पूरण सुरतरु कंद, लंछन जेहने सुरभि नंद, फेडे भव भय फंद ॥ प्रणमे ज्ञानविमल सूरिंद, जेहनी अहोनिश पद अरविंद, नामे परमानंद ॥ १ ॥ श्री

सीमंधर जिनवर राजे, महाविदेहे बार समाजे, भावे इम भविका जे ॥ सिद्धक्षेत्र नामे गिरी राजे, एहज भरतमांहे ए गाजे, भवजल तरण जहाजे ॥ अनंत तीर्थंकर वाणी गाजे, भवि मन केरा संशय भांजे, सेवक जनने निवाजे ॥ वाजे ताल कंसाल पवाजे, चैत्री महोत्सव अधिक दीवाजे, सुरनर सजी बहु साजे ॥ २ ॥ रागद्वेष विष खीलण मंत, भांजी भवभय भावठ भ्रांत, टाले दुःख दुरंत ॥ सुख संपत्ति होये जे समरंत, ध्याये अहोनिश सघला संत, गाये गुण महंत ॥ शिव सुंदरी वश करवा तंत, पाप ताप पीलण ए जंत, सुणीए ते सिद्धांत ॥ आणी मोटी मननी खांत, भवियण ध्यावो एकण चित्त, रात वेला उल हुंत ॥ ३ ॥ आदि जिनेश्वर पद अनुसरती, चतुरंगुल ऊंची रहे धरती, दुरित उपद्रव हरती ॥ सरस सुधारस वयण झरंती, ज्ञानविमल गिरी सांनिध्य करंती, दुशमन दुष्ट दलंती॥ दाडिम पक्क कलीसम दंती, ज्योतिगुण इहां राजी पंती, समकित बीज वपंती ॥ चक्केसरी सुरसुंदरी हुंती, चैत्रीपूनम दिने आवंती, जय जयकार भणंती ॥ ४ ॥
॥ इति द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ तीरथ वारु ए तीरथ वारु, सांभलजो सो तारु रे ॥ भवजलनिधि तरवा भविजनने, प्रवहण परे ए तारु रे ॥ ती० ॥ १ ॥ ए तीरथनो महिमा मोटो, नवि माने ते कारु रे ॥ पार न पामे कहेतां कोइ, पण कहिये मति सारु रे ॥ ती० ॥ २ ॥ साधु अनंता इहां कणे सिधा, अंतकर्मना कीधा रे ॥ अनुभव अमृत रस जिणे पीधा, अभय दान जगे दीधां रे ॥ ती० ॥ ३ ॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, द्रविड वारिखिल्ल जाणो रे ॥ थावच्चा शुको सेलग पंथग, पांडव पांच वखाणो रे ॥ ॥ ती० ॥ ४ ॥ राम मुनि ने नारद मुनिवर, शंख प्रद्युम्न कुमार रे ॥ महानंद पद पाम्या तेहना, मुनिवर बहु परिवारो रे ॥ ती० ॥ ५ ॥ तेह भणी सिद्धक्षेत्र एहनुं, नाम थयुं निरधार रे ॥ शत्रुंजय कल्पे माहात्म्ये, एहनो बहु अधिकार रे ॥ ती० ॥ ६ ॥ तीरथ नायक वांछित दायक, वीमलाचल जे पावे रे ॥ ज्ञानविमल सूरि कहे ते भविने, धर्मशर्म घरे आवे रे ॥ ती० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं समाप्तं ॥ ए देव वांदवाना पांचमा जोडानो विधि थयो. इहां पछवाडेथी चैत्यवंदनभाष्य कहेवुं ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमल सूरि कृत अगीआर गणधरना देववंदन प्रारंज्ञः ॥

॥ एनो विधि आवी रीते के, प्रथम थापना थापी इरियावही पडिक्कमीने चैत्यवंदन कहेवुं ते लखे टेः—

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंज्ञः ॥

॥ बिरुद धरी सर्वज्ञनुं, जिन पासे आवे ॥ मधुर व चने वीरजी, गौतम बोलावे ॥ पंच जूतमांहे थकी, ए उपसे विणसे ॥ वेद अरथ विपरीतथी, कहो किम जव तरशे ॥ दान दया दम त्रिहुं पदे ए, जाणे तेहज जीव ॥ ज्ञानविमल धन आतमा, सुख चेतना सदैव ॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥ इहां जंकिंचि नाम तिथ्थं, नमुथ्थु णं० अरिहंत चेइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंताणं संपूर्ण कहीने पछी थोय कहीये ते लखीये छैये.

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ कनक तिलक जाले ॥ ए देशी ॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गुरु गणपति गाउं, गौतम ध्यान ध्याउं ॥ सवि सुकृत सबाउं, विश्वमां पूज्य थाउं ॥ जग जीत बजाउं,

कर्मने पार जाउं ॥ नव निधि रिद्धि पाउं, शुद्ध समकित गाउं ॥ १ ॥ सवि जिनवर केरा, साधु मांहे वडेरा ॥ दुगवन अधिकेरा, चउद सय सुन्न लेरा ॥ ह्या दुरित अंधेरा, वंदीये ते सवेरा ॥ गणधर गुण घेरा, नाम छे तेह मेरा ॥ २ ॥ सवि संशय कापे, जैन चारित्र छापे ॥ तव त्रिपदी आपे, शिष्य सौन्नाग्य व्यापे ॥ गणधर पद थापे, द्वादशांगी समापे ॥ नवःदुख न संतापे, दासने इष्ट आपे ॥ ३ ॥ करे जिनवर सेवा, जेह इंद्रादि देवा ॥ समकित गुण मेवा, आपता नित्य मेवा ॥ नव जल निधि तरेवा, नौ समी तीर्थ सेवा ॥ ज्ञानविमल लहेवा, लील लच्छी वरेवा ॥ ४ ॥ इति थोय ॥ इहां नमुत्थुणं० जावंति अने नमो० कहीने स्तवन कहीये ते लखे छे.

॥ अथ गौतम स्तवन प्रारंन्नः ॥

॥ आज सखी संखेसरो, में नयणे निरख्यो ॥ ए देशी ॥ सकल समीहित पूरणो, गुरु गौतम स्वामी ॥ इंद्रन्नूति नामे नलो, प्रणमुं शिर नामी ॥ स० ॥ १ ॥ मगध देशमां उपन्यो, गोबर इति गाम ॥ वसुन्नूति द्विज पृथिवी तणो, नंदन गुण धाम ॥ २ ॥ ज्येष्ठा न

क्षत्रे जण्यो, सोवनवन देह ॥ वरस पंचाश घरे वसी, धर्यो वीरशुं नेह ॥ ३ ॥ त्रीश वरस छद्मस्थनो, पर्याय आराधे ॥ बार वरस लगे केवली, पछी शिवसुख साधे ॥ ४ ॥ वीर मोक्ष पहोता पछी, लह्या केवल मुक्ते ॥ राजगृहे ते पामीया, सवि लब्धिनी शक्ते ॥ ५ ॥ बाणु वरस सवि आउखुं, थया मास संलेषे ॥ जेहने शिर निज कर दीये, ते केवल देखे ॥ ६ ॥ पंचसया मुनिनो धणी, सवि श्रुतनो दरियो ॥ ज्ञानविमल गुणथी जिणे, तार्यो निज परियो ॥ ७ ॥ इति गौतम स्तवनं ॥

अहीयां जयवीयराय संपूर्ण कहीये, पछी गौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ए पाठ अगीयार वार गणीये, पछी अगीयार नवकार गणीये, पछी उन्ना थइने श्री गौतमस्वामि गणधर आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं एम कही अगीयार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कहीये. ए श्री प्रथम गणधर देवने वांदवानो विधि संपूर्ण थयो. एज रीते बीजा दश गणधरोने पण वांदवा. परंतु प्रत्येक गणधरनुं नाम, नमस्कार, स्तुति अने स्तवन ए चार जूदां कहेवां. तेमां पण वली चार थोयो मांहेली पाछली त्रण थोयो तो तेहीज कहीये

अने एक प्रथम थोयमां गणधर देवनुं नाम फेरवाय छे माटे ते प्रत्येक गणधरनी जूदी करेली छे. ए रीते सर्वत्र विधि जाणवो.

॥ अथ द्वितीय श्रीअग्निभूतिजी वंदनविधिः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ कर्म तणो संशय धरी, जिन चरणे आवे ॥ अ-ग्निभूति नामे करी, तव ते बोलावे ॥ एक सुखी एक छे दुःखी, एक किंकर स्वामी ॥ पुरुषोत्तम एके करी, केम शक्ति पामी ॥ कर्म तणा परभावथी ए, सकल जगत मंडाण ॥ ज्ञानविमलथी जाणीये, वेदारथ सुप्रमाण ॥ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारंभः ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ अग्निभूति सोहावे, जेह बीजो कहावे, गणधर पद पावे, बंधुने पक्ष आवे ॥ मन संशय जावे, वीरना शिष्य थावे, सुरनर गुण गावे, पुष्प वृष्टि वधावे ॥ १ ॥ ए प्रथम थोय कहीने पछी फरी प्रथम गणधरना वंदनमां जे "सवि जिनवर केरा" ए त्रण थोय कहेली छे ते कहीये ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ ढाल ॥ ललनानी देशी ॥ बीजो गणधर गाइये, अग्निभूति इति नाम ॥ ललना ॥ वसुभूति द्विज पृथिवी मायनो, नंदन गुण अभिराम ॥ ल० ॥१॥ बी० ॥ गोबर गाम मगध देशे, गौतम गोत्र रतन्न ॥ ल० ॥ कृत्तिका नक्षत्रे जनमियो, संशय कर्मनो मर्म ॥ ल० ॥ २॥ बी० ॥ वरस छेतालीश घर वस्या, व्रत पर्याये बार ॥ ल० ॥ शोल वरस केवल पणे, पंचसयां परिवार ॥ ल० ॥ ३ ॥ बी०॥ चिहुंत्तेर वरसनुं आउखुं, पाली पाम्या सिद्धि ॥ ल० ॥ मास भक्त संलेषना, पूर्ण ऋद्धि समृद्धि ॥ ल० ॥ ४ ॥ बी० ॥ वीर थकां शिव पामीया, राजगृही सुखकार ॥ ॥ ल० ॥ कंचन कांति झलहले, ज्ञानविमल गुणधार ॥ ल० ॥ ५॥ बी० ॥ इति श्री अग्निभूति स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ तृतीय श्री वायुभूतिजी वंदनविधिः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ वायुभूति त्रीजो कह्यो, तस संशय एह ॥ जीव शरीर बेहु एक छे, पण भिन्न न देह ॥ १ ॥ ब्रह्मज्ञान तपे करी, ए आतम लहीये ॥ कर्म शरीरथी वेगलो,

ए वेद सद्दहिये ॥ २ ॥ ज्ञानविमल गुण घन घणीए, जगमां केम होय एक ॥ वीर वयणथी ते लह्यो, आणी हृदय विवेक ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ वायुभूति वली भाइ, जेह त्रीजो सहाइ ॥ जिणे त्रिपदी पाइ, जीत भंभा वजाइ ॥ जिनपद अनुयायी, विश्वमां कीर्ति गाइ ॥ ज्ञानविमल भलाइ, जेहने नामे पाइ ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति थोय ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ त्रीजो गणपति गाइये, वसुभूति पृथिवी नंद लालरे ॥ स्वाती नक्षत्रे जाइउ, गौतम गोत्र अमंद ॥ ला० ॥ १ ॥ त्री० ॥ मगध देश गाम गोबरे, सगा सहोदर तीन ॥ ला० ॥ वरस बेंतालीश घरे वस्या, पछे जिन चरणे लीन ॥ ला० ॥ २ ॥ त्री० ॥ छद्मस्थ दश वरसनी, केवली वरस अढार ॥ ला० ॥ कंचन वन सवि आउखुं, सित्तेर वरस उदार ॥ ला० ॥ ३ ॥ त्री० ॥ राजगृहीये शिव पामीया, मास भगत सुखकार ॥ ला० ॥ पांचशें परिकर साधतो,

स्वि श्रुतनो ज्ञंकार ॥ ला० ॥४॥ त्री० ॥ वीर छते थया अणसणी, लब्धि सिद्धि दातार ॥ ला० ॥ ज्ञानविमल गुण आगरु, वायुभूति अणगार ॥ ला० ॥ ५ ॥ त्री० ॥ इति वायुभूति स्तवनम् ॥

॥ अथ चतुर्थ श्री व्यक्तजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ पंचभूतनो संशयी, चोथो गणि व्यक्त ॥ इंद्रजा लपरे जग कह्यो, तो किम तस सक्त ॥ १ ॥ पृथिवी पाणी देवता, इम भूतनी सत्ता ॥ पण अध्यातम चिं-तने, नहि तेहनी ममता ॥ २ ॥ इम स्याद्वाद मते क-रीए, टाल्यो तस संदेह ॥ ज्ञानविमल जिन चरणशुं, धरतो अधिक सनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ चोथो गणधर व्यक्त, धर्म कर्मे सुसक्त ॥ सुर नर जस भक्त, सेवता दिवस नक्त ॥ जि नपद अनुरक्त, मूढता विप्रमुक्त ॥ कृत करम विमुक्त, ज्ञान लीला प्रसक्त ॥ १ ॥ तथा "सन्ति जिनवर केरा" ए त्रण थोइ कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ झुंबखडानी देशी ॥ चोथो गणधर चोपशुं रे, वंदूं चित्त धरी भाव ॥ सलूणे साजनां ॥ कोल्लाग सन्नि वेशे थयो रे, पाम्यो भवजल नाव ॥ स० ॥ १ ॥ धन मित्र द्विज वारुणी प्रिया रे, नंदन दिये आणंद ॥ स० ॥ श्रवणनक्षत्रे जनमियो रे, भारद्वाज गोत्र अमंद ॥स०॥ ॥ २ ॥ वरस पचास घरे रह्या रे, बार छद्मस्थ पर्याय ॥ ॥ स० ॥ वरस अढारह केवली रे, वरस एंशी सवि आय ॥ स० ॥ ३ ॥ पांचशें शिष्य कंचनवने रे, संपूरण श्रुत लब्धि ॥ स० ॥ मास भगतराज गृहे रे, वीर थके लह्या सिद्धि ॥ स० ॥ ४ ॥ पढम संघयण संस्थान छे रे, वीर तणो ए शिष्य ॥ स० ॥ ज्ञानविमल तेजे करी रे, दीपे अधिक जगीश ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम श्री सुधर्माजी देववंदनं ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सोहम स्वामीने मने, छे संशय एहवो ॥ जे इहां होये जेहवो, परभवे ते तेहवो ॥ १ ॥ शाली थकी शाली नीपजे, पण भिन्न न थाय ॥ सुणी एहवो निश्चय

नथी, इम कहे जिनराय ॥ २ ॥ गोमयथी विंछी होये ए, एम विसदृश पण होय ॥ ज्ञानविमल मतिशुं करी, वेदारथ शुद्ध जोय ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गणधर अभिराम, सोहम स्वामी नाम ॥ जित दुर्जय काम, विश्वमां बुद्धिमाम ॥ दुप्पसह गणि जाम, तिहां लगे पट्ट ठाम ॥ बहु दोल त दाम, ज्ञानविज्ञान धाम ॥ १ ॥ तथा "सवि जिन वर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी नायकानी ॥ सोहम गणधर पांचमा रे लाल, अग्निवेसायन गोत्र ॥ सुखकारी रे ॥ कोल्लाग सन्निवेशे थयो रे लाल, भद्दिला धम्मिल पुत्र ॥ सु० ॥ १ ॥ सो० ॥ उत्तराफाल्गुनीये जण्यो रे लाल, पंचसया परिवार ॥ सु०॥ वरस पच्चास घरे रह्यारे लाल, व्रत बेंतालीश सार ॥सु०॥ ॥ २ ॥ सो० ॥ आठ वरस केवलीपणे रे लाल, एक शत वरसनुं आय ॥ सु० ॥ वाधे पट्ट परंपरारे लाल, आज लगे जस थाय ॥ यावत दुप्पसह राय ॥ सु० ॥ ३ ॥

सो० ॥ संपूरण श्रुतनो धणी रे लाल, सर्व लब्धि भंडा र ॥ सु० ॥ त्रीश वरस जिनथी पछीरे लाल, शिव पा म्या जयकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ सो० ॥ उदय अधिक कं चनवने रे लाल, शत शाखा विस्तार ॥ सु० ॥ नाम थकी नव निधि लहे रे लाल, ज्ञानविमल गणधार ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ सो० ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ट श्री मंडितजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ छठो मंडित ब्रंभणो, बंध मोक्ष न माने ॥ व्या पक विगुण जे आतमा, ते किम रहे छाने ॥ १ ॥ पण सावरण थकी नहे, केवल चिद्रुप ॥ तेह निरावरण थइ, होये ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ तरणि किरण जेम वादले ए, होय निस्तेज सतेज ॥ ज्ञान गुणे संशय हरी, वीर च रणे करे हेज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गणि मंडित वारु, जेह छठो करारु ॥ भव जल निधि तारु, दीसतो जे दिदारु ॥ स कल लबधि धारु, कामगद तीव्र दारु ॥ दुशमन भय

वारु, तेहने ध्यान सारु ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ जीहो जाणयुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥ जीहो छठो मंडित गणधरु, जीहो मोरी सान्निवेश गाम ॥ जीहो विजया माता जेहनी, जीहो धनदेव जनकनुं नाम ॥ १ ॥ भविक जन वंदो गणधर देव ॥ जीहो वीर तणी सेवा करे, जीहो भाव धरी नित्य मेव ॥भ०॥ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो जनम नक्षत्र जेहनुं मघा, जीहो वरस त्रेपन्न घरवास ॥ जीहो चौद वरस छद्मस्थमां, जीहो केवल शोलह वास ॥ भ० ॥ २ ॥ जीहो त्र्याशी वरस सवि आउखुं, जीहो सयल लब्धि आवास ॥ जीहो संपूरण श्रुतनो धणी, जीहो कंचन वरणे खास ॥ ॥ भ० ॥ ३ ॥ जीहो मास तणी संलेषणा, जीहो आराधी अति सार ॥ जीहो वीर छते शिव पामीया, जीहो ऊठ सया परिवार ॥ भ० ॥ ४ ॥ जीहो वशिष्ठ गोत्र सोहामणुं, जीहो नाम थकी सुख थाय ॥ जीहो ज्ञान विमल गणधर तणा, जीहो वाधे सुजश सवाय ॥ भ०॥ ॥ ५ ॥ इति षष्ठ गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ सप्तम मौर्यपुत्र देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सातमो मौर्य पुत्र जे, कहे देव न दीसे ॥ वेद पदे जे भांखिया, तिहां मन नवि हीसे ॥ १ ॥ जज्ञ करतो लहे सर्ग, ए वेदनी वाणी ॥ लोकपाले इंद्रादिक, सत्ता किम जाणी ॥२॥ इम संदेह निराकरीए, वीर वयणथी तेह ॥ ज्ञानविमल जिनने कहे, हुं तुम पगनी खेह ॥३॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ मौर्य पुत्र गणीश, सातमो वीर शिष्य ॥ नहिं रागने रीश, जागती छे जगीश ॥ नमे सुरनर ईश, अंग लक्षण छतीश ॥ ज्ञानविमल सूरिश, संथुणे राति दीस ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ मौर्यपुत्र गणि सातमो, मौर्य सन्निवेश गाम ॥ देवी विजयारे माडलो, मौरीय जनकनुं नाम ॥ १ ॥ वंदो गणधर गुणनीलो ॥ ॥ ए आंकणी ॥ रोहिणी नक्षत्र जेहनुं, जनमे चंदशुं

जोग ॥ पांसठ वरस घरे रह्या, दश चउ छउ मथ्थे जोंग ॥ वं० ॥ २ ॥ शोल वरस लगे केवली, वरस पंचाणुं रे आय ॥ उठसय मुनिवर जेहने, परिवारे सुखदाय ॥ ॥ वं० ॥ ३ ॥ संपूरण श्रुतनो धणी, कंचन कोमल गात्र ॥ लब्धि सयलना रे आगरु, काश्यप गोत्र विख्यात ॥ ॥ वं० ॥ ४ ॥ वीर छते शिव सुख लह्या, मास संलेषण लीध ॥ राजगृहे गुणना धणी, ज्ञानविमल सुख दीध ॥ वं० ॥ ५ ॥ इति सप्तम गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टम श्रीअकंपितजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन प्रारंभ ॥

॥ अकंपित द्विज आवमो, संशय छे तेहने ॥ नारक होय परलोकमां, ए मिथ्या जनने ॥ १ ॥ जे द्विज शूद्रासन करे, तस नारक सत्ता ॥ दाखी वेदे नवि कहे, ए तुज उन्मता ॥ २ ॥ मेरु परे शाश्वत कहे ए, प्रायिक एहवी नांखी ॥ ते संशय दूरे कस्यो, ज्ञानविमल जिन साखी ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मंदिनीवृत्तम् ॥ अकंपित नमीजे, आवमो जे

कहीजे, तस ध्यान धरीजे, पाप संताप छीजे ॥ समकित सुख दीजे, प्रह समे नाम लीजे, दुशमन सवि खीजे, ज्ञान लीला लहीजे ॥ १ ॥ तथा " सवि जिनवर केरा " इत्यादिक त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ वाडी फूली अति जली मन जमरा रे ॥ए देशी॥

अकंपित नामे आठमो ॥ जवि वंदो रे ॥ गणधर गुणनी खाण ॥ सदा आणंदो रे ॥ मिथिला नगरी दीपती ॥ ज० ॥ गोतम गोत्र प्रधान ॥ स० ॥ १ ॥ देवनामे जेहनो पिता ॥ ज० ॥ जयंती जस मात ॥ स० ॥ उत्तराषाढाये जण्या ॥ ज० ॥ चातुर्वेदी कहाय ॥ स० ॥२॥ वरस अडतालीश घर रह्या ॥ ज० ॥ छद्मस्थे नववास ॥ स० ॥ एकवीश वरस लगे केवली ॥ ज० ॥ वीर चरणकज वास ॥ स० ॥ ३ ॥ वरस अठ्योत्तेर आउखुं ॥ ज० ॥ त्रण सय मुनि परिवार ॥ स० ॥ संपूरण श्रुत केवली ॥ ज०॥ लब्धि तणा जंडार ॥ स० ॥ ४ ॥ कंचनवन मास अणसणी ॥ ज० ॥ वीर छते गुण गेह ॥ स० ॥ राजगृहे शिव पामिया ॥ ज० ॥ ज्ञानगुणे नव मेह ॥ स० ॥ ५ ॥

॥ इति अष्टम गणधर स्तवनं ॥

॥ अथ नवम श्री अचलभ्रातजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अचल भ्रातने मन वस्यो, संशय एक खोटो ॥ पुण्य पाप नवि देखीये, ए अचरिज मोटो ॥ १ ॥ पण प्रत्यक्ष देखीए, सुख दुःख घणेरां ॥ बीजानी परे दाखीयां, वेदपदे बहोत्तेरां ॥ २ ॥ समझावीने शिष्य कस्यो ए, वीरे आणीने नेह ॥ ज्ञानविमल पाम्या पछी, गुण प्रगट्या तस देह ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ नवमो अचल भ्रात, विश्वमां जे विख्यात ॥ सुत नंदा मात, धर्म कुंदाव दात ॥ कृत संशय पात, संयमे पारीजात ॥ दलित दुरित व्रात, ध्यानथी सुखशात ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥

॥ नवमो अचलभ्रात कहीजे, गणधर गिरुयो जाणो रे ॥ कोशला नगरी ए उपनो, हारिय गोत्र वखाणो

रे ॥ १ ॥ नाव धरीने नविपण वंदो ॥ ए आंकणी ॥ नं
दा नामे जेहनी माता, वसुदेव जनक कहीजे रे ॥ मृग
शिर नक्षत्र जन्मतणुं जस, कंचन कांति नणीजे रे ॥
॥ ना० ॥ २ ॥ वरस बेतालीश घरमां वसीया, रसीया
व्रते वरष बारे री ॥ चउद वरस केवल पर्याये, तीन स
या परिवारे री ॥ ना० ॥ ३ ॥ बहोत्तर वरस आउ परि
माणे, लब्धि सिद्धि सुविलासी री ॥ संपूरण श्रुतधर गु
णवंता, वीर चरण नितु वासीरी ॥ ना० ॥ ४ ॥ वीर
बते राजगृही नगरे, मास नगत शिव पाम्या री ॥ ज्ञा
नविमल गुणथी सवि सुरवर, आवी चरणे नाम्या री ॥
॥ ना० ॥ ५ ॥ इति नवम गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ दशम श्री मेतार्यजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ परनवनो संदेह बे, मेतार्य चित्ते ॥ नांखे प्रनु तव
तेहने, दाखी बहु जुगते ॥ १ ॥ विज्ञान घन पद तणो,
ए अर्थ विचारे ॥ परलोके गमनागमे, मन निश्चय धारे ॥
॥ २ ॥ पूर्वापर बहु परे कही ए, बेद्यो संशय तास ॥ ज्ञान
विमल प्रनु वीरने, चरणे थयो ते दास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ दशम गणधर वखाणे, आर्य मेतार्य जाणो, लह्यो शुभ गुण ठाणो, वंर सेवा मंडा णो ॥ अबे एहिज टाणो, कर्मने वाज आणो, ए परम सुजाणो, ज्ञानगुण चित्त आणो ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥ मेतारज आरज गणी दशमो, सुप्रभाते नित्य नमीये रे ॥ वत्स भूमि तुंगिय सन्निवेशे, तेहने ध्याने रमिये रे ॥ ॥१॥ गणधर गुणवंताने वंदो ॥ ए आंकणी ॥ वरुण देवा जेहने छे माता, दत्त जनक जस कहिये रे ॥ कोडिन गोत्र नक्षत्र जन्मनुं, अश्विनी नामे लहीये रे ॥ ग० ॥ ॥ २ ॥ वरस छत्रीश रह्या घरवासे, छद्मस्थे दश वरिसाजी ॥ शोल वरस केवली पर्याये, त्रणशें मुनिवर शिष्याजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ बासठ वरस सवि आउखुं पाली, त्रिपदीना विस्तारीजी ॥ कनक कांति सवि लब्धि सिद्धिना, ज्ञानादिक गुण धारीजी ॥ ग० ॥ ४ ॥ मास संलेषण राज गृहीमां, वीर थके शिव लहियाजी ॥ ज्ञानविमल च-

रणादिकना गुण, किणही न जाये कहियाजी ॥ ग० ॥ ॥ ५ ॥ इति दशम गणधर स्तवन ॥

॥ अथ एकादश श्री प्रभासजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ एकादशम प्रभास नाम, संशय मन धारे ॥ भव निर्वाण लहे नहि, जीव इणे संसारे ॥ १ ॥ अग्निहोत्र नित्ये करे, अजरामर पामे ॥ वेदारथ इम दाखवे, तस संशय वामे ॥ २ ॥ वीर चरणनो रागीयो ए, तेह थयो ततकाल ॥ ज्ञानविमल जिन चरण तणी, आण वहे निज भाल ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥ एकादश प्रभास, पूरतो विश्व आस ॥ सुरनर जस दास, विर चरणे निवास ॥ जग सुजस सुवास, विस्तर्यो ज्युं बरास ॥ ज्ञानविमल निवास ॥ हुं जपुं नाम तास ॥ १ ॥ तथा " सवि जिनवर केरा " इत्यादि त्रण थोयो कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कनक कमल पगलां ठवे ॥ ए देशी ॥ गणधर जे

अग्यारमो ए, आशापूरण प्रन्नास ॥ नमो न्नवि न्नावशुं ए ॥ कोम्निन गोत्र ठे जेहनुं ए, राजगृहे जस वास ॥ ॥ न० ॥ १ ॥ अति न्नद्रा जस मावमी ए, बलन्नद्र नामे ताय ॥ न० ॥ पुष्य नक्षत्रे जन्मीया ए, घर घर उत्सव थाय ॥ न० ॥ २ ॥ शोल वरस घरमां वस्या ए, आठ वरस मुनिराय ॥ न० ॥ शोल वरस रह्या केवली ए, चालीस वरस सवि आय ॥ न० ॥ ३ ॥ त्रण शय मुनि परिकर न्नलो ए, संपूरण श्रुतधार ॥ न० ॥ लब्धिनिधान कंचन वने ए, करता न्नवि उपगार ॥ न० ॥ ४ ॥ वीर ठते शिव पामीया ए, मास संलेषण जास ॥ न० ॥ ज्ञानविमल कीरति घणी ए, सुंदर जिम कैलास ॥ ॥ न० ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ इति श्री एकादश गणधर देववंदनं संपूर्णं ॥ एटले गणधर एकादशी दिने देव वांदवानो विधि संपूर्ण थयो ॥

तथा प्रथम गणधरना देववंदनमां चार गाथानी चार थोइ अने पठीना दश गणधरना देववंदनमां एकेक गाथानी एकेक थोय मलीने चौद गाथानुं मालीनी ठंदे कमलबंधे स्तवन पण थाय, तेमज अगियार चैत्य

वंदननुं पण स्तवन थाय एम पण लखेलुं छे. तथा वली ऊपर एक चैत्यवंदन कही सर्व गणधरनां एकज देव वंदन करीये संक्षेपथी ए रीते पण विधि कह्यो छे ते लखीये छैये.

॥ अथ अग्यारह गणधर चैत्यवंदन ॥

॥ एह गणधर एह गणधर थया इग्यार वीर जिनेसर पयकमले, रही भ्रंग परे जेह लीणा ॥ संशय टाली आपणा, थया तेह जिनमत प्रवीणा ॥ इंद्र महोत्सव तिहां करे ए, वासक्षेप करे वीर ॥ लब्धि सिद्धि दायक हजो, ज्ञानविमल गुणधीर ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ सयल गणधर सयल गणधर जेह जग सार, सकल जिनेसर पयकमले, रही भृंगपरे जेह लीणा ॥ जिनमतथी त्रिपदी लही, थया जेह स्याद्वाद प्रवीणा ॥ वासक्षेप जिनवर करे ए, इंद्र महोत्सवसार ॥ उदय अधिक दिन दिन हुवे, ज्ञानविमल गुणधार ॥१॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ चौद सयां बावन गणधार, सवि जिनवरनो ए

परिवार ॥ त्रिपदीना कीधा विस्तार, शासन सुर सवि सान्निध्यकार ॥ १ ॥ ए थोय चार वार कहेवी ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ सकल सदा फल पास ॥ ए देशी ॥ वंदूं सवि गणधार, सवि जिनवरना ए सार ॥ सम चउरस संठाण, सविने प्रथम संघयण ॥ १ ॥ त्रिपदीने अणुसारे, विरचे विविध प्रकारे ॥ संपूरण श्रुतना भरिया, सवि भवजलनिधि तरिया ॥ २ ॥ कनक वर्ण जस देह, लब्धि सकल गुणगेह ॥ गणधर नाम कर्म फरसी, अजर अमर थया हरसी ॥ ३ ॥ जनम जरा भय वाम्या, शिवसुंदरी सवि पाम्या ॥ अखय अनंत सुख विलसे, तस ध्याने भवि मलशे ॥ ४ ॥ प्रह समे लीजे ए नाम, मनोवांछित लही काम ॥ ज्ञानविमल घण नूर ॥ प्रगटे अधिक सनूर ॥ ५ ॥ सकल सुरासुर कोमी, पाय नमे कर जोमी ॥ गुणवंतना गुण कहीये, तो शुद्ध समकित लहिये ॥ ६ ॥ इति गणधर स्तवनं ॥

॥ इति श्री गणधर देववंदनं समाप्तम् ॥

॥ अथ पंडित श्री वीरविजयजी विरचित ॥

॥ चौमासी देववंदन विधिः प्रारभ्यते ॥

॥ एनो विधि आवी रीते छे के, प्रथम इरियावहि पडिक्कमी पछी खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन कहीये. ते लखीये छैये ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्री संखेश्वर इश्वरं, प्रणमी त्रिकरण योग ॥ देव नमन चउमासीये, करशुं विधि संयोग ॥ ॥ १ ॥ रुषभाजित संभव तथा, अभिनंदन जिन चंद ॥ सुमति पद्म प्रभ सातमा, स्वामी सुपास जिणंद ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ सुविधि जिन, श्री शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, नंत धर्म वरवंश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रत स्वामी ॥ नमी नेमीसर पास जिन, वर्द्धमान गुणधाम ॥४॥ वर्त्तमान जिन वंदतां ए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण मुगता तणी, वीर रचे वरमाल ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ अहीं नमुथ्थुणं कही अर्धो जयवीयराय कहीये, पछी खमासमण दइ इच्छाकारे

ए संदिसह जगवन् रुषज्ज जिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं? एम कही चैत्यवंदन कहीये ते लखीये छैये ॥

॥ अथ रुषज्ज जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वार्थ सिद्ध थकी, चविया आदि जिणंद ॥ प्रथम राय वनिता वसे, मानव गण सुख कंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौनातीत केवली, वड हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तराषाढा जनम छे ए, धन राशि अरिहंत ॥ दश सहस परिवारशुं, वीर कहे शिव कंत ॥ ३ ॥ इति ॥ अहीं नमुथ्थुणं कही पछी अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहीये, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ ञ्याशी लाख पूरव घरवासे, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थकी पण देवतरु फल, क्षीरोदधि जल जोक्ता जी ॥ मइसुअ ओहि नाणे संयुत्त, नयण वयण कज चंदाजी ॥ चार सहसशुं दीक्षा लीधा, स्वामी रुषज्ज जिणंदा जी ॥ १ ॥ अहीं लोगस्सए ॥ कही एक नवका

रनो काउस्सग्ग करीये पछी ॥ मनःपर्यव तव नाण उ
प्पन्नुं, संयत लिंग सहावा जी ॥ अढिय द्वीपमां सन्नी
पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत भावाजी ॥ द्रव्य अनंता सू
क्ष्म तीर्हों, अढारशें खित्त ठायाजी ॥ पलिय असंखम
भाग त्रिकालिक, द्रव्य असंख्य परजायाजी ॥ २ ॥
अहीं पुक्खरवरदी० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग
करीये ॥ ऋषभ जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण
ठाया जी ॥ अनभिलप्प अभिलप्प अनंता, भाग अ
नंत उच्चराया जी ॥ तास अनंत में भागे धारी, भाग
अनंते सूत्र जी ॥ गणधर रचिया आगम पूजी, करीये
जनम पवित्र जी ॥ ३ ॥ अहीं सिद्धाणं बुद्धाणं कही
एक नवकारनो काउस्सग्ग करीये ॥ गोमुख जक्ख चक्के
सरी देवी, समकित शुद्ध सोहावे जी ॥ आदि देवनी
सेव करंती, शासन शोभ चढावे जी ॥ श्रद्धा संयुत जे
व्रतधारी, विघन तास निवारे जी ॥ श्री शुभवीर वि
जय प्रभु भगते, समरे नित्य सवारे जी ॥ ४ ॥ इति
थोय ॥ अहीं नमुथ्थुणं० ॥ जावंतिचेइ० ॥ जावंत के० ॥
नमोऽर्हत् सिद्धा० ॥ कहीये ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ ज्ञान रयण रयणायरु रे, स्वामी ऋषभ जिणंद ॥ उपकारी अ रिहा प्रभु रे, लोक लोकोत्तरानंद रे ॥ भविया ॥ १ ॥ भावे भजो भगवंत ॥ महिमा अतुल अनंत रे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ए आंकणी ॥ तिग तिग आकर सागरु रे, कोमा कोमि अढार ॥ युगला धर्म निवारीयो रे, धर्म प्रवर्तन हार रे ॥ भ० ॥ भा० ॥ २ ॥ ज्ञानातिशये भव्यना रे, संशय छेदन हार ॥ देव नरा तिरि समझीया रे, वचना तिशय विचार रे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ चार घने मघवा स्तवे रे, पूजा तिशय महंत ॥ पंच घने योजन टले रे, कष्ट ए तूर्य प्रसंत रे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ४ ॥ योगक्षेमंकर जिनवरु रे, उपशम गंगानीर ॥ प्रीति भक्तिपणे करी रे, नीत्य नमे शुभ वीर रे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ५ ॥ इति स्त वनं ॥ पछी जयवीयराय अर्धो कहेवो ॥ इति ॥

अहीं खमासमण० ॥ इच्छाकारेण० ॥ श्री अजित नाथ आराधनार्थं० ॥ चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अजितनाथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ आव्या विजय वैमानथी, नयरी अयोध्या ठाम ॥

मानवगण रिखरोहिणी, मुनिजनना विशराम ॥ १ ॥ अजितनाथ वृष राशिथें, जनम्या जगदाधार ॥ योनि भुजंगम जयहरु, मौने वर्षते बार ॥ २ ॥ सप्त परण तरु हेठले ए, ज्ञान महोत्सव सार ॥ एक सहस्सशुं शिव वस्था, वीर धरे बहु प्यार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पछी नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइ० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहेवी ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ प्रह ऊठी वंदूं ॥ ए देशी ॥ जब गर्भे स्वामी, पामी विजया नार ॥ जीते नित्य पीयुने, अक्ष क्रीडत हुशीयार ॥ तिणे नाम अजित छे, देशना अमृत धार ॥ महाजक्ष अजिता, वीर विघन अपहार ॥ १ ॥ ए थोय कही ऊभां थकां जयवीयराय अर्धो कहेवो ॥ इति अजित देववंदनं ॥ ए रीते सर्व तीर्थंकरनां चैत्यवंदन थोयो अने स्तवन कहेवां ॥ यावत् शाश्वताजिन सुधीनां पण कहेवां ॥

॥ अथ संभव जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम गेविज चवन छे, जनम्या मृगशिर मांहिं ॥ देवगणे संभव जिना, नमीये नित्य उत्सांहि ॥ १ ॥

सावथ्थीपुरि राजीयो, मिथुन राशि सुखकार ॥ पन्नग योनि पामिया, योनि निवारणहार ॥ २ ॥ चउद वरस छद्मस्थमां ए, नाण शाल तरु सार ॥ सहस व्रतीशुं शिववस्था, वीर जगत आधार ॥ ३ ॥ इति संभव जिन चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥ संभव स्वामी सेविये, धन्य सज्ञान दीहा ॥ जिनगुण माला गावतां, धन्य तेहनी जीहा ॥ वयण सुगंग तरंगमां, न्हाता शिवगेही ॥ त्रिमुखसुर दुरितारिका, शुभवीर सनेही ॥ ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, अभिनंदन जिनचंद ॥ पुनर्वसुमां जनमीया, राशि मिथुन सुख कंद ॥ १ ॥ नयरी अयोध्यानो धणी, योनिवर मंजार ॥ उग्रविहारे तप तप्या, भूतल वरस अढार ॥ २ ॥ वली रायण पादप तले ए, विमल नाण गणदेव ॥ मोक्ष सहस मुनिशुं गया, वीर करे नित्य सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अपा पदम लंघनं ॥ ए चाल ॥ अभिनंदन गुण मालिका, गावती अमरालिका ॥ कुमतिकी परजालिका, शिव वहूवर मालिका ॥ लगे ध्यानकी तालिका, आगमनी परनालिका ॥ इश्वरी सुरबालिका, वीर नमे नित्य कालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमति जयंत विमानथी, रह्या अयोध्या गाम ॥ राक्षस गण पंचम प्रभु, सिंहराशि गुणधाम ॥ १ ॥ मघा नक्षत्रे जनमीया, मुषक योनि जगदीश ॥ मोहराय संग्राममां, वरस गयां ववीश ॥ २ ॥ जीत्यो प्रियंगु तरु ए, सहस मुनि परिवार ॥ अविनाशी पदवी वस्या, वीर नमे सोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ॥ ए देशी ॥ सुमति स्वर्ग ठिये असुमंतने, ममत्व मोह नहि भगवंतने ॥ प्रगट ज्ञान वरी शिव बालिका ॥ तुंबरु वीर नमे महाकालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवेयक नवमे थकी, कौसंबी घरवास ॥ राक्षस गण नक्षत्र, चित्रा कन्या राश ॥ १ ॥ वृश्चिक योनि पद्म प्रभ, छद्मस्था षट्मास ॥ तरु छत्रौघे केवली, लोका लोक प्रकाश ॥ २ ॥ त्रण अधिक शत आठशुं ए, पाम्या अविचल धाम ॥ वीर कहे प्रभु माहरे, गुणश्रेणि वि-श्राम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते

॥ नंदीश्वर वरद्वीप संभारुं ॥ ए चाल ॥ पद्मप्रभु-हत छद्म अवस्था, शिव सद्मे सिद्धा अरुपस्था ॥ नाणने दंसण दोय विलासी, वीर कुसुम श्यामा जिनुपासी ॥ ॥ १ ॥ इति पद्मप्रभ स्तुति ॥

॥ अथ श्री सुपासजिन चैत्यवंदन ॥

॥ गेवीज छठेथी चव्या, वाणारसीपुरी वास ॥ तु ला विशाखा जन्मीया, तप तपीया नव मास ॥ १ ॥ ग ण राक्षस वृक योनिये, शोभे स्वामी सुपास ॥ सरिस तरुतले केवली, ज्ञेय अनंत विलास ॥ २ ॥ महानंद पदवी लही ए, पाम्यो भवनो पार ॥ श्री शुभवीर कहे प्रभु, पंच सया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ए ॥ ए देशी ॥ अष्ट महा प्रतिहारशुं ए, शोभे स्वामि सुपासतो ॥ महा भाग्य अरिहा प्रभु ए, सुरनर जेहना दास तो ॥ गुण अतिशय वरणव्या ए, आगम ग्रंथ मोझारतो ॥ मातंग शांता सुर सुरी ए, वीर विघन अपहार तो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रभ चंद्रावती, पुरि चविया वैजयंत ॥ अनुराधाये जनमीया, वृश्चिक राशि महंत ॥ १ ॥ मृगयोनि गण देवनो, केवल विणत्रिक मास ॥ पाम्या नाग तरु तले, निर्मल नाण विलास ॥ २ ॥ परमानंद पद पामीया ए, वीर कहे निरधार ॥ साथे सलूणा शोभता, मुनिवर एक हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रभ मुख चंद्रमा, सखि जोवा जइये ॥ द्रव्य भाव प्रभु दरिसणे, निर्मलता थइये ॥ वाणी सुधारस वेलडी, सुणीये ततखेव ॥ भजे भदंत भृकुटिका, वीर विजय ते देव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधिनाथ सुविधे नमुं, श्वान योनि सुख कार ॥ आव्या आणंत स्वर्गथी, काकंदी अवतार ॥ १ ॥ राक्षसगण गुणवंतने, धनराशि रिखमूल ॥ वरस चार छद्मस्थमां, कर्मे शशक शार्दूल ॥ २ ॥ मल्ली तरुतले केवली ए, सहस मुनि संघात ॥ ब्रह्म महोदय पद वर्या, वीर नमे परभात ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा करंतां देवा तजी विषय वासना ॥ शिव सुखदाता ज्ञाता त्राता हरे दुःख दासना ॥ नय गम भंगे रंगे चंगे वाणी भव हारिका ॥ अमर अतीते मोहातीते विरंचे सुतारिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा स्वर्गथकी चव्या, दशमा शीतलनाथ ॥ भद्दिलपुर धनराशिये, मानव गण शिवसाथ ॥ १ ॥ वानर योनि जिणंदने, पूर्वाषाढा जात ॥ तिग वरसांतर केवली, प्रियंगु विख्यात ॥ २ ॥ संयमधर सहसें वर्या ए, निरूपम पद निर्वाण ॥ वीर कहे प्रभु ध्यानथी, भव भव कोड कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ प्रह उठी वंदुं ॥ ए देशी ॥ शीतल प्रभु दर्शन, शीतल अंग उवंगे ॥ कल्याणक पंचे, प्राणी गण सुख संगे ॥ तो वचन सुणंतां, शीतल किमनहि लोका ॥ शुभ वीर ते ब्रह्मा, शासन देवी अशोका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युतथी प्रभु उतस्या, सिंहपुरे श्रेयांस ॥ योनि वानर देवगण, देव करे परशंस ॥ १ ॥ श्रवणे स्वामी जनमीया, मकर राशि डुगवास ॥ छद्मस्था तिंडुक तले, केवल महिमा जास ॥ २ ॥ वाचंयम सहसें सही ए, भव संततिनो छेह ॥ श्री शुभ वीरने सांइशुं, अविचल धर्म सनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस सुहंकर पामी, इछे अवर कुण देवा जी ॥ कनक तरु सेवे कुण प्रभुने, छंडी सुर तरु सेवा जी ॥ पूर्वापर अविरोधि स्यात्पद, वाणी सुधारस वेलीजी ॥ मानवी मणु ए सर सुपसाये, वीर हृदयमां केलीजी ॥१॥ इति॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी प्रभु पांगर्या, चौंपे चंपा गाम ॥ शिव मारग जातां थकां, चंपा तरु विशराम ॥ १ ॥ अश्व योनि गण राक्षस, शतभिषा कुंभ राशि ॥ पाडल हेठ केवली, मौनपणे इग वास ॥ २ ॥ षट् शत साथे शिव थया ए, वासुपूज्य जिन राज ॥ वीर कहे धन्य ते घडी, जब निरख्या महाराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥ विमल गुण अगारं, वासुपूज्यं सफारं, निहत विष विकारं, प्राप्त कै वल्य सारं ॥ वचन रस उदारं, मुक्ति तत्त्वे विचारं, वीर विघन निवारं, स्तौमि चंडी कुमारं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम स्वर्गथकी चवी, कंपिलपुरमां वास ॥ उत्तर भद्रपदे जनि, मानवगण मीन राशि ॥ १ ॥ योनि छाग सुहंकरु, विमलनाथ भगवंत ॥ दोय वरस तप निर्जली, जंबूतले अरिहंत ॥ २ ॥ षट्सहस मुनि साथशुं ए, विमल विमल पद पाय ॥ श्री शुभ वीरने सांइशुं, मलवानुं मन थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ चोपाइनी चाल ॥ विमलनाथ विमल गुण वस्या, जिन पद जोगी जव विस्तस्या ॥ वाणी पांत्रीश गुण लक्खणी, छम्मुह सुर प्रवरा जक्खणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ देवलोक दशमा थकी, गया अयोध्या गाम ॥ हस्ति योनि अनंतने, देव गणे अभिराम ॥ १ ॥ रेवती ये जनम्या प्रज्ञु, मीन राशि सुखकार ॥ त्रण्यवरस छद्म स्थमां, नहि प्रश्नादि उच्चार ॥ २ ॥ पीपल वृक्षे पामी या ए, केवल लक्ष्मी निदान ॥ सात सहस्रशुं शिव व स्या, वीर कहे बहु मान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ ज्ञानादिकाः गुणवरा नि वसंत्यनंते, वज्री सुपर्व महिते जिन पाद पद्मे ॥ ग्रंथा र्णवे मति वराः प्रणतिस्म जक्त्या, पाताल चांकुशि सुरी शुज वीर दक्षाः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ विजय विमान थकी चव्या, रत्न पुरे अवतार ॥

धर्मनाथ गण देवता, कर्क राशि मनोहर ॥ १ ॥ जनम्या पुष्य नक्षेत्तरे, योनि छाग विचार ॥ दोय वरस छद्मस्थमां, विचस्था धर्म दयाल ॥ २ ॥ दधिपर्णाधो केवली, वीर वस्या बहु रिद्ध ॥ कर्म खपावीने हुवा, अरु सघ साथे सिद्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥ सखि धर्म जिणेसर पूजीए, जिन पूजे मोहने धुजी ए ॥ प्रभु वयण सुधारस पीजीए, किन्नर कंदर्प्पा रीजीए ॥ १ ॥

॥ अथ शांतिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वारथ सिद्धे थकी, चवीया शांति जिनेश ॥ हस्ती नागपुर अवतस्या, योनि हस्ति विशेष ॥ १ ॥ मानवगण गुणवंतने, मेषराशि सुविलास ॥ नरणीए जनम्या प्रभु, छद्मस्था इगवास ॥ २ ॥ केवलनंदी तरु तले ए, पाम्या अंतर जाण ॥ वीर करमने क्षय करी, नवशतशुं निरवाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥ शांति सु

हंकर साहिबो, संयम अवधारे ॥ सुमतिने घरे पारणुं, भवपार उतारे ॥ विचरंता अवनी तले, तप उग्र विहारे ॥ ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिरजंचने तारे ॥ १ ॥ पास वीर वासुपूज्यने, नेम मल्ली कुमारी ॥ राज्यविहूणा ए थया, आपे व्रतधारी ॥ शांतिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी ॥ मल्ली नेम परण्या नही, बीजा घरबारी ॥ २ ॥ कनक कमल पगलां ठवे, जयशांति करीजे ॥ रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे ॥ योगवंचक प्राणीया, फल लेतां रीझे ॥ पुष्करावर्तना मेघमां, मगसेल न भींजे ॥ ३ ॥ क्रोकवदन शुक रारूडो, श्यामरूपे चार ॥ हाथ बीजोरुं कमल छे, दक्षिण कर सार ॥ जक्ष गरुड वाम पाणीए, नकुलाक्ष वखाणे ॥ निर्वाणीनी वाततो, कवि वीर ते जाणे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग पूर्वी ॥ क्षण क्षण सांभरो शांति सलूणा ॥ ध्यानभुवन जिनराज परूणा ॥ क्ष० ॥ शांति जिनंदको नाम असीसें, उल्लसित होत हमारो भवपुना ॥ क्ष० ॥ भव चोगानमें फिरते पाए, ढोरतमें नाहिं चरण प्रभुना ॥ क्ष० ॥ १ ॥ छील्लरमें रति कबहूं न पावे, जे झीले जल

गंग यमुनां ॥ कु० ॥ तुम सम हम शिर नाथ न थाशें, कर्म अधूना हूना धूना ॥ कु० ॥ २ ॥ मोहलराइमें तेरी सहाइ, तो कणमें छिन्न भिन्न कहुना ॥ कु० ॥ नाहे घटे प्रनु आना कूना, अचिरासुत पति मोह व धूना ॥ कु० ॥ ३ ॥ उरकी पास में आस न करतें, चार अनंत पसाय करुन्ना ॥ कु० ॥ क्यूं कर मागत पास थ तूरे, युगलिक याचक कल्पतरुना ॥ कु० ॥ ४ ॥ ध्यान खड्गवर तेरे आसंगे, मोह डरे सारी नीक नरुना ॥ ॥ कु० ॥ ध्यान अरूपी तो सोइ अरूपी, नक्के ध्यावत तान्या तूना ॥ कु० ॥ ५ ॥ अनुनव रंग वध्यो उपयोगे, ध्यान सुपानमें काथा चूना ॥ कु० ॥ चिदानंद जकजोल घटासें, श्री शुन्नवीर विजय पकि पुन्ना ॥ कु० ॥६॥इति

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ लव सत्तम सुरनव तजी, गजपुर नयर निवास ॥ राक्सगण कृत्तिका जनी, कुंथुनाथ वृष राशि ॥ १ ॥ शोल वरस उद्मस्थमां, जिनवर योनि ठाग ॥ घातीकर्म घाते करी, तिलकतले वीतराग ॥ २ ॥ शैलेशी करणे करी ए, एक सहस परिवार ॥ शिवमंदिर सिधावतां, वीर घणुं हुंशियार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ द्विजराज मुखी ॥ ए देशी ॥ वशीकुंथुव्रती तिलकौ जगति, महिमा महती नत इंद्रतती ॥ प्रतितागम ज्ञानगुणा विमला, शुभवीर मतां गांधरव बाला ॥१॥इति॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ गए सव्वठथकी चव्या, नागपुरे अरनाथ ॥ रेवती जन्म महोत्सवा, करता निर्जर नाथ ॥ १ ॥ जय कर योनि गजवरु, राशि मीन गणदेव ॥ त्रण्य वरसमां थिर थइ, टाले मोहनी टेव ॥ २ ॥ पाम्या अंब तरुतले ए, खायिक भावे नाण ॥ सहस मुनिवर साथशुं, वीर कहे निर्वाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदन नंदिता ॥ ए देशी ॥ अरवि भूरवि भूतल द्योतकं, सुमनसा मनसार्चित पंकजं ॥ जिन गिरा न गिरा पर तारिणी, प्रणत यक्षपति वीर धारिणी ॥ १ ॥ इति स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मल्ली जयंत विमानथी, मिथिला नयरी सार ॥

अश्विनी योनि जयंकरु, अश्विनीये अवतार ॥ १ ॥ सुरगण राशि मेष छे, वंदित स्वर्गी लोक ॥ छद्मस्थ अहो रातिनी, केवल वृक्ष अशोक ॥ २ ॥ समवसरणे बेशी करी ए, तीर्थ प्रवर्तन हार ॥ वीर अचल सुखने वर्या, पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नंदीश्वर वर द्वीप संभालुं ॥ ए देशी ॥ मल्लीनाथ मुखचंद निहालुं, अरिहा प्रणमी पातक टालुं ॥ ज्ञानानंद विमलपुर सेर, धरणप्रिया शुभवीर कुबेर ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

॥ सुव्रत अपराजितथी, राजगृही रेठाण ॥ वानर योनि राजती, सुंदर गण गिर्वाण ॥ १ ॥ श्रवण नखेतर जनमीया, सुरवर जय जय कार ॥ मकर राशि छद्मस्थ मां, मौन मास अगीयार ॥ २ ॥ चंपक हेठे चांपीयां ए, जे घनघाति चार ॥ वीर वर्यो जगमां प्रभु, शिवपद एक हजार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अहह मुदिरे ॥ ए देशी ॥ सुव्रत स्वामी आतम

रामी, पूजो नवि मन रूली ॥ जिन गुण थुणीये पातक हणीये, जावस्तव सांकली ॥ वचने रहीए जूठ न कहीए, टले फल वंचको ॥ वीर जिणं पासी नर दत्ता, वरुण जिनार्च्चको ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा प्राणत स्वर्गथी, आव्या श्री नमिनाथ ॥ मिथिला नयरी राजीयो, शिवपुर केरो साथ ॥ १ ॥ योनि अश्व अलंकरी, अश्विनी उदयो नाण ॥ मेष राशि सुरगण नमुं, धन्य ते दिन सुविहाण ॥ २ ॥ नव मासांतर केवली, बकुल तले निरधार ॥ वीर अनुपम सुख वर्या, मुनि परितंत हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्रावणशुदि दिन पंचमी, ए ॥ ए देशी ॥ श्री नमिनाथ सोहामणा ए, तीर्थपति सुलतान तो ॥ विश्वंभर अरिहा प्रभु ए, वीतराग भगवान तो ॥ रत्नत्रयी जस उजली ए, भांखे षट्द्रव्य ज्ञान तो ॥ भृकुटी सुर गंधारिका ए, वीर हृदय बहु मानतो ॥ १ ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमीनाथ बावीशमा, अपराजितथी आय ॥

सोरीपुरमां अवतरया, कन्याराशि सुहाय ॥ १ ॥ योनि वाघ विवेकीने, राक्षसगण अद्भूत ॥ रिख चित्रा चौपन दिन ॥ मौनवता मन पूत ॥ २ ॥ वेतस हेठे केवली ए, पंच सयां छत्रीश ॥ वाचंयमशुं शिव वर्या, वीर नमे निशिदीस ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ कनक तिलक न० ॥ ए देशी ॥ दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं, गुणवत मविकारं, प्राप्त सिद्धि मुदारं ॥ जिनवर जयकारं, कर्म संकलेश हारं, भवजलनिधि तारं, नौमि नेमी कुमारम् ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे प्रयाता, अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता ॥ अड जिनवर माता, प्राप्त माहेंद्र ख्याता, भव भय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता ॥ २ ॥ ऋषभ जनक जावे, नाग सुरभाव पावे, इशान सग कहावे, शेषकांता सभावे ॥ पदमासन सुहावे, नेम आद्यंत पावे, शेष काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्रे पठावे ॥ ३ ॥ दाहन पुरुष जाणी, कृष्णवर्णे प्रणामी, गोमेधने षट्पाणी, सिंह वेठी वराणी ॥ तनु कनक समाणी, अंबिका चार पाणी, नेम भगति भराणी, वीर विजये वखाणी ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मल्लिनाथ विना दुःख कोण गमे ॥ ए देशी ॥
रहो रहो रे यादव दो घडीयां ॥ र० ॥ दो घडीयां दो चार घडीयां ॥ र० ॥ शिवा मात मल्हार नगीने, क्युं चलीये हम विछडीयां ॥ र० ॥ यादव वंश विभूषण स्वामी, तुमे आधार छो अडवडीयां ॥ र० ॥ १ ॥ तो बिन ओरसे नेह न कीनो, ओर करनकी आखडीयां ॥ र० ॥ इतने बिच हम छोड न जइये, होत बुराइ लाजडीयां ॥ र० ॥ प्रीतम प्यारे केहकर जानां, जे होत हम शिर वांकडीयां ॥ र० ॥ हाथसें हाथ मिलादे सांइ, फूल बिछाउं सेजडीयां ॥ र० ॥ ३ ॥ प्रेमके प्याले बहुत मसाले, पीवत मधुरे सेलडीयां ॥ र० ॥ समुद्र विजय कुल तिलक नेमकुं, राजुल झरती आंखडीयां ॥ ॥ र० ॥ ४ ॥ राजुल छोर चले गिरनारे, नेम युगल केवल वरीया ॥ र० ॥ राजिमति पण दीक्षा लीनी, भावना रगरंसें चडीयां ॥ र० ॥ ५ ॥ केवल लइ करी मुगति सिधारे, दंपती मोहन वेलडीयां ॥ र० ॥ श्री शुभ वीर अचल भइ जोडी, मोहराय शिर लाकडीयां ॥ र०॥ ६ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नयरी वाणारसीये थया, प्राणतथी परमेश ॥ योनिव्याघ्र सुहंकरी, राक्षसगण सुविशेष ॥ १ ॥ जन्म विशाखाये थयो, पार्श्व प्रभु महाराय ॥ तुला राशि छ द्मस्थमां, चोराशी दिन जाय ॥ २ ॥ धवतरु पासे पा मीया ए, खायिक ङुग उपयोग ॥ मुनि तेत्रीशें शिव व स्या, वीर अक्षय सुख भोग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी ॥ पास जिणंदा वामा नंदा, जब गरभे फली ॥ सुपनां देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुवा रम णि प्रिये ॥ नेमी राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये ॥ १ ॥ वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिन पति ॥ पासने मल्लि त्रय शत साथे, बीजा सहस्त्रे व्रती ॥ षट् शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जग धणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी ॥ २ ॥ जिन मुख दीठी वाणी मीठी, सुर तरु वेलडी ॥ द्राख विहासे गइ वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ साकरसेती

तरणा लेती, मुखें पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गें दीठुं, सुरवधू गावती ॥ ३ ॥ गज मुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली ॥ चार ते बांही कछप वाही, काया जस शामली ॥ चउ कर प्रौढा नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥४॥इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ जिनंदराय हे ॥ ए देशी ॥ आज शंखेश्वरजिन नेटीये, नेटतां नव दुःख नासे ॥ साहेब मोरारे ॥ जयो अश्वसेन कुलचंद्रमा, माता वामा सुत पासे ॥ सा० ॥ ॥ १ ॥ नक्तवत्सल जन नयहरु, हसतां हणीया षट्हास्य ॥ सा० ॥ दानादिक पांचने दुहव्या, फरी नावे पासनी पास ॥ सा० ॥ आ० ॥ २ ॥ करो कामने कारमी कम कमी, मिथ्यात्वने न दिउं मान ॥ सा० ॥ अविरतिने रति नहि एक घमी, अवगुणी अलगुं अज्ञान ॥ सा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ निंदक निद्राने नासवी, मृतरागने रोग अपार ॥ सा० ॥ एक धक्के द्रूषने टालीयो, एम नाग दोष अढार ॥ सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वली मत्सर मोह ममत गया, अरिहा निरिहा निरदोष ॥ सा० ॥ धरणेंद्र कन्नव सुर त्रिहुं परे, तुस मात्र नही तोस रोष ॥ सा० ॥

आ० ॥ ५ ॥ अचरिज सुणजो एक तेणे समे, शत्रुने समकित दाय ॥ सा० ॥ चंदन पारस गुण अति घणा, अक्षर थोडे न कहाय ॥ सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ जागरण दिशा उपर चढ्या, उजागरणे वीतराग ॥ सा० ॥ आलं बन धरतां प्रभुतणो, प्रभुता सेवक सौभाग्य ॥ सा० ॥ ॥ आ० ॥ ७ ॥ उपादान कारण कारिय सिधे, असाधा रण कारण नित्य ॥ सा० ॥ जो अपेक्षा कारण नवि लहे, फलदायी कारण निमित्त ॥ सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ प्रभु त्रायक सायकता धरी, दायक नायक गंभीर ॥ सा०॥ निज सेवक जाणी निवाजीये, तुम चरणे नमे शुभ वीर॥ ॥ सा० ॥ आ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवंदन ॥

॥ उर्द्धलोक दशमाथकी, कुंडपुरे मंडाण ॥ वृषभ योनि चउवीशमा, वर्द्धमान जिनभाण ॥ १ ॥ उत्तरा फाल्गुनी उपना, मानवगण सुखदाय ॥ कन्या राशि छद्मस्थमां, बार वरस वही जाय ॥ २ ॥ शाल विशाल तरुतले ए, केवल निधि प्रगटाय ॥ वीर बिरुद धरवा भणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥ वीर ज-
गत्पति जन्मज थावे, नंदन निश्चित शिखर रहावे, आ
ठ कुमारी गावे ॥ अडगज दंता हेठे वसावे, रुचक गि
रीथी ठत्रीश जावे, द्वीप रुचक चनभावे ॥ छप्पन दिग
कुमरी हुलरावे, सूती करम करी निज घर पावे, शक्र
सुघोषा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, भवन
व्यंतरशंख पडहे मिलावे, सुरगिरि जन्म मल्हावे ॥१॥
ऋषभ तेर शशि सात कहीजे, शांतिनाथ भव बार सु
णीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे ॥ नव नेमीश्वर नमन क-
रीजे, पास प्रभुना दस समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे ॥
अजितादिक जिन शेष रहीजे, त्रण्य त्रण्य भव सघले
ठवीजे, भव समकितथी गणीजे ॥ जिन नामबंध नि-
काचित कीजे, त्रीजे भव तप खंती धरीजे, जिनपद उ
दये सीझे ॥ २ ॥ आचार आदे अंग अग्यार, उववाई
आदे उपांग ते बार, दश पयन्ना सार ॥ ठ छेद सूत्र
विचित्र प्रकार, उपगारी मूल सूत्र ते चार, नंदि अनु
योग द्वार ॥ ए पीस्तालीश आगम सार, सुणतां लही
ये तत्व उदार, वस्तु स्वभाव विचार ॥ विषभुजंगिनि

विष अपहार, ए समो मंत्र न को संसार, वीरशासन जयकार ॥ ३ ॥ नकुल बीजोरुं दोय कर फाली, मातंग सुर शाम कंती तेजाली, वाहन गज शुंढाली ॥ सिंह उ पर बेठी रढीयाली, सिद्धायिका देवी लटकाली, हरि ताभा चार भुजाली ॥ पुस्तक अभया जिमणे फाली, मातुलिंगने वीणा रसाली, वाम भुजा नहिं खाली ॥ शुभ गुरु गुण प्रभु ध्यान घटाली, अनुभव नेहशुं देती ताली, वीर वचन टंकशाली ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ त्रिशलानंदन चंदन शीत, दर्शन अनुभव करी ये नित्य ॥ स्वामी सेवीए ॥ तुम दर्शनथी अलगा जेह, वलग्या कर्म पिशाचने तेह ॥ स्वामी सेवीए ॥ १ ॥ हुं पण भमीयो आ संसार, दर्शन दीठा विण निरधार ॥ ॥ स्वा० ॥ अब तुम दर्शन दीठुं रत्न, निज घरमां रही करशुं यत्न ॥ स्वा० ॥ २ ॥ दर्शनथी जो दर्शन थाय, ते आणंद तो जगत न माय ॥ स्वा० ॥ भवभ्रमणादिक दूरे जाय, भवथिति चिंतन अल्प ठराय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ तस लक्षण प्रगटे घटमांहिं, वैशालिक प्रभु तुठे ज्यां हीं ॥ स्वा० ॥ अमृत लेश लहे एक वार, रोग नहिं फ

री अंगमोझार ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ दर्शन फरशन होवे तास, संवेदन दर्शनो नाश ॥ स्वा० ॥ पण जो जाय पलांसु पास, तो मह महके वास बरास ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ देव कुदेवनी सेवा करंत, न लह्युं दर्शन श्री जगवंत ॥ ॥ स्वा० ॥ एक चित्त नहीं एकनी आश, पग पग ते दुनियाना दास ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ बेश खाट परें कीण केइ घाट, तस मुख दर्शन दूरे दाट ॥ स्वा० ॥ लोक कहे धिग चित्त उच्चाट, घर घर जटके ते बारे वाट ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तिणविध जटक्यो काल अनंत, मलिया कलिया नहिं अरिहंत ॥ स्वा० ॥ ते दिन दर्शन तो प्रतिपक्ष, हवे दर्शन फलशे प्रत्यक्ष ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ प्रीति जक्तियें चोलनो रंग, गुण दर्शने गयो रंग पतंग ॥ स्वा० ॥ अणमलवे हुवे मन उत्कंठ, मलवे दुःख करे विरहे उल्लंठ ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ अनुजव दर्शने बिहुं दुःख नास, राति दिवस रहो हइमा पास ॥ स्वा० ॥ क्षय उपशम गुण खायक दाय, गर्जवती प्रिया पुत्र जणाय ॥ स्वा० ॥१०॥ रंग महोलमां उत्सव थाय, मोह कुटुंब ते रोतुं जाय ॥ ॥ स्वा० ॥ श्री शुजविजय सुणो जगदीश, वीर कहे पद्ये देजो आशीष ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ शाश्वता अशाश्वता जिन आरा ॥

॥ धनार्थं चैत्यवंदनं प्रारभ्यते ॥

॥ श्लोक ॥ चतुर्विंशती ह्यार्हता वंदिताश्चा, धुना संस्तविष्ये त्रिलोके विलोकाः ॥ चतुर्धात्रिधाः सद्गुणा लंकृतेभ्यो, नमामि मुदा शाश्वताऽशाश्वतेभ्यः ॥ १ ॥ सुधर्मादिकें ताविषे चैत्यमाला, तथा चांतिमे नुत्तरेऽर्हद्विशाला ॥ वसु वेर्द नंदर्षिखं द्वित्रिकेभ्यौ ॥ नमामि० ॥ २ ॥ गजस्त्यालये शीतरश्मी निवासे, ग्रहे तारके चोक्तुनी चैत्य गेहाः ॥ असंख्या जिनेंद्रा वितेंद्रा कृते भ्यो ॥ न० ॥ ३ ॥ वसुद्विकृते व्यंतरेऽसंख्य चैत्ये, सुरा द्या ह्यशानां जिनौकाः स्मृताश्च ॥ अद्रांका मिताः पार गाः संति तेभ्यो ॥ न० ॥ ४ ॥ सुराद्रौ नगे नैषधे नील वंते, गिरौ कुंडले रोचके नागदंते ॥ हिमाद्रौच वैताढ्य मुख्यार्चितेभ्यो ॥ न० ॥ ५ ॥ तरौ शाल्मली जंबु नंदी श्वरेषु, वखारे विचित्र त्रिकूटे चकूटे ॥ मुकूटे ॥ क्षितौ चक्रवालांतरेभ्यो ॥ न० ॥ ६ ॥ स्थिते चित्रकूटेर्बुदे सि द्धक्षेत्रे, समेतो जयंता चलाऽष्टापदेषु ॥ कुलाद्रौच विं ध्याचले रौहणेभ्यौ ॥ न० ॥ ७ ॥ विराटे अघाटेकुरौ

मेद पाटे, श्रिमाले च जोटे स्थिता चक्रकोटे ॥ हृदे दे व कूटे द्रविडेऽर्हतेज्यो ॥ न० ॥ ८ ॥ तिलंगे कालिंगे प्र यागे च बोधे, सुराष्ट्रांगवंगार्द्र गंगापगासु ॥ जनैःकान्य कुब्जे तमालार्चितेज्यो ॥ न० ॥ ए ॥ जले कौशले नाहले जंगले वा, स्थले पल्लि देशे वने सिंहले वा ॥ नगर्यु ज्जयिन्यादिका स्वंतरेज्यो ॥ न० ॥ १० ॥ अने नैव सं ध्यात्व वंध्यं त्रिसंध्यं, जिनाः संस्तुवंति चतुर्मासि घस्रे ॥ जवेत्तीर्थ यात्रागृहे तिष्ठतेज्यो ॥ न० ॥ ११ ॥ इति शा श्वत मुख्य विजोःस्तवनं, रचितं लचितं सुगुणैः प्रवरं ॥ परिरंजित दक्ष सजा निकरं, कुरुतां शुजवीर सुख सखरं ॥ न० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारंजः ॥

॥ नंदीसर वर ॥ ए देशी ॥ नमोऽर्हत्० ॥ ऋषजा नन चंद्रानन जाणो, वारिषेण शाश्वत वर्द्धमानो ॥ पूरव पश्चिम उत्तर ठाणो, दक्षिण पडिमा जाग प्रमाणो ॥ १ ॥ एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक नवकार गणवो ॥ ऊर्ध्वलोके जिनबिंब घणेरां, जवनपतिमां घर घर देहेरां ॥ व्यंतरज्योतिषी त्रीठे अनेरां, चारे शाश्वत नाम जलेरां ॥ २ ॥ पुरकवर० ॥ नो० ॥ जरतादिक जे

क्षेत्र सुहावे, काल त्रिके जे अरिहा आवे ॥ चार नाम ए निश्चय थावे, अंग उवंगे वात जणावे ॥ ३ ॥ ॥ सिद्धाणं० ॥ काउ० ॥ नो० ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्० ॥ पंचकल्याणके हर्ष अधुरे, नंदीश्वर द्वीपे जइ पूरे ॥ हर्ष महोत्सव करत अगाइ, देव देवी शुन्नवीरे वधाइ ॥ ४ ॥ पठी बेशी नमुथ्थुणं कही जावंति० कहेवी ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कहेवुं ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंन्नः ॥

॥ राग फाग ॥ थोया गप्पय ॥ ए देशी ॥ सासय पडिमा सुंदर, जिन घर केहशुं तेह ॥ चारण मुनिवर वंदी, नगवइ मांहे जेह ॥ उर्ध्व लोक चुलसी लख, सहस सत्ताणुं त्रेवीश ॥ सात कोडि लख बिहुत्तर, नवणे चैत्य गणीश ॥ १ ॥ जोइ वणेसु असंखा, कुंडले रुचके चार ॥ नंदीसर बर बावन, ए साठे चउ बार ॥ ति डुवारां शेष जिन घर, द्वार द्वार तिहां दीठ ॥ मुखमंडप रंगमंडप, सखरी मणिमयपीठ ॥ २ ॥ तस उपर वर थुंने, चिहुं दिशि पडिमा चार ॥ तदनंतर मणि पीठ, युगल वरते सुखकार ॥ वृक्ष अशोक धरमध्वज, वावी पुस्करिणी ज्यांही ॥ नवन नवन प्रति पडिमा, अष्टोत्तर शतमांही ॥ ३ ॥ पंचसयां धनु मोटी, पडिमा लघु सात

हाथ ॥ मणिपीठे देव छंदे, सिंहासन बेठा नाथ ॥ छत्र धरे एक चामर, धारी पडिमा दोय ॥ नाग जूआवली जरक, कुंडधरा दोय दोय ॥ ४ ॥ जोइस व्यंतर कल्प, निवासी जवण निकाय ॥ उपपाती अजिषेका, लंकारा व्यवसायं ॥ सज्ञा सुधर्मा पंचमी, मंडप षटके जुत्त ॥ प्रत्येके त्रुबारां, जिन घर जिन अदजुत ॥ ५ ॥ जोइ सादिक मांहि, थुज्ञ प्रत्येके बार ॥ प्रत्येके प्रतिमा नति, करीये नित्य सवार ॥ थून सज्ञाशुं गणतां, सासय पडिमा साठ ॥ चेइअ बिंब मिलंतां, जवणें असिसो पाठ ॥ ६ ॥ शत पचास बहुंत्तेर, योजन कहीये जेह ॥ लांबां पहोलां ऊंचां, अनुक्रमे मविये तेह ॥ स्वर्ग नंदीश्वर कुंडल, रुचके जवन प्रमाण ॥ तीस कुल गिरी दश कुरु, मेरुवने असिआण ॥ ७ ॥ अयसी वखारे जिनघर, गजदंताये वीश ॥ मणुअनगे इख्कुकारे, चार चार सुजंगीश ॥ पूर्व विहित परिमाणथी, अर्द्धप्रमाणे जाण ॥ तेहथी अर्द्धप्रमाणें, नागादि परिणाम ॥ ८ ॥ तेथी व्यंतर अरधा, चालीश दिग्गज सार ॥ अयसी द्रहे कंचन गिरी, देहेरां एक हजार ॥ सित्तेर महान इ दीर्घ, वैताढ्ये एकसो सित्तेर ॥ त्रणशें अयसी कुंडे, जिन ज-

चन नहिं फेर ॥ ए ॥ वीश जमग पंच चूला, जिनघर पडिमा घेर ॥ जंबु पमुह दश तरुवे, अगियारसें सित्तेर ॥ वृत्त वैताढ्ये वीस कोश, दीह अरु वि-स्थार ॥ धणुसय चउदश चालीश, उंचपणे अवधार ॥ ॥१०॥ नंदीश्वर विदिशे शक्री, शाण प्रिया आठ आठ ॥ तस नयरे त्रीठे सवि, तीस सय गुण साठ ॥ त्रिभुवन मांहे देहेरां, सगवन लख अरु कोडि ॥ दोयसें ब्यासी हवे सुणो, बिंब नमुं कर जोडि ॥ ११ ॥ तेरशें नेव्याशी कोटी, साठ लाख असुराइ जाण ॥ तिग लख सहस एकाणुं, त्रणसें वीस तीहें प्रमाण ॥ एकसो बावन को डि, चोराणुं लाख समेत ॥ सहस चुआलीस सग सय, साठ विमानिक चैत्य ॥ १२ ॥ पन्नरशें छुचत कोडि, अछवन्न लाख सुहाय ॥ छत्रीश सहसने अयसी, त्रि भुवन बिंब कहाय ॥ चउमासी दिन चेतीये, चतुरा जिध निज चित्त ॥ जो होत विद्यालब्धि तो, वीर वि जय नमे नित्त ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ पछी बेठा थका जयवीयराय पूरो कहीये, खमा समण आपी इच्छाकारेण कही शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नछ उससिएणं

कही काउस्सग्ग पूर्ण चार लोगस्सनो करी मह्होटी शांति सांजलीने, पारीने एक लोगस्स प्रगट कही पछी तेर वार नवकार गणीये. पछी श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंमरीक गणधर जगवानने नमो जिणाणं ए पाठ तेर वखत कहीये. पछी बेशीने जूदा जूदा पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहीये, ते लखीये छैये.

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥ विमला चल विमला पाणी, शीतल तरु गया गराणी ॥ रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ १ ॥ स नेही संत ए गिरि सेवो, चउद क्षेत्रे तीर्थ न एवो ॥ सनेही० ॥ षट्री पाली उल्लसीये, छठ अठमे काया कसीये ॥ मोह मल्लनी साहामा धसीये, विमलाचल वेगे वसीये ॥ स० ॥ २ ॥ अन्य स्थानक कर्म जे करीए, ते हिमगिरि हेठे हरीये ॥ पाखल प्रदक्षिणा फरीये, जवजलधि हेला तरीये ॥ स० ॥३ ॥ शिव मंदिर चढवा काजे, सोपाननी पंक्ति विराजे ॥ चढतां समकित ते गाजे, दूर जवियां अजव्य ते लाजे ॥ स० ॥ ४ ॥ पांडव पमुहा केइ संता, आदीश्वर ध्यान धरंता, परमातम जाव

द्रव्य जरी धरती कीयो ॥ ऊ:० ॥ ऋषज देव प्रासाद ॥ ॥ ज० ॥ ३ ॥ बिहुत्तर अधिकां आढशें ॥ ऊ:० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ ज० ॥ पन्नरशें कारीगरे ॥ ऊ० ॥ वरस त्रिके ते थाय ॥ ज० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचियो ॥ ॥ ऊ:० ॥ लाख त्रेपन्न बार कोडी ॥ ज० ॥ संवत दश अठाशीये ॥ ऊ:० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होडी ॥ ज० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ ऊ:० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ ज० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ ऊ:० ॥ ए दोय कांता जाण ॥ ज० ॥६॥ मूलनायक नेमीसरु ॥ ऊ:० ॥ चारशें अडशठ बिंब ॥ ज० ॥ ऋषज धातुमय देहरे ॥ ॥ ऊ:० ॥ एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ ज० ॥ ७ ॥ चउमुख चैत्य जुहारीये ॥ ऊ:० ॥ काउस्सगीया गुणवंत ॥ ॥ ज० ॥ बाणुं मित्त तेमां कहुं ॥ ऊ:० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ज० ॥ ८ ॥ अचल गढे प्रजुजी घणा ॥ ऊ:० ॥ जात्रा करो हुंशीयार ॥ ज० ॥ कोडी तपे फल जे लहे ॥ ॥ ऊ:० ॥ ते प्रजु जक्ति विचार ॥ ज० ॥ ए ॥ सालंबन निरालंबने ॥ ऊ:० ॥ प्रजुध्याने जवपार ॥ ज० ॥ मंगल लीला पामीये ॥ ऊ:० ॥ वीरविजय जयकार ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ इति अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टापद स्तवन ॥

॥ कुंभर गभारो नजरे० ॥ ए देशी ॥ चउ अठ दश दोय वंदीये जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरे जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ भरत भरत पति जिन मुखे जी; उच्चरीयां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणे जी, चोवीश प्रभुनो विहार रे ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ उंचपणे कोशतिग कह्युं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण भरावीयांजी, बिंब स्व पर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणे जी, पश्चिमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदे दश उत्तरे जी, पूर्वे ऋषभ वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ ऋषभ अजित पूरवे रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आतम शक्तिये करे जातरा जी, ते भव मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ॥ ५ ॥ देखो अचंभो श्री सिद्धाचले जी, हुआ असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिने पण इणे गिरे जी, झग मग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगे जी, देव महिमा गुण दाख रे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेव हिंडनी शाख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिन

नजंता, सिद्धाचल सिद्ध अनंता ॥ स० ॥ ५॥ षट्मासी ध्यान धरावे, शुकराजन राज्यने पावे ॥ बहिरंतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रणिधाने न जो गिरि जाचो, तीर्थंकर नाम निकाचो ॥ मोहरायने लागे तमाचो, शुन वीरविमल गिरि साचो ॥ स० ॥७॥

॥ अथ श्री गिरनार तिर्थ स्तवन ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीये विमल गिरी ॥ ए देशी ॥

सहसावन जइ वसिये, चालोने सखी सहसावन जइ वसीये ॥ घरनो धंधो कबुअन पूरो, जो करीये अहो निशिये ॥ चा० ॥ पीयरमां सुख घडीय न दीठुं, नय कारण चनुदिशिये ॥ चा० ॥ १ ॥ नाक विहूणा सयल कुंटुंबी, लज्जा किमपि नपसिये ॥ चा० ॥ नेलां जमीये ने नजर नहीसे, रहेवुं घोर तमसीये ॥ चा० ॥ २ ॥ पियर पाछल छल करी मेहेल्युं, सासरीये सुख वसीये ॥ ॥ चा० ॥ सासुडी ते घरघर नटके, लोकने चटके डसीये ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सासु आवे हांसु, शुंशीये मुख लेइ मशीये ॥ चा० ॥ कंत अमारो बालो नोलो, जाणे न असि मसि कसीये ॥ चा० ॥ ४ ॥ जूठा बोली कलहण शीक्षा, घरघर शुनी ज्यूं नसीये ॥ चा० ॥ ए छुःख

देखी हरखुं मुंझे, दुर्जनथी दूर खसीये ॥ चा० ॥ ५ ॥ रेवत गिरीनुं ध्यान न धरीयुं, काल गयो हस मशीये ॥ ॥ चा० ॥ श्री गिरनारे त्रण्य कल्याणक, नेमी नमन उ ल्लसीये ॥ चां० ॥ ६ ॥ शिव वरशे चोवीश जिनेश्वर, अ नागत चउवीशीये ॥ चा० ॥ कैलास उजयंत रैवत क- हीये, शरण गिरीने फरसीये ॥चा०॥७॥ गिरनार नंदनद्र ए नामे, आरे आरे ठ ब्रविसिये ॥ चा० ॥ देखी महि- तल महिमा महोटो, प्रजु गुण ज्ञान वसिये ॥ चा० ॥८॥ अनुजव रंग वाधे तेम पूजो, केशर घसी उरशीए ॥ ॥ चा० ॥ जाव स्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुजवीर वि लसीये ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुगिरि स्तवनं ॥

॥ चित्त चेतो रे ॥ ए देशी ॥ आदि जिणेसर पू- जतां दुःख मेटो रे ॥ आबूगढ दृढ चित्त ॥ जवि जइ जेटो रे ॥ देलवाडे देहेरां नमी ॥ दुः० ॥ चार परिमित नित्य ॥ ज० ॥ १ ॥ वीश गजबल पद्मावती ॥ दुः० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ ज० ॥ शंख दीये अंबी सुरी ॥ ॥ दुः० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ ज० ॥ २ ॥ बार पाद शाह जीतीने ॥ दुः० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ ज० ॥

द्रव्य नरी धरती कीयो ॥ मु:० ॥ रुषन देव प्रासाद ॥ ॥ न० ॥ ३ ॥ बिहुत्तर अधिकां आठशें ॥ मु:० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ न० ॥ पन्नरशें कारीगरे ॥ मु० ॥ वरस त्रिके ते थाय ॥ न० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचियो ॥ ॥ मु:० ॥ लाख त्रेपन्न बार कोडी ॥ न० ॥ संवत दश अठाशीये ॥ मु:० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होडी ॥ न० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ मु:० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ न० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ मु:० ॥ ए दोय कांता जाण ॥ न० ॥६॥ मूलनायक नेमीसरु ॥ मु:० ॥ चारशें अडशठ बिंब ॥ न० ॥ रुषन धातुमय देहरे ॥ ॥ मु:० ॥ एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ न० ॥ ७ ॥ चउमुख चैत्य जुहारीये ॥ मु:० ॥ काउस्सगीया गुणवंत ॥ ॥ न० ॥ बाणुं मित्त तेमां कहुं ॥ मु:० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ न० ॥ ८ ॥ अचल गढे प्रनुजी घणा ॥ मु:०॥ जात्रा करो हुंशीयार ॥ न० ॥ कोडी तपे फल जे लहे ॥ ॥ मु:० ॥ ते प्रनु नक्ति विचार ॥ न० ॥ ए ॥ सालंबन निरालंबने ॥ मु:० ॥ प्रनुध्याने नवपार ॥ न० ॥ मंगल लीला पामीये ॥ मु:० ॥ वीरविजय जयकार ॥ न० ॥ ॥ १० ॥ इति अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टापद स्तवन ॥

॥ कुंवर गजारो नजरेण ॥ ए देशी ॥ चउ अठ दश दोय वंदीये जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरे जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ जरत जरत पति जिन मुखे जी; उच्चरीयां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणे जी, चोवीश प्रजुनो विहार रे ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ उंचपणे कोशतिग कह्युं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण जरावीयांजी, बिंब स्व पर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणे जी, पछीमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदे दश उत्तरे जी, पूर्वे रुषज वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ रुषज अजित पूरवे रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आतम शक्तिये करे जातरा जी, ते जव मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ॥ ५ ॥ देखो अचंजो श्री सिद्धाचले जी, हुआ असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिने पण इणे गिरे जी, जग मग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगे जी, देव महिमा गुण दाख रे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेव हिंडनी शाख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिन

मुखमें सुण्युं जी, इणविधे पाठ पठाय रे ॥ श्री शुन्नवीर वचन रसे जी, गायो रुषन्न शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवनं ॥

॥ न्नमरा न्नूधरशें नाठ्यो ॥ ए देशी ॥ नाम सुणत शीतल श्रवणा, जस दर्शन शीतल नयनां ॥ स्तवन करत शीतल वयणां रे ॥ १ ॥ समेतशिखर नेटण चलजो, मुज मन बहु न्नवि सांन्नलजो रे ॥ अनुन्नव मित्र सहित मलजो रे ॥ स० ॥ २ ॥ जंबूद्वीप दाहिण न्नरते, पूरव देशे अनुसरते, समेतशिखर तीरथ वरते रे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ जस दर्शन घन कर्म दहे, दिनकर ताप गगन वहे, शशी दसी पक्ष वीनाश लहे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ अजितादिक दश शिव वरीआ, विमलादिक नव न्नव तरीया, पार्श्वनाथ एम वीश मलीया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मुक्ति वस्या प्रन्नु इण ठामे, वीशे टुंको अन्निरामे, वीश जिनेश्वरने नामे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उत्तरदिश ऐरवत मांहि, श्री सुप्रतिष्ठ गिरि ज्यांहि, सुचंद्रादिक वीश त्यांहि रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इम दश क्षेत्रे वीश लह्या, एक एक गिरिवर सिद्ध थया, तीथ्थोगाली पयन्ने कह्या रे

॥ स० ॥ ७ ॥ रत्नत्रयी जेहथी लहीये, जवजल पार ते निरवहिये, सज्ञान तीरथ तस कहिये रे ॥ स० ॥ ए ॥ कल्याणक एक जिहां थाय, ते पण तीरथ कहेवाय, वीश जिनेश्वर शिव जाय रे ॥ स० ॥ १० ॥ तेणे ए गिरिवर अन्निराम, मुनिवर कोमि शिव ठाम, शिववहू खेलण आराम रे ॥ स० ॥ ११ ॥ मुनिवर सूत्र अरथ धारी, विचरे गगन लब्धि प्यारी, देखी तीरथ पय चारी रे॥ ॥ स० ॥ १२ ॥ समेतशिखर सुप्रतिष्ठ तणी, ठवणा पूजन डुःख हरणी, घेर बेठां शिव नीसरणी रे ॥ स० ॥ ॥१३॥ दर्शने जस दर्शन वरीये, लही शुन्न सुख डुःख डां हरीये, वीर विजय शिव मंदिरीये रे ॥ स० ॥ १४ ॥ ॥ इति समेतशिखर स्तवनं ॥ ५ ॥ इति श्रीमत्संविज्ञ सुज्ञ प्राज्ञ तज्ज्ञ तंत्रज्ञ तपोगणेस्थित पंकित श्री १०७ श्री क्षमाविजय गणि शिष्य यशोविजयगणि शिष्य पंकित श्री शुन्नविजय गणि शिष्येण विरचिताब्द १७६५ आषाढ शुक्ल प्रतिपदि घस्रे त्रिक चातुर्मासिक देववंदन विधिः परिपूर्णतां प्राप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ग्रंथ संख्या ॥ ४२५ ॥

॥ अथ श्री पद्मविजयजी विरचित चौमासी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम आदिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवलज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हि तकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जि नेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंगमंडन, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोटि सेवित ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण म नहरं ॥ निर्जरावली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधित, कोडिपण मुनि मन हरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ न० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरि वरं ॥ मुगति रमणी वस्था रंगे ॥ न० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोक मांहे, विमल गिरिवर तो परं ॥ नहि अ धिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ न० ॥६॥ इम विमल गिरि वर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनारथ, परम ज्योतिने पाइये ॥७॥ जितमोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रुषन्न नमस्कारः ॥

॥ आदिदेव अलवेसरु, विनीतानो राय ॥ नाभि राय कुल मंमणो, मरुदेवा माय ॥ १ ॥ पांचशें धनुष नी देहमी, प्रनु परम दयाल ॥ चोराशी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ॥ २ ॥ वृषन्न लंबन जिन वृषधरु ए, उत्तम गुण मणिखाण ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, ल हीये अविचल ठाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ चार थोयो प्रारंन्न ॥

॥ आदिजिनवर राया, जास सोवन्न काया. मरु देवी जस माया, धोरी लंबन पाया ॥ जगतथिति नि पाया, शुद्ध चारित्र पाया, केवलसिरि राया, मोक्ष न गरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, डुर्गति डुःख न्नारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणी रूपक सुधारी, केवलानंत धारी, नमीयें नरना री, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समोसरणे बेठा, लागे जे जिनजी मीठा, करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दी ठा ॥ द्वादशांगी वरीठा, गुंथतां टाले रिठा, न्नविजन होय हिठा, देखी पुण्ये गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकित वंता, जेह रुद्धे महंता, जेह सज्जन संता, टालीये

मुज चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दुरंता, जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ सोना ते केरुं बेडलुं मारुजी, वाण्य खोदाव ॥ ए देशी ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीये, जास सुगंधीरे काय ॥ कल्पवृक्षपरे तास, इंद्राणी नयन जे, भृंगपरे लपटाय ॥ ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे, जगमां तुह्म शुं रे वाद ॥ २ ॥ विगर धोइ तुज निरमली, काया कंचनवान ॥ नाहिं प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जे धरे तारुं रे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मन थकी, तेमां चित्र न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जनमथी दूध सहोदर होय ॥४॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार नीहार चरम चक्षु धणी, एहवा तुज अवदात ॥५॥ चार अतिशय मूलथी, उगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एह समय प्रभु पालजो, जिम थाउं अखय अनंग ॥७॥ इति॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अजितनाथ प्रभु अवतर्यो, विनितानो स्वामी ॥ जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिवगामी ॥ १ ॥ बहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाल्युं जिणे आय ॥ गज लंछन लंछन नहिं, प्रणमे सुर राय ॥ साडा चारशें धनुषनी ए, जिन वर उत्तम देह ॥ पाद पद्म तस प्रणमीये, जिम लहीये शिव गेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो, शीतल ताये चंदो, धीरताये गिरिंदो ॥ मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरींदो, लहो परमाणंदो, सेवना सुखकंदो ॥२॥

॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ ॥ जितारी नृप नंदनो, चलवे शिव साथ ॥ सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे ॥ चारशें धनुषनुं देह मान, प्रणमुं मन रंगे ॥ साठ लाख पूरवतणुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तुरग लंछन पद पद्मने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संभव सुखदाता, जेह जगमां विख्याता, षटजी

ऊना त्राता, आपता सुखदाता ॥ माताने ध्याता, केवल ज्ञान ज्ञाता, दुःख दोहग घाता, जास नामे पलाता ॥१॥

॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ नंदन संवर रायनो, चोथा अभिनंदन ॥ कपि लंछन वंदन करो, भव दुःख निकंदन ॥ १ ॥ सिद्धारथ जस मावडी, सिद्धारथ जिन राय ॥ साडा त्रणशें धनु षमान, सुंदर जस काय ॥ २ ॥ विनता वासी वंदीये ए, आयु लख पंचास ॥ पूरव तस पद पद्मने, नमतां शिव पुर वास ॥ ३ ॥ इति श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो, थयो ही रो साचो, मोहने दे तमाचो ॥ प्रभुगुणगण माचो, एह ने ध्याने राचो, जिनपद सुख साचो, भव्यप्राणी निका चो ॥ १ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसला जस नयरी ॥ मेघ राय मंगला तणो, नंदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रौंच लंछन जिनराजियो, त्रणशें धनुषनी देह ॥ चालीश लाख पू-

रव तणुं, आयु अति गुणगेह ॥ सुमति गुणे करी जे भस्यो ए, तस्यो संसार अगाध ॥ तस पद पद्म सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

सुमति सुमति दायी, मंगला जास माइ, मेरुने वली राइ, ओर एहने बुलाइ ॥ क्षय कीधां घाइ, केवल ज्ञान पाइ, नहिं ऊणिम कांइ, सेविये ते सदाइ ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ कोसंबीपुर राजियो, धर नरपति राय ॥ पद्म प्रभ प्रभुतामयी, सुसिमा जस माय ॥ १ ॥ त्रीश लाख पूरव तणुं, जिन आयु पाली ॥ धनुष अढीशें देहडी, सवि कर्मने टाली ॥ २ ॥ पद्म लंछन परमेश्वरुए, जिनपद पद्मनी सेव ॥ पद्मविजय कहे कीजिये, भविजन सहु नियमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अढीशें धनुष काया, त्यक्त मद मोह माया, सुसिमा जस माया, शुक्ल जे ध्यान ध्याया ॥ केवलवर पाया, चामरादिधराया, सेवे सुरराया, मोक्षनगरे सधाया ॥१॥

ज़ा नद्दिलपुर तणुं, चलावे शिव साथ ॥ १ ॥ लाख पू-
रवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टालीने, लह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन सुंदरु ए,
पद पद्मे रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकि, लहीये लीला विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी, प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी ॥ जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी, भवि शिव सुख कामी, प्रणमीये शिश नामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय ॥ विष्णु माता जेहनी, एंशी धनुषनी काय ॥ वरस चोराशी लाखनुं, पाळ्युं जेणे आय ॥ खडगी लंछन पदकजे, सिंहपुरीनो राय ॥ राज्य तजी दीक्षा वरीए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ॥ ३ ॥ इति श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात, प्रभुना अ

वदात, तीन भुवनमें विख्यात ॥ सुरपति संघात, जास निकटे आयात, करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष सात ॥ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम ॥ वासु पूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस मुख पद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी, धर्मना दा तारी, कामक्रोधादि वारी ॥ तार्यां नरनारी, दुःख दोह ग हारी, वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कपिलपुर विमल प्रभु, श्यामा मात मल्हार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभे, उगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लं- छन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ लाख व-

॥ अथ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सुपास जिणंदपास, टाल्यो भव केरो ॥ पृथिवी मात उरे जयो, ते नाथ हमेरो ॥ १ ॥ प्रतिष्टित सुतसुंदरे, वाणारसी राय ॥ वीश लाख पूरवतणुं, प्रभुजीनुं आय ॥२॥ धनुष बशें जिन देहडी, स्वस्तिक लंछन सार ॥ पदपद्मे जस राजतो, तार तार भव तार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुपास जिन वाणी, सांभले जेह प्राणी ॥ हृदये पहेंचाणी, ते तस्या भव्य प्राणी ॥ पांत्रीश गुण खाणी, सूत्रमां जे गुंथाणी, षट द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं घाणी ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ लखमणा माता जनमीयो, महसेन जस ताय ॥ उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपूरीनो राय ॥ १ ॥ दश लख पूरव आउखुं, दोढशो धनुषनी देह ॥ सुरनर पति सेवा करे, धरता अति ससनेह ॥ २॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सेवे सुरवर वृंदा, जास चरणारविंदा, अठम जिन चंदा, चंदवर्णे सोहंदा ॥ महसेन नृप नंदा, कापता दुःखदंदा ॥ लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा ॥१॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुबुद्धिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात ॥ मगरलंछन चरणे नमुं, रामा रूडी मात ॥ १ ॥ आयु बे लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय ॥ काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभुपाय ॥ २ ॥ उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुबुद्धि जिननाम ॥ नमतां तस पदपद्मने, लहीये शाश्वत धाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो, जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो ॥ जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो, सुबुद्धि जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नंद दढरथ नंदनो, शीतल शीतल नाथ ॥ रा-

जा नद्दिलपुर तणुं, चलावे शिव साथं ॥ १ ॥ लाख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टाली ने, लह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंछन सुंदरु ए, पद पद्म रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकि, लहीये लील विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी, प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी ॥ जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी, भवि शिव सुख कामी, प्रणमीये शिश नामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय ॥ विष्णु माता जेहनी, एंशी धनुषनी काय ॥ वरस चोराशी लाखनुं, पाह्युं जेणे आय ॥ खडगी लंछन पदकजे, सिंह पुरीनो राय ॥ राज्य तजी दीक्षा वरीए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ॥ ३ ॥ इति श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात, प्रभुना अ

वदात, तीन भुवनमें विख्यात ॥ सुरपति संघात, जास निकटे आयात, करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष सात ॥ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ताम ॥ वासु पूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस मुख पद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी, धर्मना दातारी, कामक्रोधादि वारी ॥ तार्यां नरनारी, दुःख दोहग हारी, वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कपिलपुर विमल प्रभु, श्यामा मात मल्हार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभें, उगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ लाख व-

रसां तणुं, आयु सुख समुदाय ॥ २ ॥ विमल विमल पोते थयो ए, सेवक विमल करेह ॥ तुज पद पद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो, एहमां छे महहारो, विश्वकीर्त्ति विफारो ॥ योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो, गुण गण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अनंत अनंतगुण आगरु, अयोध्या वासी ॥ सिंहसेन नृपनंदनो, थयो पाप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा माता जनमीयो, त्रीश लाख उदार ॥ वरस आउखुं पालीयुं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंछन सींचाण तणुं ए, काया धनुष पचास ॥ जिन पद पद्म नम्या थकी, लहिये सहज विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत अनंत नाणी, जास महिमा गवाणी, सुर नर तिरि प्राणी, सांभले जास वाणी ॥ एक वचन सम

जाणी, जेह स्याद्वाद जाणी, तस्था ते गुण खाणी, पामीया सिद्धि राणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात ॥ वज्रलंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥१॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनु पीस्तालीश ॥ रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश ॥ २ ॥ धर्म मारग जिनवर कहीये, उत्तम जन आधार ॥ तेणे तुज पाद पद्म तणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म धर्म धोरी, कर्मना पास तोरी, केवलश्री जोरी, जेह चोरे न चोरी ॥ दर्शन मद छोरी, जाय भाग्या सटोरी, नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी ॥ १ ॥

॥ अथ शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शांति जिनेसर शोलमा, अचिरा सुत वंदो ॥ विश्वसेन कुल नभमणि, भविजन सुखकंदो ॥ १ ॥ मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हस्तिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण ॥ २ ॥ चालीश

धनुषनी देहडीए, सम चउरस संठाण ॥ वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यते ॥

॥ वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति, टाले नव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति ॥ द्रव्यनाव अरि पांति, तास करता निकांति, धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥ १ ॥ दोय जिनवर नीला, दोय धोला सुशीला, दोय रकत रंगीला, काढता कर्म कीला ॥ न करे कोइ हीला, दोय श्याम सलीला, शोल स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, मोह वल्ली कृपाणी, सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी ॥ अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी, प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशाणी ॥ ३ ॥ वाघेसरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी, जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी ॥ जे नित्य समरेवी, दुःख तेहनां हरेवी, पद्मविजय कहेवी, जव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिजिन स्तवन ॥

गरबो कोणेने कोराव्यो के नंदजीना लाल रे ॥ ए देशी ॥ शोलमा शांति जिनेसर देवके, अचिराना नं

दूरे ॥ जेहनी सारे सुरपति सेव के ॥ अ० ॥ तिरिनर सुर समुदाय के ॥ अ० ॥ एक योजन मांहे समाय के ॥ अ० ॥ १ ॥ तेहने प्रभुजीनी वाणी के ॥ अ० ॥ परिणमे समजे भवि प्राणी के ॥ अ० ॥ सहु जिवना संशय भांजे के ॥ अ० ॥ प्रभु मेघ ध्वनि एम गाजेके ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ जेहने जोयण सवासो मान के ॥ अ० ॥ जे पूर्वना रोग तेणे थान के ॥ अ० ॥ सहु नाश थाये नवा नावे के ॥ अ० ॥ षट मास प्रभु परभावे के ॥ अ० ॥ ३ ॥ जिहां जिनजी विचरे रंग के ॥ अ० ॥ नवि मूषक शलभ पतंग के ॥ अ० ॥ नवि कोइने वयर विरोध के ॥ अ० ॥ अतिवृष्टि अनावृष्टि रोधके ॥ अ० ॥४॥ निजपर चक्रनो भय नासेके ॥ अ० ॥ वली मरकी नावे पासे के ॥ अ० ॥ प्रभु विचरे तिहां न डुकालके ॥ अ० ॥ जाये उपद्रव सवि ततकाल के ॥ अ० ॥५॥ जस मस्तक पूंठे राजे के ॥ ॥ अ० ॥ भामंडल रविपरे छाजे के ॥ अ० ॥ कर्म क्षयथी अतिशय अगीयार के ॥ अ० ॥ मानुं योग्य साम्राज्य परिवार के ॥ अ० ॥ ६ ॥ कब देखुं भाव ए भावे के ॥ अ० ॥ एम होंश घणी चित्त आवे के ॥अ०॥ श्री जिन उत्तमपर भावे के ॥ अ० ॥ कहे पद्मविजय बनी आवे के ॥अ० ॥७॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय ॥ सिरि माता उरे अवतर्यो, शूर नरपति ताय ॥ १ ॥ काया पांत्रीश धनुषनी, लंछन जस छाग ॥ केवल ज्ञानादिक गुणा, प्रणमो धरी राग ॥ २ ॥ सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, भावे श्री जिनराय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ कुंथु जिन नाथ, जे करे छे सनाथ, तारे भव पाथ, जे ग्रही भव्य हाथ ॥ एहनो तजे साथ, बावले दीये बाथ, तरे सुरनर साथ, जे सुणे एक गाथ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नागपुरे अरजिन वरू, सुदर्शन नृपनंद ॥ देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद ॥ १ ॥ लंछन नंदावर्त्तनुं, काया धनुष त्रीश ॥ सहस चोराशी वरषनुं, आयु जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज जिन वरू ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पद पद्म आलंबतां, लहीये पद निरवाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अरजिनवर राया, जेहनी देवी माया, सुदर्शननृप ताया, जास सुवर्ण काया ॥ नंदावर्त्त पाया, देशना शुद्ध दाया, समवसरण विरचाया, इंद्र इंद्राणी गाया ॥ १ ॥

॥ अथ श्री मल्लिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ जगणीशमा, जस मिथुला नयरी ॥ प्रभावती जस मावडी, टाले कर्म वयरी ॥ १ ॥ तात श्री कुंभ नरेसरू, धनुष पचवीशनी काय ॥ लंछन कलश मंगलकरु, निर्मम निरमाय ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे तेहने, नमतां शिव सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मल्लिजिन नमीये, पूरवला पाप गमीये, इंद्रिय गण दमिये, आण जिननी न क्रमीये ॥ भवमां नवि भमीये, सर्व परभाव वमीये, निजगुणमां रमीये, कर्ममल सर्व धमीये ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रतजिन चैत्यवंदन ॥

॥ मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कछपनुं लंछन ॥ पद्मा

माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन ॥ १ ॥ राजगृही नगरी धणी, वीश धनुष शरीर ॥ कर्म निकाचित रेणुव्रज, उद्दाम समीर ॥ २ ॥ त्रीश हजार वरस तणुं ए, पाली आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे ॥ सवि संपत्ति पामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे ॥ सवि कर्म विरामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ मिथिला नयरी राजीयो, विप्रा सुत साचो ॥ विजयराय सुत छोडीने, अवरा मत माचो ॥ १ ॥ नील कमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह ॥ नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणि गेह ॥ २ ॥ दश हजार वरस तणुं ए, पाल्युं परगट आय ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, नमिये ते जिनराय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नमिये नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह, अघ समु

दय जेह, ते रहे नांही रेह ॥ लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह, लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह ॥ १ ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमिनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्र विजय पृथिवि पति, जे प्रभुना ताय ॥ १ ॥ दशह धनु षनी देहडी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सोरीपुर नयरी जली ए, ब्रह्मचारी जगवान ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारंजः ॥

॥ राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी ॥ तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी ॥ पशुआं उगारी, हूआ चारित्र धारी ॥ केवल श्री सारी, पामीया घाती वारी ॥ ॥ १ ॥ त्रण ज्ञान संयुत्ता, मातनी कूंखे हूंता ॥ जनमे सुरहूंता, आवी सेवा करंता ॥ अनुक्रमे व्रत करंता, पांच समिति धरंता ॥ महियल विचरंता, केवलश्री वरंता ॥ २ ॥ सवि सुरवर आवे, जावना चित्त लावे ॥ त्रिगडुं सोहावे, देव छंदो बनावे ॥ सिंहासन ठावे, स्वामिना

गुण गावे ॥ तिहां जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ॥ ॥ ३ ॥ शासन सुरी सारी, अंबिका नाम धारी ॥ जे समकेति नर नारी, पाप संताप वारी ॥ प्रभु सेवा कारी, जाप जपीये सवारी, संघ डुरितने वारी, पद्मने जेह प्यारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ स्तवन ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा, जयवंताजी ॥ ए देशी ॥ निरख्यो नेमि जिणंदने अरिहंताजी ॥ राजीमति कर्यो त्याग, जगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो ॥ अ० ॥ अनुक्रमें थया वीतराग ॥ ज० ॥ १ ॥ चामर चक्र सिंहासन ॥ अ० ॥ पाद पीठ संयुक्त ॥ ज० ॥ छत्र चाले आकाशमां ॥ अ० ॥ देव डुंडुभिवर उत्त ॥ ज० ॥ २ ॥ सहस जोयण ध्वज सोहतो ॥ अ० ॥ प्रभु आगल चालंत ॥ ज० ॥ कनक कमल तव उपरे ॥ अ० ॥ विचरे पाय ठवंत ॥ ज० ॥३॥ चार मुखे दीये देशना ॥ अ० ॥ त्रण गढ जाक जमाल ॥ ज० ॥ केश रोम श्मश्रु नखा ॥अ०॥ वाधे नहीं कोइ काल ॥ ज० ॥ ४ ॥ कांटा पण उंधा होय ॥ अ० ॥ पंच विषय अनुकूल ॥ ज० ॥ षट् रुतु सम काले फले ॥ अ० ॥ वायु नहीं प्रतिकूल ॥ ज० ॥ ५ ॥

पाणी सुगंध सुर कुसुमनी ॥ अ० ॥ वृष्टि होये सुरसाल ॥ ज० ॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥ अ० ॥ वृक्ष नमे अ सराल ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी ॥ अ० ॥ सेव करे सुर कोडी ॥ ज० ॥ चार निकायना जघन्यथी ॥ अ० ॥ चैत्य वृक्ष तेम जोडी ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ आश पूरे प्रभु पासजी, त्रोडे भव पाश ॥ बामा माता जनमीयो, अही लंछन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन सुत सुखकरू, नव हाथनी काया ॥ काशीदेश वाणारसी, पुण्ये प्रभु आया ॥ २ ॥ एकशो वरसनुं आउखुं ए, पाली पास कुमार ॥ पद्म कहे मुक्ते गया, नमतां सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारंभः ॥

॥ श्री पास जिणंदा, मुख पूनम चंदा ॥ पद युग अरविंदा, सेवे चोशठ इंदा ॥ लंछन नागिंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सेवे गुणी वृंदा, जेहनी सुखकंदा ॥ १ ॥ जनमथी वर चार, कर्म नासे इग्यार ॥ उगणीश निरधार, देवे कीधा उदार ॥ सवि चोत्रीश धार, पुण्यना ए प्रकार ॥ नमिये नर नार, जेम संसार पार ॥ २ ॥ एका-

दश अंगा, तेम बारे उवंगा ॥ षट् छंद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा ॥ दश पइन्न सुसंगा, सांजलो थइ एकंगा ॥ अनुयोग बहु जंगा, नंदीसूत्र प्रसंगा ॥ ३ ॥ पासे यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो ॥ अडतालीश जासो, सहस परिवार खासो ॥ सहुथे प्रजुदासो, मागता मोक्ष वासो ॥ कहे पद्म निकासो, विघ्नना वृंद पासो ॥ ४ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ मारा पासजीरे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी त्रेवीशमो जिन पास, आश मुज पूरवे रे लो ॥ माहरा नाथजी रे लो ॥ जि० ॥ इह जव परजव दुःख दोहग सवि, चूरवे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ताहरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूरे गयो रे लो ॥ मा० ॥ १ ॥ जि० ॥ जानु प्रमाण गीर्वाण, कुसुमवृष्टि करे रे लो ॥ मा० ॥ ॥ जि० ॥ दिव्य ध्वनी सुर पूरे के, वांसलीये स्वरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ चामर केरी हार चलंती, एम कहे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ जे नमे अमर परे ते जवि, उर्ध्व गति लहे रे लो ॥ मा० ॥ २॥ जि० ॥ पादपीठ सिंहासन, व्यंतर विरचिये रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ तिहां बेसी

जिनराज, भविक देशना दिये रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ भामंडल शिर पूठे, सूर्यपरे तपे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ निरखी हरखे जेह, तेहना पातक खपे रे लो ॥ मा० ॥ ॥ ३ ॥ जि० ॥ देव डुंडुभिनो नाद, गंभिर गाजे घणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवने पतिपणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ए ठकुराइ तुझके, बीजे नवि घटे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो ॥ मा० ॥ ४ ॥ जि० ॥ पूजक निंदक दोयके, ताहारे समपणे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ कमठ धरणपति उपरे, समचित्त तुं गणे रे लो ॥ मा० ॥ ॥ जि० ॥ पण उत्तम तुजपाद, पद्म सेवा करे रे लो ॥ ॥ मा० ॥ जि० ॥ तेह स्वभावे भव्य के, भवसायर तरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान स्वामि चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धारथ सुत वंदिये, त्रिशलानो जायो ॥ ख त्रिकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोत्तेर वरसनुं आ उखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥२॥ खिमाविजय जिनरायना

ए, उत्तमगुण अवदात ॥ सात बोलथी वर्णव्यो, पद्म विजय विख्यात ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा, लंछन मृगेंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सुर नरवर इंदा, नित्य सेवा करंदा, टाले भवफंदा, सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, मोक्षमां सुखशाता, अड जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे अख्याता, अड जिनप जनेता, नाक माहेंद्र याता, सवि जिनवर नेता, शाश्वतां सुख देता ॥ २ ॥ मल्ली नेमी पास, आदि अठ्ठम खास ॥ करी एक उपवास, वासुपूज्य सुवास ॥ शेष छठ सुविलास, केवलज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकाश, जेम अज्ञान नाश ॥३॥ जिनवर जगदीश, जास मझोटी जगीश, नहिं राग ने रीश, नामीये तास शीश ॥ मातंग सुर ईश, सेवतो राति दीस, गुरु उत्तम अधीश, पद्म भांखे सुशीश ॥४॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ गेव सागररी पाल, उभी दोय नागरी मारा लाल ॥ ए देशी ॥ शासन नायक शिवसुख, दायक जिन-

पति ॥ मारा लाल ॥ पायक जास सुरासुर, चरणे नरपति ॥ मा० ॥ सायक कंदर्प केरा, जेणे नवि चित्त धस्या ॥ मा० ॥ ढायक पातक वृंद, चरण अंगी कस्यां ॥ ॥ मा० ॥१॥ खायकन्नावे केवल, ज्ञान दर्शन धरे ॥ मा० ॥ ज्ञायक लोका लोकना, न्नावशुं विस्तरे ॥ मा० ॥ घायक घाति कर्म, मर्मनी आपदा ॥ मा० ॥ लायक अतिशय प्राति, हार्यनी संपदा ॥ मा० ॥ २ ॥ कारक षट् थयां तुजके, आतम तत्त्वमां ॥ मा० ॥ धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां ॥ मा० ॥ नारक नर तिरि देव, ज्रमणथी हुं थयो ॥ मा० ॥ कारक जेह विन्नाव, तेणे विपरित न्नयो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तारक तुं नवि जीवने, समरथ में लह्यो ॥ मा० ॥ ठारक करुणा रसथी, क्रोधानल दह्यो ॥ मा० ॥ वारक जेह उपाधि, अनादिनी सहचरी ॥ मा० ॥ कारक जिन गुण ऋद्धि, सेवकने बराबरी ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ वाणी एहवी सांन्नली, जिन आगम तणी ॥ मा० ॥ जाणी उत्तम आश, धरी मनमां घणी ॥ ॥ मा० ॥ खाणी गुणनी तुज, पद पद्मनी चाकरी ॥मा०॥ आणी हैडे हेज, करुं निज पद करी ॥ मा० ॥ ५ ॥इति॥ पठी जयवीयराय पुरुं कहेवुं ॥

॥ अथ शाश्वता अशाश्वता प्रभु चैत्यवंदन ॥

॥ कोडि सात ने लाख बोहोंतेर वखाणुं, भुवन पति चैत्य संख्या प्रमाणुं ॥ एंशी सो जिन बिंब एक चैत्य ठामे, नमो सासय जिनवरा मोक्ष कामे ॥ १ ॥ कोडी तेरसें नेव्याशी वखाणे. साठ लाख उपर सवि बिंब जाणे ॥ असंख्यात व्यंतर तणा नग्र नामे ॥ न० ॥ २ ॥ असंख्यात तिहां चैत्य तेम ज्योतिषीये, बिंब एक शत एंशी नांख्यां ऋषिये ॥ नमे ते महा ऋद्धि नवनिद्धि पामे ॥ न० ॥ ३ ॥ वली बार देवलोकमां चैत्यसार, ग्रैवेक नव मांहि देहरां उदार ॥ तिम अनुत्तरे देखीने म पडो नामे ॥ न० ॥ ४ ॥ चौराशी लाख तेम सत्ताणुं सहस्सा, उपर त्रेवीश चैत्य शोभाये सरसा ॥ हवे बिंब संख्या कहुं तेह धामे ॥ न० ॥ ५ ॥ सो कोडीने बावन कोडी जाणो, चोराणुंलख सहस चौआल आणो ॥ सय सात ने साठ उपरे प्रकामे ॥ न० ॥ ६ ॥ मेरु राजधानी गजदंत सार, जमक चित्र विचित्र कांचन वखार ॥ इख्रुकारने वर्षधर नाम ठामे ॥ न० ॥ ७ ॥ वली दीर्घ वैताढ्यने वृत्त जेह, जंबू आदि वृक्षे दिशा गज छे तेह ॥ कुंड महा नदी द्रह प्रमुख चैत्य ग्रामे ॥ न० ॥ ८ ॥ मा

नुषोत्तर नगवरे जेह चैत्य, नंदीसर रुचक कुंडले बे प-
वित्त ॥ त्रिर्छालोकमां चैत्य नमिये सुठामे ॥ न० ॥ ए॥
प्रनु रुषन्न चंद्रानन वारिषेण, वलि वर्द्धमानाभिधे चार
श्रेण ॥ एह शाश्वता बिंब सवि चार नामे ॥ न० ॥ १०॥
सवि कोडिसय पनर बायाल धार, अठावन लख सहस
बत्रीश सार ॥ एंशी जोइश वण त्रिना सिद्धि धामे ॥
॥ न० ॥ ११ ॥ अशाश्वत जिनवर नमो प्रेम आणी, के
म नांखिये तेह जाणी अजाणी ॥ बहु तीर्थने ठाम बहु
गाम गामे ॥ न० ॥ १२ ॥ एम जिन प्रणमी जे, मोह
नृपने दमीजे, नव नव न नमीजे, पाप सर्वे गमीजे ॥
परन्नाव वमीजे, जो प्रनु अठमी जे, पद्मविजय नमी
जे, आतम तत्वे रमीजे ॥ १३ ॥ इति श्री शाश्वत अशा
श्वत जिन नमस्कारः ॥ अहीं नमुथ्थुणं कहीने एक लो
गस्सनो काउस्सग्ग चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवो.
एकजणे काउस्सग्ग पारी चार थोइ साथे कहेवी, ते ल
खीये बैये.

॥ अथ थोय प्रारंन्न ॥

॥ रुषन्न चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दुःख वारे
जी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए

चारेजी ॥ भरतादिक क्षेत्रे मलि होवे, चार नाम चित्त धारे जी ॥ तेणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमिये नित्य सवारे जी ॥ १ ॥ ऊर्ध्व अधो त्रिछे लोके, थइ कोडि पन्नरसें जाणोजी ॥ उपर कोडी वहेंतालीश प्रणमो, अड वन लखमन आणोजी ॥ छत्रीश सहस असी ते उपरे, बिंबतणो परिमाणो जी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषीमां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवती सूत्रे भांखीजी ॥ वलीय अशाश्वत ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखे आखीजी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र छे साखी जी ॥ ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशान इंद्र कहाया जी ॥ तेम सुरियाभ प्रमुख बहु सुरवर, देवीतणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइ महोत्सव, करे अतिहर्ष भरायाजी ॥ जिन उत्तम कल्याणिक दिवसे, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥

॥ अहींआं लगतीज महोटी शांति एक जणे कहेवी, अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभले. पछी सर्व जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरण कहे. पछी बेशीने सर्व जण तेर नवकार गणे. तेवार पछी "श्री.

सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंडरीक गणध राय नमो नमः" ॥ ए पाठ तेर वखत सर्व जनोये कहे- वो. पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीये छैये.

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ जशोदा मावडी ॥ ए देशी ॥ जात्रा नवाणुं करी ये विमलगिरि ॥ जात्रा० ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजा गिरि, रुषन्न जिणंद समोसरीये ॥ वि० ॥ ॥ १ ॥ कोडी सहस्स नव पातक त्रूटे, शेत्रुंजय साहामा डग नरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अठम तप- स्या, करी चढीये गिरिवरीये ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरषे, अध्यवसाय शुन्न धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्नवि न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥ वि० ॥ ॥ ५ ॥ [१]भुंइ संथारो ने [२]नारी तणो संग, दूरथकी परहरी ये ॥ वि० ॥ ६ ॥ [३]सचित परिहारीने एकल[४] आहारी, गुरु साथे [५]पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्क[६]मणां दोय विधि शुं करीये, पाप पडल विखरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिका ले ए तीरथ महोटुं, प्रवहण जेम नव तरीये ॥ वि० ॥ ॥ ए ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे नव तरीये ॥ ॥ वि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

॥ म्हारा वालाजी ॥ ए देशी ॥ तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंतरे, प्रीतमजी ॥ आठ भवानी प्रीतडी ओडी तंत ॥ म्हारा प्रीतमजी ॥ नवमे भव पण नेह न आणो मुजरे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुज ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तीर्यंचनो एमरे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ षट्जीवना रखवालमां शिरदार रे ॥ प्री० ॥ तो केम विलवती स्वामि मूको नारी ॥ मा० ॥ २ ॥ शिववधू केरुं एहवुं कहेवुं रूप रे ॥ प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन भूप ॥ ॥ मा० ॥ जिनजी लीये सहसावनमां व्रत भार रे ॥ प्री० ॥ घातीकरम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ ३ ॥ केवल ऋद्धि अनंती परगट कीधरे ॥ प्री० ॥ जाणी राजुल एम प्रतिज्ञा लीध ॥ मा० ॥ जे प्रभुजीये कीधुं करवुं तेह रे ॥ ॥ प्री० ॥ एम कही व्रतधर थइ प्रभु पासे जेह ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ प्रभु पहेलां निज शोकनुं जोवा रूप रे ॥ प्री० ॥ केवलज्ञान लही थइ सिद्ध सरूप ॥ मा० ॥ शिववधू वरीया जिनवर उत्तम नेम रे ॥ प्री० ॥ पद्म कहे प्रभु राख्यो अविचल प्रेम ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥

॥ कोयलो परवत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ आबु अचल रलियामणो रे लो, देलवाडे मनोहार ॥ सुखकारी रे॥ वाद लीये जे स्वर्गशुं रे लो, देउल दीपे चार॥ बलीहारी रे ॥ १ ॥ जात्र धरीने भेटीये रे लो ॥ ए आंकणी ॥ बार पादशाह वश कीया रे लो, विमल मंत्री सर सार ॥ सु० ॥ तेणे प्रासाद निपाइयो रे लो, रुषभ जी जगदाधार ॥ बलीहारी रे ॥ आबु अचल रलीयामणो रे लो ॥ २ ॥ तेह चैत्यमां जिनवरु रे लो ॥ आठशें ने ओत्तेर ॥ सु० ॥ जेह दीठे प्रभु सांभरे रे लो, मोह कर्यो जेणे जेर ॥ ब० ॥ आबु० ॥ ३ ॥ द्रव्य भरी धरती मवी रे लो, दीधो देउल काज ॥ सु० ॥ चैत्य तिहां मंडावीयो रे लो, लेवा शिवपुर राज ॥ ब० ॥ आबु० ॥४॥ पन्नरशें कारीगरा रे लो, दीवीधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दनकारक वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ ब० ॥ ॥ आबु० ॥ ५ ॥ कोरणी धोरणी तिहां करी रे लो, दीठेबने ते वात ॥ सु० ॥ पण नवी जाय मुखे कही रे लो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ ब० ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रणे वरसे

नीपनो रे लो, ते प्रासाद उत्तुंग ॥ सु० ॥ बार कोडी त्रे-
पन लक्षने रे लो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ ब० ॥ आ० ॥
॥ ७ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला रे लो, देखतां हरख
ते थाय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीया रे लो, धन्य ध-
न्य एहनी माय ॥ ब० ॥ आ० ॥ ८ ॥ मूलनायक नेमी
श्वरू रे लो, जन्मथकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज सत्ता र-
मणी थया रे लो, गुण अनंत आधार ॥ ब० ॥ आ० ॥
॥ ए ॥ चारशें ने अडसठ नला रे लो, जिनवर बिंब वि
शाल ॥ सु० ॥ आज नले में नेटीया रे लो, पाप गयां
पायाल ॥ ब० ॥ आ० ॥ १० ॥ ऋषन्न धातुमयी देहरे रे
लो, एकसो पिस्तालीश बिंब ॥ सु० ॥ चौमुख चैत्य जूहा-
रीये रे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ ब० ॥आ०॥११॥ बाणुं
काउस्सग्गीआ तेहमां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥
॥ सु० ॥ अचलगढे बहु जिनवरा रे लो, वंदूं तेहना
पाय ॥ ब० ॥ आ० ॥ १२ ॥ धातुमयी परमेश्वरा रे लो,
अद्भूत जास स्वरूप ॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंद
तां रे लो, थाये निजगुण नूप ॥ ब० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अ
ढारशें ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज दिन्न ॥ सु० ॥
पालणपुरना संघशुं रे लो, ऋणमी थयो धन धन्न ॥

॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरू रे लो, यात्रा करी अद्भूत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांजरे रे लो, सेव करे पुरुहूत ॥ व० ॥ आ० ॥ १५ ॥ एम जाणी आबु तणी रे लो, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्मविजय कहे तेह ॥ ॥ व० ॥ आ० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टापद स्तवन ॥

॥ अष्टापद अरिहंतजी महारा वाहालाजी रे ॥ आदीश्वर अवधार ॥ नमीये नेहशुं ॥ महा० ॥ दश ह जार मुणिंदशुं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधू सार ॥ नमी ये० ॥ १ ॥ भरत भूप भावे कस्यो ॥ मा० ॥ चउमुख चै त्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशें जिहां ॥ मा० ॥ था प्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे विराजता ॥ मा० ॥ लंछनने अलंकार ॥ न० ॥ शम नासाये शोनता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक क रतां विचार ॥ न० ॥ त्रूटि तांत तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी वजावी ति

णे समे ॥ मा० ॥ पण नवि ओडयुं ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अदभुत भावशुं गान ॥ न०॥ ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जग चिंतामणि तिहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटिको ॥ मा० ॥ तिणे भवि पामे जे सिद्धि ॥ न० ॥ ते निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वतऋद्धि ॥ न०॥ ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोडि कल्याण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवन ॥

॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥ समेतशिखर जिन वंदीये, मोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे भव तणो, तीरथ कहिये तेह रे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रभ शिव सुख वर्या, त्रणशें अड अणगार रे ॥ समेत० ॥२॥ पांचशें मुनि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणिंद रे ॥ समेत० ॥ ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीधा

रे ॥ सात सहसशुं चौदमा, निज कारय वर कीधा रे ॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांति नाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमी एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिव सुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपरे उगण पचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिव पुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सीधा अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, पास साम लनुं चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति श्री समेतशिखर जिन स्तवनं ॥ इति चौमासी देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजीकृत चतुर्विंशति ॥

॥ जिन देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर ऋषभ देव, सवठ्ठथी चविया ॥ वदि चउथे आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चै-

त्रह वदि तणी, दिवसे प्रनु जाया ॥ दीक्षा पण तिण हिज दिने ॥ चउ नाणी थाया ॥ फागण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुन ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडो प्रारंनः ॥

॥ कृषन जिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया ॥ कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषन लंछन पाया, देव नर नारी गाया ॥ पण सय धनु गाया, ते प्रनु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेम विना सवि, समवसस्या निरधार ॥ गिरि कडणे आवी, पोहता गढगिरनार ॥ चैत्री पूनम दिने, ते वंदूं जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाता धर्म कथांगे, अंतगड सूत्र मकार ॥ सिद्धाचले सीधा, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिन जेटे थात्रे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केश्वरी, शासननी रखवाल ॥ ए तीरथ केरी, सांनिध करे संनाल ॥ गिरुउ जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमलसूरी, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ ललनानी देशी ॥ आदि करन अरिहंत जी, उं-लगडी अवधार ॥ ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीये, वंछित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥ आदि करन अरिहंतजी ॥ ए आंकणी ॥ उपगारो अवनी तले, गुण अनंत जगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहने, अमृत फलनो आहार ॥ ललना ॥ ते अमृत फलने लहे, ए जुगतुं निरधार ॥ ललना० ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ जरतादिक थया केवली, अनुजव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुल मंडणो, मरुदेवी सर हंस ॥ ललना ॥ ऋषज देव नितु वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ॥ ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शुदि वैशाखनी तेरशे, चविया विजयंत ॥ माहा शुदि आठमे जनमीया, बीजा श्री अजित ॥ माहा शुदि नवमे मुनि थया, पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, थया अक्षय कृपा रस ॥ वैशाख शुक्ल

पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीरविमल कविरायनो, नय प्रणमे धरी नेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अजित जिन पतिनो, देह कंचन जरीनो ॥ भविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो, जेम जलमांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, जा हरे ध्यानें पीनो ॥ १ ॥ इति अजितनाथ थोय ॥

॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री संभव ॥ फागुण शुदि आठम दिने, शुदि चउदसी अभिनव ॥१॥ मृगशिर मासे जनमीया. तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरुपम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी उजली ए, शिव पहोता जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीझे सघलां काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन संभव वारु, लंछने अश्व धारु ॥ भवजल निधि तारु, काम गद तीव्र दारु ॥ सुरतरु परिवारु, दूसमा काल मारु ॥ शिव सुख किरतारु, तेहना ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ जयंत विमान थकी चव्या, अभिनंदन राया ॥ वैशाख शुदि चोथे माघ, शुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे ग्रहिय दिख्क, पोष शुरू चउदस ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमे शिव सुख रस ॥ चउथा जिनवरने नमी ए, चउ गति भ्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहे, जिन गुणनो नही पार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अभिनंदन वंदो, सौम्य माकंद कंदो ॥ नृप संवर नंदो, घर्षिता शेष कंदो ॥ तम तिमिर दिणंदो, लंछने वा नरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण शुदि बीजे चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमि गतिदायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमे, जनम्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी; निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारस उजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणे नवमीये,

नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजस व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापे ॥ अविचल पद थापे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कद ही नावे, जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठ दिवसे ॥ काति वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरषे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्म प्रभ स्वामी ॥ चैत्री पूनम केवली, वली शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसे, रक्त कमल सम वान ॥ नयविमल जिनराजनुं, धरीये निर्मल ध्यान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ पद्म प्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधु मनावे, रक्त तनु कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुण गण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि आवे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपार्श्वनाथजी चैत्यवंदन ॥

॥ छठा ग्रैवेयकथी चवि, जिन राज सुपास ॥ जा दरवा वदि आठमे, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जण्या, तस तेरसे संयम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति शमंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नासे ॥ महिम महिम प्रकाशे, सातमा श्री सुपासे ॥ सुरनर जस दास, संपदानो निवास ॥ गाय नवि गुण रास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा, चंद्रप्रभ सम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रह ॥ पोष वदि बारसे जनमीया, तस तेरसे साध ॥ फागण वदिनी सातमे, केवल निराबाध ॥ भाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अठ माहासिद्धि संपजे, नय कहे जिन अभिधान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

शुभ नरगति पामी, उद्यमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रभ नामे स्वामी ॥ मुज अंतरजामी, जेहमां नहिंय खामी ॥ शिवगति वर गामी, सेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि नोमे चव्या, मेहेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठे दीक्षा ॥ काति शुदि त्रीजे केवली, दीये बहु परे दिक्षा ॥ शुदि नवमी जाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीरविमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि जिन जदंत, नाम वली पुष्पदंत ॥ सुमति तरुणिकंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म डुरंत, लच्छी लीला वरंत ॥ जवजलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणांत कल्पथकी चव्या, शितल जिन दशमा ॥

वदि वैशाखनी छठे, जाणि दाघज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसे लीध ॥ वदि पोष चउदश दीने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजे वैशाशनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीझे सघलां काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुण शीतल देवा, वालही तुज सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तुंही देवाधि देवा ॥ परत्राण वदेवा, शम छे नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥१॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युत कल्पथकी चव्या, श्रेयांस जिणंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठे, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारशे जनम, दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माहा अमावसि, देसन चंदन रस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिव सुख अखय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सवि जिन अवितंस, जास इख्याग वंश ॥ त्रि-

जित मदन कंस, शुद्ध चारित्र हंस ॥ कृत जय विध्वंस, तीर्थनाथ श्रेयांस ॥ वृषञ्ज ककुंद अंश, ते नमुं पुण्य अंश ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ठ शुदि नवमी ॥ जन्म्या फागुण चौदशी, अमावासी संजम ॥ माहा शुदि बीजे केवली, चौदशी आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुम रंगे काय ॥ श्री नयविमल कहे इस्युं, जिन नमतां सुख थाय ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ वसुदेव नृप तात, श्री जया देवी मात ॥ अरुण कमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणे निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यातां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव शुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजे जण्या, तस चोथे व्रत रस ॥ शुदि पोष छठे लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातम आषा-

वनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करि चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिगल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमल विमल जावे, वंदतां दुःख जावे ॥ नव निधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुयर लंछन कावे, जोमि जर स्वेद थावे ॥ मनु विनति जणावे, स्वामीनुं ध्यान ध्यावे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणांतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चउदसे व्रत ॥ वदि वैशाख चउदशी, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिव वनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमा ए, कीधा दुशमन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत जिन नमिजे, कर्मनी कोटी छीजे ॥ शिव सुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधि बीज

मोय दीजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुज मन अति रीझे; स्वामीनुं कार्य सीझे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ वैशाख शुदि सातमे, चविया श्री धर्म ॥ विजय थकी माहा मासनी, शुदि त्रीजे जनम ॥ तेरस मांहिं उजली, लीये संजम भार ॥ पोषि पूनमे केवली, गुणना भंडार ॥ जेठी पांचमी उजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥१॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म जिन पतिनो, ध्यान रसमांहे भीनो ॥ वर रमण शचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख की-नो, लंछने वज्र दीनो ॥ नवि होय ते दीनो, जेहने तुं व्रसीनो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भाद्रवा वदि सातमे, दिने सवठथी चविया ॥ वदि तेरशे जेठें जण्या, दुःख दोहग शमीया ॥ जेठ चउदस वदि दिने, लीये संजम प्रेम ॥ केवल उज्वल पोषनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवडा ए,

शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशे शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन पति जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सप्त जय इति वारी ॥ सहस चउसठ नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिनशांति जितारी, मोह हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केसर घोली, मांहे कपूर चोली ॥ पेहरी सीत पटोली, वासिये गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीये दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीये भाव भोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोग द्वार ॥ दश पयन उदार, छेद खट वृत्तिसार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टि सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ मोतीडानी देशी ॥ सकल समिहित सुरतरु कंदा;

शांतिकरण श्रीशांति जिणंदा ॥ साहिबा जिनराज ह्मारा, मोहना जिनराज ह्मारा ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र न रहुं हवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, छंड्यो पण तुह्मे नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रनु तुम्हे कोइशुं नेह न लावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहो एम समजे, पण छोरु दीधाथी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ नक्ति खांची मन मांहे आण्यो, सहज स्वनावे पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माह्रारे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो बूटीजे, जेह मागे ते हज दीजे ॥ सा० ॥ अनेदपणे जो मनमां मलशो, कब जेथी प्रनुतो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अखय नाव निधि तुम पास, आपी दासने पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रनुताइ, दिधी साहेब एह वडाइ ॥ सा० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सवठथी चविया ॥ वदि चउदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणीया ॥ वदि पं

चमी वैशाखनी, लीये संयम जार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रह तणी, लहे केवल सार ॥ पडवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ छठा चक्री जयकरु, ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन कुंथु दयाला, छाग लंछन सुहाला ॥ जस गुण शुभ माला, कंठे पहेरो विशाला ॥ नमति जवि त्रि काला, मंगल श्रेणि साला ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सरवारथथी आवियां, फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर शुदि एकादशी, संजम आदरीयो ॥ कार्त्ति उजल बारसे, केवल गुण वरीयो ॥ शुदि दशमी मृगशिर तणी ए, शिवपद लहे जिन नाथ ॥ सत्तम चक्रीने नमुं, नय कहे जोडी हाथ ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अरजिन ए जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारु ॥ अहोनि

श संभारुं, ताहरुं नाम धारुं ॥ कृत जय जय कारु, प्राप्त संसार सारु ॥ नवि होय ते सारु, आपणो आप तारु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, फागण शुदि चउथे ॥ मृगशिर शुदि इग्यारस, जन्म्या निर्ग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिने, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि बारसे लह्े, शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिणेसर नीलडा ए, उंगणीसमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणनूप पद, भवजल तरण जहाज ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन मल्ली महिला, वान छे जेह नीला ॥ ए अचरिज लीला, स्त्रीतणे नाम पीला ॥ दुशमन सवि पील्या, स्वामि जो छे वसीला ॥ अविचल सुख लीला, दीजिये सुणी रंगीला ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रतजिन चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, श्रावण शुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारडी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण शुदि बारसे व्रत, वदि बारसे ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ

नवमी, कृष्णे निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उजला, तिहु यण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनर नायक दास ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मुनिसुव्रत स्वामी, हुं नमुं शीश नामी ॥ मुज अंतर जामी, कामदाता अकामी ॥ दुःख दोहग वामी, पुण्यथी सेव पामी ॥ शम्या सर्व दारामी, राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आशो शुदि पूनम दिने, प्राणांतथी आया ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमी जिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर शुदि इग्यारसे, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अखय अनंता सुख ॥ नय कहे श्री जिननामथी, नासे दोहग दुख ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्व छानो ॥ सुत वप्रामानो, पुण्य केरो खजानो ॥ कनक कमल वा,

नो, कुंज छे जे कृपानो ॥ सवि भुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आविया, काति वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण शुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी आठमे, शिव सुख लहे रसाल ॥ अरिठ नेमि अण परणीया ए, राजिमतिना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ गया शस्त्रागारे, शंख जिन हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ हरि संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेम कुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबू द्वीपे, विचरंता जिन देव ॥ अडघात की खंडे, सुरनर सारे सेव ॥ अडपुष्कर अरधे, इणिपरे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, जलजल निधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मछतणा भय वारे ॥ जिहां जीव दया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने,

चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिन शासन सान्निध्य, कारी विघन विदारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरि सेवो, जेम पामो नव पार ॥ कवि धीर विमलनो, शीष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥

॥ रहो रहो रे यादव राय दो घडीयां, दो घडीयां, दो चार घडीयां ॥ रहो रहो रे यादव० ॥ ए आंकणी ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमे छो आधार अड वडीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ नाह विवाह चाह करी ए, कयुं जावत फिर रथ चडीयां ॥ रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय किय करुणा, छोडी दीये पशु पंखी चडीयां ॥ रहो० ॥ ॥ २ ॥ गोद बिछाउं में बली जाउं, करुं विनति चरणे पडीयां ॥ रहो० ॥ पीयुविण दीहा ते वरिस समोवड, न गमें सपनने सेजडीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी बिलपति जोवन, वाडी वन घर सेरडीयां ॥ रहो० ॥ अष्ट भवांतर नेह निवाहत, नवमे भव ते विछडीयां ॥ रहो० ॥ ॥ ४ ॥ सहसावनमांहे स्वामि सुणीने, राजुल रैवत गिरी चडीयां ॥ रहो० ॥ पीयु करे निज शिरे हाथ देवा, व्रत चाखे चारित्र शेलडीयां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ जादव

वंश विभूषण नेमजी, राजुल मीठी वेलडीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे दंपती निरखत, हरषत होत मेरी आंखडीयां ॥ रहो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चोथ चैत्रह तणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदि दशमी जनम, त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारशे, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाल्यो पली मंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिने ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमे लह्यां, अविचल सुख भरपूर ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जलधर अनुकारे, पुण्य वल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघ्नने जे विदारे ॥ नव निधि आगारे, कष्टनी कोडि वारे ॥ मुझ प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुभव लय लावे, केवलज्ञान पावे ॥ षट जे कल्याण, संप्रतिजे प्रमाण ॥ सवि जिनवर जाण, श्री निवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशविध आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥

दश सत्य प्रकार, पच्चख्काणादि विचार ॥ मुनि दश गुण धार, जया जिहां उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशिपाला, जे महा लोग पाला ॥ सुर नर महिमाला, शुद्ध दृष्टि कृपाला ॥ नय विमल विशाला, ज्ञान लक्ष्मी मयाला ॥ जय मंगल माला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाघ सोनारो, छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥ प्रभु पास जिणेसर भुवन दीनेसर, सं करो ॥ साहिबजी ॥ लीला अलवेसर, धीर म मंदर, भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर, संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर, तनु रुचि निर्मल, जलधरो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरुपी, ब्रह्म सरुपी, ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी, तुम गुण भोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकासी, निश्चय वासी, निज मते ॥ सा० ॥ निज आतम दरसी, अमल आजेसी, नयमते ॥ सा० ॥ २ ॥ षट् दरशन भासे, युक्ति निरासे, शासने ॥ सा० ॥ स्याद्वाद विशाले, सहज समा

जे, जावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने, आतम ध्याने, आतमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी, नेद अनेदी नहीं तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके, बहुत विवेके, देखीये ॥ ॥ सा० ॥ आतम ततकामी, अगुण अकामी, लेखीये ॥ ॥ सा० ॥ सवि गुण आरामी, बो बहु नामी, ध्यानमां ॥ सा० ॥ आपे गत नामी, अंतर जामी, ज्ञानमां ॥ ॥ सा० ॥ ४ ॥ तुं अनियत चारी, नियत विचारी, योगमां ॥ सा० ॥ अध्यातम सेली, एम बहु फेली, आगमें ॥ सा० ॥ तुं धर्म संन्यासी, सहज विलासी, समगुणे ॥ सा० ॥ मोहारि विनाशी, तुं जित काशी, कवि जणे ॥ सा० ॥ ५ ॥ ज्ञान दर्शन खायिक, गुणमणी लायक, नाथ ठे ॥ सा० ॥ डुर्गति डुःख घायक, गुण निधि दायक, हाथ ठे ॥ सा० ॥ जित मन मथ सायक, त्रिजुवन नायक, रंजणो ॥ सा० ॥ अनेकांति एकांति, तुं वेदांती, अंगजणो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ध्यानानल योगे, पुदगल जोगे, ते दह्या ॥ सा० ॥ अंतर रिपु हणीया, मूलथी खणीया, नवि रह्या ॥ सा० ॥ तुं हेतु समीयो, सुरवरे नमीयो, सहु कहे ॥ सा० ॥ ए जगथी न्यारो, चरित्र तुमारो, कुण लहे ॥ सा० ॥७॥ एम तुम गुण थुणीये, कर्म

ने हणीये, पलकमां ॥ सा० ॥ पण नवि अवगणीये, से-वक गणीये, ललकमां ॥ सा० ॥ वामाये नंदा, त्रिभुवन इंदा, संथुणे ॥ सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, तुम पय वंदा, गुण भणे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवंदन ॥

॥ शुदि आषाढ छठ दिवसे, प्राणांतथी चवीया ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिशलाये जणीया ॥ मृगशिर वदि दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर केवल साधे ॥ काति कृष्ण अमावसी ए, शिव गति करे उद्योत ॥ ज्ञानविमल गौतम लहे, पर्व दीपोत्सव होत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ लह्यो भवजल तीर, धर्म कोटीर हीर ॥ दुरित रज समीर, मोह मूमार सीर ॥ दुरित दहन नीर, मे-रुथी अधिक धीर ॥ चरम श्री जिन वीर, चरण कल्पद्रु कीर ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रनाला ॥ जग जंतु दयाला, धर्मनी शाख शाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञान लीलाविशाला ॥ सुरनर महिपाला, वंद

ता ठे त्रिकाला ॥ २ ॥ श्री जिनवर वाणी, ज्ञातशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयण खाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न यम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी निशाणी ॥ डुह पिल ण घाणी, सांजलो जाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवा ला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगल माला, टालीने मोह हाला ॥ स हज सुख रसाला, बोध दीजे विशाला ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंज ॥

॥ आज गईती हुं समवसरणमां ॥ ए देशी ॥ वंदो वीर जिणेसर राया, त्रिशला माता जायाजी ॥ हरि लंठन कंचन वन काया, मुज मन मंदिर आयाजी ॥ ॥ वंदो वीर० ॥ १ ॥ डुषम समये शासन जेहनो, शीत ल चंदन ठाया जी ॥ जे सेवंता जविजन मधुकर, दिन दिन होत सवाया जी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति खाणी, जस मनमां जिन आयांजी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया जी ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर बिरुद जिन पाया जी ॥ एकल मल्ल अतुली बल अरिहा, डुशमन दूर

गमाया जी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ वांछित पूरण संकट चूरण, तुं मात पिता तुं सहाया जी ॥ सिंह परें चारित्र आराधी, सुजस निशान बजाया जी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ गुण अनंत जगवंत बिराजे, वर्द्धमान जिनराया जी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, शुद्ध समकित गुण दाया जी ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ इति ॥ पूर्ण जय वीयराय कहेवो ॥

॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पयठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही, अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ सही ए नमो जिणाणं ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ बिहुंतेर लक्ख सग्ग कोडी नवण वइ, सासय जिणहर माणं, तेरशें नेव्याशी कोडी, सग्गसठि बिंबह परिमाणं ॥ ३ ॥ सही० ॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन, यमक कुंडद्रह जाणुं ॥ एकत्रीश नगण्याशी जिनवर, मानव लोके वखाणुं ॥ ॥ ४ ॥ स० ॥ तिलख इकयासी सहस चारसो, च्याशी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुचक कुंडल नंदीसर प्रमुखे, सुंदर पंशी चेइयाणुं ॥ ५ ॥ स० ॥ अडशत सव सहसा चालीसा, बिंब तणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्रीशसें गुण

सठी, तिर्यक् लोके चेइयाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउसय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौबारा अवर त्रिबारा, रुचक कुंड नंदि ठाणं ॥ ७ ॥ ॥ स० ॥ बार देवलोके नव ग्रैवेयके, अनुत्तर पंचविमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ जाणुं ॥ ८ ॥ ॥ स० ॥ एकसो बावन कोडि लख चोराणुं, सहस चुमालीस आणुं ॥ सातशें साठ उर्ध्वलोके, जिन पडिमा मन आणुं ॥ ए ॥ स० ॥ त्रिभुवन मांहे सासय जिनहर, सगवन्न लस्क बसें ब्याशी ॥ आठ कोडी अथ प्रतिमा संख्या, सुणजो समकित वासी ॥ १० ॥ स० ॥ पन्नरशें कोडी बेंतालीश कोडी, तेम अठावन्न लस्का ॥ छत्रीश सहस एंशी वलि साधिक, सासय बिंबनी संख्या ॥ ॥ ११ ॥ स० ॥ एकसो वीश त्रिबारे प्रतिमा, चोमुखे शत चोवीश ॥ पांच सत्ता तिहां साठ वधारो, एक शत एंशी जगीश ॥ १२ ॥ स० ॥ ऋषभ चंद्रानन ने वर्द्धमान, वारिषेण चउ नामें ॥ व्यंतर ज्योतिषीमांहे असंख्या, जिनघर पडिमा माने ॥ १३ ॥ स० ॥ सकल सुरासुर भावना भावे, समकित गुण दीपावे ॥ परित संसार करी शिव जावे, कुमति ते मन भावे ॥ १४ ॥ स० ॥ पा

तावे ने तिर्यक् लोके, पण सय धणु परिमाण ॥ कप्पे सग्ग कर पणसय घणुंमाणुं, सासय असासय जाण ॥ ॥ १५ ॥ स० ॥ तीर्थ विशेष वली सासय त्रिणु, शेत्रुंजा दिक बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाए सघलां ॥१६॥ स० ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंतां, लहीयें कोडि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सघला सीझे, जनम स-फल सुविहाण ॥ १७ ॥ स० ॥ जयहर जगवंताणं जय-तुर, नमो जिणाणं सहीए ॥ नमो अविचल आदिगरा णं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ १८ ॥ सही० ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सनो काउ-स्सग्ग "चंदेसु निम्मलयरा" सुधी एकजण करे, ते काउ स्सग्ग पारी पछी चार थोयो कहेवी, ते लखीये छैये ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ ऋषभदेव नमुं गुण निर्मला, दूध मांहे जिम जे खी सीतोपला ॥ विमल शील तणा सिणगार छे, जव जव मुझ चित्ते रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केव ली, जेह हशे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिनपडिमा प्रणमुं नितु झगमगे ॥ २ ॥ सर स आगम क्षीर महोदधि, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥

भविक देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजोमल अ पहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन भासन कारिका, सुरसूरि जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये दीपता, दुरित दुष्ट तणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥

॥ अहींआं एकजण महोटी शांति कहे अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभले. पछी सर्वे जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कही पछी बेशीने एक वीश नवकार प्रगटपणे सर्व जण गणे. पछी सर्वे जण मुख थकी आवी रीते कहेः—श्री शत्रुंज्याय नमः ॥ १ ॥ श्री पुंडरीकाय नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः ॥३॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥ श्री सुरगिरये नमः ॥ ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥ ७ ॥ श्री पर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः ॥ ए ॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्री शाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्री दृढशक्तये नमः ॥ १२ ॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्री पुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥ श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सुरजद्रगिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री

कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमूलाय नमः ॥ १ए ॥ श्री अकर्मकर्त्रे नमः ॥ २० ॥ श्री सर्व काम पूरणाय नमः ॥ २१ ॥ ए सिद्धगिरिनां नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीये बैयेः—

॥ अथ प्रथम श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ साहेलडीयानी देशी ॥ नीलडी रायण तरुतले ॥ साहेलडीया ॥ पीलडा प्रजुजीना पाय ॥ गुण मंजरी ॥ उजल ध्याने ध्याइये ॥ सा० ॥ एहिज मुगति उपाय ॥ गुण० ॥ १ ॥ शीतडी गयाये बेशीये ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ नाही धोइ निर्मल थइ ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे ॥ सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गुण० ॥ ते त्रीजे नवे शिव लहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीतधरी प्रदक्षिणा ॥ सा० ॥ दीये एहने जे सार ॥ गुण० ॥ अनंग प्रीति होये जेहने ॥ सा० ॥ नव नव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गु० ॥ देव तणा वासा अबे ॥ सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥

चविक देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजोमल अ पहरे ॥ ३ ॥ जिनप शासन भासन कारिका, सुरसूरि जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये दीपता, दुरित दुष्ट तणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥

॥ अहींआं एकजण महोटी शांति कहे अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभले. पछी सर्वे जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कही पछी बेशीने एक वीश नवकार प्रगटपणे सर्व जण गणे. पछी सर्वे जण मुख थकी आवी रीते कहेः—श्री शत्रुंज्याय नमः ॥ १ ॥ श्री पुंडरीकाय नमः ॥ २ ॥ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः ॥३॥ श्री विमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥ श्री सुरगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्री महागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्री पुण्यराशये नमः ॥ ७ ॥ श्री पर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्री पर्वतेंद्राय नमः ॥ ए ॥ श्री महातीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्री शाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्री दृढशक्तये नमः ॥ १२ ॥ श्री मुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्री पुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥ श्री महापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्री पृथ्वीपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्री सुरजद्रगिरये नमः ॥ १७ ॥ श्री

कैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्री पातालमूलाय नमः ॥ ॥ १९ ॥ श्री अकर्मकर्त्रे नमः ॥ २० ॥ श्री सर्व काम पूरणाय नमः ॥ २१ ॥ ए सिद्धगिरिनां नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीये छेयेः—

॥ अथ प्रथम श्री सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ साहेलडीयानी देशी ॥ नीलडी रायण तरुतले ॥ ॥ साहेलडीया ॥ पीलडा प्रभुजीना पाय ॥ गुण मंजरी ॥ उजल ध्याने ध्याइये ॥ सा० ॥ एहिज मुगति उपाय ॥ गुण० ॥ १ ॥ शीतडो छायाये बेशीये ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ नाही धोइ निर्मल थइ ॥ ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलडे ॥ सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गुण० ॥ ते त्रीजे भवे शिव लहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गु० ॥ ॥ ३ ॥ प्रीतधरी प्रदक्षिणा ॥ सा० ॥ दीये एहने जे सार ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होये जेहने ॥ सा० ॥ भव भव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे ॥ ॥ सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गु० ॥ देव तणा वासा छे ॥ सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री आबुतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइये ॥ ए देशी ॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुद गिरिवर जइये ॥ ॥ श्री जिनवरनी भक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ ॥ आवो० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसहीना प्रथम जिनेसर, मुख्य निरखे सुख पइये ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर, कंठे टोडर ठविये ॥ आवो० ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही, श्री नेमीसर नमीये ॥ राजिमती वर नयणे निरखी, दुःख दोहग सवि गमीये ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेसर, रैवत नेम समरीये ॥ अर्बुद गिरीनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीये ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मंडप विविध कोरणी, निरखी हैयडे ठरीये ॥ श्री जिनवरना बिंब निहाली, नरभव सफलो करीये ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अचिलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभ करम सवि हरीये ॥ पास शांति निरखी भव नयणें, मन मोह्युं डुंगरीये ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजे चढतां उजम वाधे, जेम घोडे पाखरीये ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पडल सवि हरीये ॥ आवो० ॥ ॥ ६ ॥ एकण ध्याने प्रभुने ध्यातां, मनमांहिं नवि डरी

ये ॥ ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपसाये, सकल संघ सुख करीये ॥ आवो० ॥ ७ ॥ इति श्री अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरि आया ॥ पुष्फक नामे विमाने बेशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल कीजे ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ हैयडे हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ ए आंकणी ॥ चउ मुख चउगति हरण प्रसादे, चउवीसे जिन बेठा ॥ चउ दिसि सिंहासन सम नासा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जिन चउवीसा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बेठा सिंहतणे आकारे, जिणहर भरते कीधां ॥ रयण बिंब मूरति थापीने, जग जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत बजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्ति भावे एम ना टक करतां, त्रूटी तंती विचाले ॥ सांधी आप नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य

तीरथ ध्यान धरी मने ॥ सा० ॥ सेवो एहने उछाहि ॥ ॥ गुण० ॥ ज्ञान विमल गुरु भांखियो ॥ सा० ॥ शेत्रुंजा माहातम मांहि ॥ गुण० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनार तिर्थ स्तवन ॥

॥ देखी कामनी दोयके कामे व्यापीयोरे के, कामे व्यापीयो ॥ ए देशी ॥ नेम निरंजन देवके, सेव सदा करुंरे के ॥ से० ॥ अहोनिश ताहरुं ध्यानके, दील मांहे धरुंरे के ॥ दील० ॥ शंख लंछन गुण खाणके, अंजन वान छे रे के ॥ अंजन० ॥ राजिमतीना कंतके, परण्या विणु अछे रे के ॥ पर० ॥ १ ॥ तुंहिज जीवन प्राणके, आतमराम छे रे के ॥ आत० ॥ माहरे परमाधार के, ता हरुं नाम छे रे के ॥ ता० ॥ समुद्र विजयना नंदन, नितु नितु वंदतां रे के ॥ नितु० ॥ कीजीये करुणा वंतके, कर्म निकंदना रे के ॥ कर्म० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज, रही गढ उपर रे के ॥ रही० ॥ पेहरी शील सन्नाह, उदास ऐसी धरो रे के ॥ उदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि, तुह्मे अधिकुं कसुं रे के ॥ तुह्मे० ॥ कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उच्चर्‍यां रे के ॥ महा० ॥ ३ ॥ आठ जवां

तर नेह जे, तेह उवेखीने रे के ॥ तेह० ॥ करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीने रे के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत, वली निज नारने रे ॥ वली० ॥ आपी संजम सार, पहोंचाडी पारने रे ॥ पहों० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत, करे ते जन घणा रे ॥ करे० ॥ निरवाहे धरि नेह के, ते विरला सुण्या रे के ॥ ते वि० ॥ राजिमतीनो कंत, वखाणे कवि जना रे ॥ वखा० ॥ तुम्हे तो दीधो छेह के, तेहना चिर मना रे के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादव नाथ स नाथ, करो मुज्जने सदा रे ॥ करो० ॥ दियो मुज्ज शिर हाथ, होवे जेम संपदा रे ॥ होवे० ॥ जलि जलि मरे पतंग, दीवाने मन नही रे ॥ दीवा० ॥ नाणे मन असवार, घोडो दोडे सही रे ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निर्बलने नवि कही रे ॥ निर्बल० ॥ पण लागी जे थोडी, किहां जाए वही रे ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते, जीड न जंजिये रे के ॥ जीड० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होय तो, कर्मने मंजिये रे के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तो डुशमन होय दूरे, कोणे नवि गंजीये रे ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्रके, दरशन दीजीये रे के ॥ दर० ॥ ज्ञान विमल सुख पूर, मखीने कीजीये रे के ॥ म० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइये ॥ ए देशी ॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुद गिरिवर जइये ॥ ॥ श्री जिनवरनी जक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ ॥ आवो० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसहीना प्रथम जिनेसर, मुख्य निरखे सुख पइये ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर, कंठे टोडर ठविये ॥ आवो० ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही, श्री नेमीसर नमीये ॥ राजिमती वर नयणे निरखी, डुःख दोहग सवि गमीये ॥आवो०॥ ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रुषज जिणेसर, रैवत नेम समरीये ॥ अर्बुद गिरीनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीये ॥ आवो० ॥ ३ ॥ मंडप विविध कोरणी, निरखी हैयडे ठरीये ॥ श्री जिनवरना बिंब निहाली, नरजव सफलो करीये ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी, अशुज करम सवि हरीये ॥ पास शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्युं डुंगरीये ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजे चढतां उजम वाधे, जेम घोडे पाखरीये ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पडल सवि हरीये ॥ आवो० ॥ ॥ ६ ॥ एकण ध्याने प्रजुने ध्यातां, मनमांहिं नवि डरी

ये ॥ ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपसाये, सकल संघ सुख करीये ॥ आवो० ॥ ७ ॥ इति श्री अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरि आया ॥ पुप्फक नामे विमाने बेशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीये लाल, समकित निर्मल कीजे ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरनव सफलो कीजे ॥ हैयडे हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ ए आंकणी ॥ चउ मुख चउगति हरण प्रसादे, चउवीसे जिन बेठा ॥ चउ दिसि सिंहासन सम नासा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संनव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जिन चउवीसा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ बेठा सिंहतणे आकारे, जिणहर नरते कीधां ॥ रयण बिंब मूरति थापीने, जग जसवाद प्रसिद्धां ॥ श्री० ॥ ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत बजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नक्ति नावे एम नाटक करतां, त्रूटी तंती विचाले ॥ सांधी आप नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ऊव्य

जावशुं जक्ति न खंडी, तो अक्षय पद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री०॥ ॥ ७ ॥ एणिपरे जविजन जे जिन आगे, बहुपरे जावना जावे ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरि स्तवन ॥

॥ समेतशिखर गिरि जेटीयेरे, मेटवा जवना पास ॥ आतम सुख वरवा जणीरे, ए तीरथ गुण निवासरे ॥१॥ जविया सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुण गेहरे ॥ ॥ जवि० ॥ से० ॥ ए आंकणी ॥ समेतशिखर कल्पे कह्यो रे ॥ वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तिर्थंकर शिव वस्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ जवि० ॥ २ ॥ से० ॥ स० ॥ सिद्धखेत्रमांहे वस्या रे, जांखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूपमां रे, दोय नय प्रजुजीना सार रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतां रे, अति दुर्गम नयवाद ॥ वस्तु तत्त्व जिणे जाणीये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ से० ॥ स० ॥ जयरथ राय तणी परे रे, जात्रा करो मनरंग ॥ जवदुःखने देइ अंजलि रे, थाये सिद्धिवधू नो संग रे॥ ज० ॥ ५ ॥ से० ॥

स० ॥ समकित युत जात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय
वव हेतु किरिया त्यागथी रे, आतम गुण प्रगटाय रे
० ॥ ६ ॥ से० ॥ स० ॥ जेह समये समकित थयो रे,
समये होय नाण ॥ ज्ञानविमल गुरु जांखीयो रे,
रयक जाष्यनी वाण रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥
समेतशिखर स्तवनं ॥ इति श्री चोवीश जिन देव
चातुर्मासिकं समाप्तम् ॥
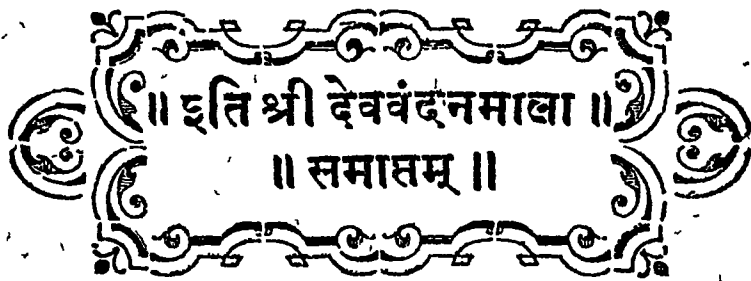
॥ अथ शीखामणना बोलो ॥

पोतानुं महत्त्व मूकवुं नहिं.
दुशमन माणस साथे दुशमनाइ जणाववी नहिं.
गोलां साथे तथा नीच माणस साथे प्रीती करवी नहिं.
पोतानुं धन पोतानी पासे राखवुं.
पोतानुं सर्व धन पोताना छोकराओने सोंपवुं नहिं.
[illegible] पाडवो नहिं.

७ चोरनी तथा दुष्टनी संगति करवी नहिं.

८ घेर छोडी पारके घेर जवुं नहिं.

९ कामण टुमण करवां कराववां नहिं.

१० जे नलाइ करे तेनी साथे बुराइ करवी नहिं.

११ घरनी वात बाहेर काढवी नहिं.

१२ गुरुनी अने मातापितानी शीखामणे चालवुं.

१३ घरमां संपदा राखवी.

१४ रसोइदारने रीसाववो नहिं.

१५ पोतानी पासे धन छतां दुःखी रहेवुं नहिं.

१६ पोतानुं घरनुं धन कोइने देखाडवुं नहिं.

१७ कोइपण वात सांजलीने आघी काहाडवी नहिं.

१८ जुगार रमवो नहिं.

१९ उंलख्या विना दातण करवुं नहिं.

२० राजाने क्यारे पण पोतानो जाणवो नहिं.

२१ मतलब विना कोइ साथे बुराइ करवी नहिं.

२२ पोतानी पेदास माफक खरच राखवो.

२३ ग्रामांतरे जावुं, तेवारे सारा शुकन जोइने जा

इति शीखामणना बोल समाप्त